नाटक

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रंथमाला के निम्नलिखित भाग छपकर तैयार हो चुके बाकी अंक भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं।

	नाम पुस्तक	कीमत
१.	सती कमल श्री नाटक	८-००
२.	सती मैना सुन्दरी नाटक	६-००
३.	सती सुरसुन्दरी नाटक	५-००
४.	सती विजया सुन्दरी नाटक	३-००
५.	विश्व दर्पण	१-२५
६.	सती चन्दन बाला नाटक	१-००
७.	महावीर चांदन गाँव नाटक	०-५०
८.	प्रहलाद नाटक	०-२५
९.	सात कौड़ियों में राज्य	०-२५
१०.	जैन समाज दिग्दर्शन	०-२५
११.	स्वाभिमान रक्षा	०-२५
१२.	पद्मपुरी चारित्र	०-२५
१३.	नमोकार मंत्र पाठा	०-२५
१५.	महावीर चांदन गांव चारित्र	०-१६

पुस्तकें मिलने का पता:—

राजकुमार जैन

मालिक :- न्यामत जैन पुस्तकालय

मु० हिसार (हरियाणा)

HISSAR (Haryana)

नियम

(१) चिट्ठी में पता साफ नागरी व उर्दू व अंग्रेजी में लिखना चाहिये।

(२) यदि किसी चिट्ठी का जवाब न पहुँचे तो दूसरी चिट्ठी साफ पते की आनी चाहिये। कमीशन २ आने रुपया सब पुस्तकों पर दिया जाता है।

(३) बुकसेलरों को २५ प्रतिशत दिया जाता है भी यदि ५ सेर का पार्सल मंगाएं तब।

(४) कोई साहेब वी० पी० वापिस न करें, वरना महसूल उनको देना होगा।

(५) डाक खर्च खरीदार के ज़िम्मे होगा।

पुस्तकें मिलने का पता:—
राजकुमार जैन
मालिक:- न्यामत जैन पुस्तक
मु० हिसार (हरियाणा)
HISSAR (Haryana)

विशेष सूचना

१) यह मैनासुन्दरी नाटक सन् १६०६ में बनाना प्रारम्भ किया था। १६ दिसम्बर १६११ को समाप्त होने पर छपवाकर सर्व भाइयों के हितार्थ प्रकाशित किया गया था यह नाटक श्रीपाल चरित्र शास्त्रानुसार रचा गया है।

२) इस नाटक को किस्सा कहानी समझकर इसका अभिनय नहीं करना चाहिये बल्कि जैन शास्त्र समझकर इसको विनय पूर्वक पढ़ें क्योंकि इसमें श्री जैनशास्त्र का रहस्य दिखाया गया है।

३) इस नाटक को भादों में और खासकर अठाई के पर्व में श्री मन्दिर जी में रात के समय सभा के बीच में नाटक के तौर पर पढ़ना चाहिए और नाटक पात्र अलग होने चाहियें।

४) इस नाटक के वास्ते हारमोनियम बाजा और तबला अवश्य होने चाहियें

५) चूंकि यह धार्मिक नाटक है इसलिए इसके पढ़ते सुनते समय किसी प्रकार की अविनय या अनुचित हंसी मसखरी नहीं होनी चाहिये।

६) इस नाटक के अब तक अठारा एडिशन इस प्रकार प्रकाशित हुए हैं:—

१	प्रथमावृति	सन्	१६११	में	१०००	कापी	मूल्य	१-५०
२	द्वितीयावृति	,,	१६१५	,,	२०००	,,	,,	१-५०
३	तृतीयावृति	,,	१६१८	,,	१०००	,,	,,	१-५०
४	चतुर्थावृति	,,	१६१६	,,	१०००	,,	,,	२-५०
५	पंचमावृति	,,	१६२१	,,	१०००	,,	,,	२-५०
६	षष्ठमावृति	,,	१६२३	,,	१०००	,,	,,	२-५०
७	सप्तमावृति	,,	१६२४	,,	१०००	,,	,,	२-५०
८	अष्टमावृति	,,	१६२४	,,	१०००	,,	,,	२-५०
९	नवमावृति	,,	१६२७	,,	२०००	,,	,,	२-५०
१०	दशमावृति	,,	१६३४	,,	१०००	,,	,,	२-००
११	एकादशावृति	,,	१६३८	,,	१०००	,,	,,	२-००
१२	द्वादशावृति	,,	१६४७	,,	१०००	,,	,,	४-००
१३	त्रोदशावृति	,,	१६४६	,,	१०००	,,	,,	६-००
१४	चतुर्दशावृति	,,	१६५१	,,	१०००	,,	,,	५-००
१५	पंद्रहमावृति	,,	१६५६	,,	१०००	,,	,,	४-५०
१६	सोलवांवृति	,,	१६५६	,,	१०००	,,	,,	६-००
१७	सत्रवाँवृति	,,	१६६५	,,	११००	,,	,,	६-००
१८	अठारवांवृति	,,	१६६६	,,	११००	,,	,,	६-००

राजकुमार जैन, हिसार

श्रीवीतरागायनम:

नाटक पात्र पुरुषों के नाम

अरीदमन—चम्पापुर नगर का राजा (श्रीपाल का पिता)
वीरदमन-राजा अरीदमन का भाई (श्रीपाल का चचा)
श्रीपाल—राजा अरीदमन का पुत्र
पहुपाल-उज्जैन नगरी का राजा (मैनासुन्दरी का पिता)
कनककेतु—हंसद्वीप का राजा (रैनमंजूषा का पिता)
भूमंडल-कुमकुमद्वीप का राजा (गुणमाला का पिता)
धवल सेठ—कोशंबीपुर नगर का सेठ
कुमत प्रकाश—धवल सेठ का मंत्री

❀

नाटक पात्र स्त्रियों के नाम

कुन्दप्रभा—राजा अरीदमन की पटराणी (श्रीपाल की माता)
निपुणसुन्दरी—राजा पहुपाल की पटराणी
सुरसुन्दरी—राजा पहुपाल की बड़ी पुत्री
मैनासुन्दरी-राजा पहुपाल की छोटी पुत्री(श्रीपाल की पटराणी
कंचनमाला—राजा कनककेतु की पटराणी
रैनमंजूषा—राजा कनककेतु की पुत्री (श्रीपाल की राणी)
वनमाला—राजा भूमंडल की पटराणी
गुणमाला—राजा भूमंडल की पुत्री (श्रीपाल की राणी)

—:o:—

सती

मैनासुन्दरी नाटक

-:०:-

—:ooooo:—

राजा पहुपाल और मैनासुन्दरी की
तक़दीर व तदबीर पर तकरार।
मैनासुन्दरी का श्रीपाल कुष्टी के
साथ विवाह होना और वन
को चले जाना॥

—:०:—

श्री जिनेन्द्रायनमः
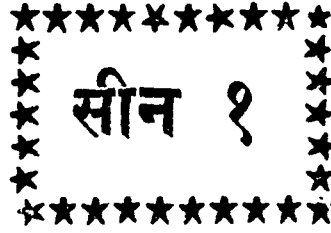
दरबार का परदा

१

नोटः—

चौथे काल (सतयुग में) भारतवर्ष के एक देश में चम्पानगर एक बहुत बड़ा शहर था। उस नगर में महाराजा अरीदमन कोटीभट (करोड़ आदमियों का बल वाला) राज करता था। यह राजा जैन धर्मावलम्बी था और उसकी पटरानी का नाम कुन्दप्रभा था। उसके कुंवर श्रीपाल कोटिभट एक पुत्र था। और महाराजा अरिदमन के छोटे भाई का नाम वीरदमन (कुंवर श्रीपाल का चाचा) कोटीभट था।

२

महाराजा अरीदमन व पटरानी कुन्दप्रभा का दरबार में बैठे हुए नजर आना और परियों का श्रीजिनेन्द्र भगवान का मंगलाचरण गाना ॥

चाल—(नाटक) मुबारिकबादी गावो शादी शहजादी की ॥

गावो प्यारी महिमा न्यारी जग हितकारी की ॥
वह वीतरागी गुणधारी ॥ शिवमग नेतारी ॥
भवदुख टारी-सब सुखकारी की ॥ गावो ० ॥
कुमति विनाशी-सुमति प्रकाशी-घटघट अंतरयामी है ॥
न्यामत वह आनन्द विहारी ॥ निकलम् विमलम् अलखम्
अनुपम कलमल हारी की ॥ गावो० ॥

(३)

परियों का कंवर श्रीपाल कोटिभट के दरबार में आने की

मुबारिकबादी गाना ॥

चाल—(नाटक) गावोरी सब मिलके बधय्यां ॥

छाए री घन शुभ के बदरवा। आए हैं कोटिभट राजा।
चुन चुन के फूल बरसावो री-जश गावोरी-गुण गावोरी—
धन शुभ के बदरवा ॥ छाएरी० ॥

१ परी—सागर सा धीर देखो बीरों में बीर देखो ॥
हां बेनजीर देखो सब का हितकार है ॥

२ परी—प्यारी युवराज देखो सरपै है ताज देखो ॥
सारी समाज देखो जय जय जयकार है ॥

३ परी—नैना पसार देखो आनन्द अपार देखो ॥
मोतियन का हार देखो देता बहार है ॥

४ परी—कैसी है आन देखो तरकश में बान देखो ॥
कर में कमान देखो भुजबल अपार है ॥

४

श्रीपाल का दरबार में आना और राजा का युवराज

(बलीहद) पद देना ॥

चाल—(खमाच) सेवें सारे सुर नर मुनि तेरे द्वार ॥

आओ कोटिभट सुत श्रीपाल राज ॥ टेक ॥

१ तू कुलभूषण रहित विदूषण। धर्मनिपुण रघुकुल की लाज

२ अरिदलखंडन अति बलमंडन। दूं तोहे पद युवराज आज ॥
३ तू जग प्यारा प्राणाधारा। धरूं सर पर मोतियन का ताज ॥

(सर पर ताज रखना)

५

परियों का मुबारिकबाद गाना ॥

चाल (नाटक) जय ऋषभेश्वर कृपा करो ॥ भवसागर से पार करो ॥

कोटिभट युवराज बना, हां सब का सरताज बना ॥टेक॥
१ हितकारी युवराज तूही, बलधारी महाराज तूही ॥
सबको तू सुखदायक, है सरताज बना ॥ कोटि ॥
२ हो तेरा इकबाल बड़ा, जस फैले जग माहीं सदा ॥
तू है सब गुण लायक, कुलकी लाज बना ॥कोटि॥
३ हम सब मिल अरदास करें, तन मन धन सब वार करें ॥
परमानन्द शुभदायक, है दिन आज बना ॥कोटि०॥

सीन २

राज महल का परदा

६

महाराज अरिदमन का मर जाना और रानी कुन्दप्रभा का राजा के वियोग में रंज करते हुए नजर आना और श्रीपाल का माता को धीर बंधाना

चाल—(गजल सोहनी) मैं वही हूँ प्यारी शकुन्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो।

प्यारी मां भजो जिनराज को जरा दिलको सब्रो क़रार दो

जो कुछ होना था सो तो होचुका, अब रंजेगम को निवार दो ॥

२ सर मौत सबके सवार है, यहां रहना दिन दो चार है ।
नहीं जग में कोई भी सार है, जरा दिलमें अपने विचारलो ॥

३ मरे तात तुम बेजार हो, कैसे जी को मेरे करार हो ।
अब मात तुम्हीं मुखतार हो, तुम्हीं तात तुम्हीं सरकार हो ॥

४ तेरा क्षत्री कुल अवतार है, तेरा कोटिभट सा कुमार है ।
फिर क्यों यह हालेजार है, जरा दिलको अपने करार दो ॥

५ मैं निभाऊंगा अपना परन, नहीं टारूं तेरे कभी वचन ।
करूं सेवा आपकी रात दिन, जैसा हुकम करके विचारदो ॥

७

माता का जवाब

चाल (गजल) बिगड़ी हुई तकदीर बनाई नहीं जाती ॥

१ बेटा पति का रंज निवारा नहीं जाता ।
मैं क्या करूं यह दर्द सहारा नहीं जाता ।

२ तुम आप ही तख्त अपना जरा जाके संभालो ।
मुझ से तो कोई काम संवारा नहीं जाता ।

३ नीती पे सदा चलना है राजा का यही धर्म ।
बस मुझ से कोई काम विचारा नहीं जाता ॥

८

श्रीपाल का जवाब ॥

चाल—(गजल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

१ तुझे यूं छोड़कर दुःख में हकूमत करने जाऊं मैं ॥

यह मुझसे हो नहीं सकता हुकम क्योंकर बजाऊं मैं ॥
२ तुम्हें क्या रंज अय माता जो मैं हाजिर हूँ सेवा में।
धरम है पुत्र का जो कुछ निभा करके दिखाऊं मैं ॥
३ बनेगा जैसा जो कुछ मुझ से करूंगा आपकी सेवा।
रहूंगा तेरी आज्ञा में चरन में सर झुकाऊं मैं ॥
४ भुलाकर रंज अय माता करो आज्ञा जो मर्जी हो।
बचन जो आपका होगा सर आंखों से बजाऊं मैं ॥

९

माता का शोक तजना और श्रीपाल को राज करने की आज्ञा देना
और श्रीपाल के सिर पर ताज रखना

चाल—(गजल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

१ दिल अपना राज में अब तो लगाना ही मुनासिब है॥
जगत का भार अब सर पर उठाना ही मुनासिब है।
२ वतन की उन्नति करना यही है धर्म राजा का।
तुम्हें इस धर्म को बेटा निभाना ही मुनासिब है ॥
३ न कर सोच मेरा तू सबर अब कर लिया मैंने।
तुझे मेरी तरफ से गम हटाना ही मुनासिब है।
४ चिरनजीवो मेरे बेटा धरूं सिर पे मुकट तेरे।
पिता का ताज सर अपने सजाना ही मुनासिब है ॥

१०

श्रीपाल का सिंहासन पर बैठना परियों का आना और मुबारिकबाद गाना

चाल—(नाटक) तेरी छलबल है न्यारी ॥

प्यारी बादे बहारी चला चम्पा मंझारी।

हुई आनन्द सारी नगरिया आन ॥
तेरे सर ते बिराजे ताज हीरों का साजे।
सारे राजों में राजा तुही बलवान ॥
दूनी दूनी हो शान-होवे दुश्मन हैरान ।
ताबे हों सारे जमीन आसमान ॥
हो मुबारिक यह ताज- तुझे चम्पा का राज बोलो सारी समाज
होवे जय जय जय, जय जय जय, जय जय प्यारी० ॥

सीन ३

दरबार का परदा

११

कुछ वर्ष राज करने के बाद राजा श्रीपाल और उसके सात सौ वीरों को कुष्ट होना। शहर में दुर्गन्ध फैलना ॥ प्रजा का दुखित होकर वीरदमन (श्रीपाल का चचा) को साथ लेकर राजा श्रीपाल के दरबार में जाना और अर्ज करना

चाल—अपनी हमें भक्ति का कुछ दीजो दान॥

परजा की अरजी को सुनिये सरकार ॥ टेक ॥
१ तू दयावान हितकारी । है धर्मराज सरकारी।
सुनो तुम सबकी पुकार ॥
तेरे राज महा सुख पायो । दुःख भय का नाम नसाओ ॥
सभी जाने संसार ॥

३ अब कष्ट भयो इक भारी । नहीं मुख से जाए उचारी ।
तेरे आए दरबार ॥

४ यह कर्म महा अन्याई । तुम भयो कष्ट दुखदाई ॥
हमें है सोच अपार ॥

५ फैली दुर्गन्ध अति भारी । दुर्गन्धित नगरी सारी ॥
भये व्याकुल नर नार ॥

६ इस नगर रहा नहीं जावे । सब प्रजा महा दुःख पावे ॥
शोक सागर मंझधार ।

७ कुछ करूणा चित में कीजे । अब आयस हमको दीजे ॥
चलें तज कर घर बार ॥

१२

वीरदमन का राजा श्रीपाल से कहना

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ।

१ रअय्यत की तुझे धीरज बंधाना ही मुनासिब है ।
बसे जिस तौर से परजा बसाना ही मुनासिब है ॥

२ रय्यत बिन नहीं शोभा कहेगा कौन फिर राजा ।
मुहब्बत का कोई सामां बनाना ही मुनासिब है ॥

३ अमन से रहती है परजा सदा राजा के साए में ।
तुम्हें परजा का दुख बेटा मिटाना ही मुनासिब है ॥

(१३)

प्रजा की अर्जी सुन कर राजा श्रीपाल का सिंहासन से उठ खड़ा होना। प्रजा की धीर बंधाना और अपने चाचा वीरदमन को राज सौंप कर आप वन में जाने को तैयार होना ॥

चाल—(नाटक) घूटी लाने का कैसा बहाना हुआ ॥

महाराजा की आज्ञा को सिर पे धरूं—महाराजा की ॥
अपनी परजा की सब पीर छिन में हरूं-महाराजा की ॥टेक॥
१ लो संभालो यह राज, रखियो प्रजा की लाज ।
रक्खो सर पे यह ताज, मैं नगर तजके वन को पयाना करूं ॥
२ रखियो प्रजा की कान, समझो पुत्र समान ।
प्रजा राजा के प्रान, इनके खातिर मैं मंजूर जाना करूं ॥
३ सुन, गया है श्रीपाल, होगी माता बेहाल ।
उसका रखना ख्याल, सारा घरबार तेरे हवाले करूं ॥
४ जो बचें मेरे प्रान, हो के इन्द्र समान ।
फिर संभालूंगा आन, वरना वन ही में जां को रवाना करूं ॥
५ सुन लो परजा के वीर, टुक धरो दिल में धीर ।
ऐसे हो ना अधीर मैं अभी जाके वनमें ठिकाना करूं ॥

१४

राजा श्रीपाल को जाते हुए देखकर प्रजा का राजा को रोकना और अर्ज करना ॥

चाल—(गजल कव्वाली) अब हिन्द में रहना हमें मंजूर नहीं है ।

सरकार का जाना हमें मंजूर नहीं है ॥

मंजूर नहीं है हमें मंजूर नहीं है। सरकार० ॥टेक॥

१ परदेश के जाने की हमें दीजे इजाजत।
बनवास तुम्हारा हमें मंजूर नहीं है॥

२ विपता जो पड़ेगी उसे हम आप सहेंगे।
दुःख पाना मगर आपका मंजूर नहीं है॥

१५

राजा श्रीपाल का फिर प्रजा को समझाना और आप बनोवास को
सातसौ कुष्टी वीरों को लेकर रवाना होना॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की॥

१ दुखी परजा में सुख भोगूं यह हरगिज हो नहीं सकता
मुझे जाने दो मत रोको कि ऐसा हो नहीं सकता।

२ वतन पर जान दे देना यही है धर्म राजा का।
तजूं मैं धर्म मर्यादा सो ऐसा हो नहीं सकता॥

३ हुक्म जो दे दिया मैंने सुनों अब तो वही होगा।
वचन क्षत्री का उलटा हो यह हरगिज हो नहीं सकता॥

४ जो अच्छा हो गया तो फिर मैं आकर राज भोगूंगा।
मगर अब तो मेरा रहना यहां पर हो नहीं सकता।

५ मैं जाता हूँ सुखी रहना नहीं गम मेरे जाने का।
करम में जो लिखा है वेशो कम वह हो नहीं सकता॥

सीन ४

चम्पापुर नगर का परदा

१६

चम्पापुर की प्रजा का राजा श्रीपाल के वियोग में रोते हुए नजर आना ॥

चाल—तूने फलक यह क्या किया हाय गजब सितम गजब ॥

१ तूने करम यह क्या किया हाय गजब सितम गजब ॥
बनवास में राजा गया हाय गजब सितम गजब ॥
२ माता को रोती छोड़के और राज से मुंह मोड़के।
हमरे लिए यह दुःख सहा हाय गजब सितम गजब ॥
३ राजा हमारा प्रान था सारी प्रजा की शान था।
सूना नगर यह हो गया हाय गजब सितम गजब ।

सीन ५

राजमहल का परदा

(१७)

नोटः—

(१) मालवा देश में उज्जैन नगरी एक बहुत बड़ा शहर था जिसमें राजा पहुपाल राज करता था ॥ इस राजा के निपुण सुन्दरी पटरानी थी और

सुरसुन्दरी बड़ी और मैनासुन्दरी छोटी दो पुत्रियाँ थी मैनासुन्दरी अति रूपवन्ती और सुशीला थी और राजा व रानी व सब दरबारी उसको अधिक प्यार करते थे। मैनासुन्दरी को जैनमत की श्रद्धा थी। जब यह दोनों आठ वर्ष की हो गई तो राजा ने उन्हें विद्या पढ़ने भेज दिया।।

(२) सुरसुन्दरी एक पांडे जी के पास पढ़ने लगी जब वह सब विद्या पढ़ चुकी तो पांडे जी सुरसुन्दरी को लेकर राजा के दरबार में आते हुवे।

(३) मैनासुन्दरी ने प्रथम एक श्रीमती अरजिका जी के पास अनेक विद्या पढ़ी और फिर एक श्रीमुनि महाराज के पास विद्या पढ़ने लगी। जब यह समस्त विद्या पढ़ चुकी तो श्रीमुनि महाराज से आज्ञा लेकर वापिस अपने घर माता के पास आती हुई।

१८

मैनासुन्दरी का अपनी माता के पास आना और बातचीत करना ।।

मैना०- जयजिनेन्द्र, माताजी, आपकेचरणाबिन्दकोनमस्कार

माता-आओ बेटी मैनासुन्दरी राजदुलारी मेरे प्राणों से प्यारी (छाती से लगाना)।।

मैना०-माता जी मैंने श्रीमती अरजिका जी और श्रीमुनि महाराज की कृपा से श्री जैनधर्म के समस्त शास्त्रों को पढ़ लिया है। आज अपने गुरू की आज्ञा लेकर आपके चरणों में आई हूँ।

माता-धन्य हो बेटी जो तुमने ऐसी छोटी अवस्था में श्री जैनधर्म के शास्त्रों को पढ़ लिया। तुम चिरकाल जीवो और संसार के सुख भोगो।

मैना०- माता जी ! श्रीमान् पूज्य पिताजी कहां हैं, उनके दर्शन करने की अभिलाषा है।

माता-- बेटी ! महाराज दरबार में हैं चलो मैं तुमको ले चलती हूँ।

मैना०- माता जी ! यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं प्रथम श्रीमन्दिर जी में जाकर भगवान् की पूजा कर आऊं तो मेरी समस्त विद्या सफल हो, फिर आप के साथ दरबार में चलूंगी।

माता-- बहुत अच्छा बेटी जाओ पूजा की सर्व सामग्री ले जाओ।

(मैनासुन्दरी का चला जाना)

सीन ६

श्री जैन मन्दिर का परदा

१६

मैनासुन्दरी का भगवान की पूजा करना ॥

(चाल) पद्धडीछन्द ॥

जय जय जय ॥ निस्सर्यताम्, निस्सर्यताम् मिस्सर्यताम्
२ जय सत पथ दर्शक निर्विकार

जन मन हरषक महिमा अपार ॥
जय अजर अमर जग तरन तार ।
चित दृग बल सुख मंडित अपार ॥

२ जय परम शांत मूरत अनूप ।
तुम छरण नमत सब इन्द्र भूप ।
जय जग भूषण चेतन सरूप ।
परमात्मन परम पावन अनूप ॥

३ जय सकल ज्ञेय ज्ञायक जिनंद ।
अरि दोष रहित आनन्द कन्द ॥
जय निज आनन्द रस लीन धीर ।
दुख पाप हरण सुख करण बीर ॥

सीन ७

दरबार का परदा

२०

राजा पहुपाल का मन्त्री सहित दरबार में बैठना ॥ पाँडे जी का सुरसुन्दरी को लेकर दरबार में आना ॥

पांडे-- महाराज की जय हो ।

राजा-आईये महाराज विराजिए आपके चरणों में नमस्कार हो

(पांडे की कुर्सी पर बैठ जाना)

सुर०-पिताजी आपके चरणाविन्द को नमस्कार हो।

राजा--बेटी सुरसुन्दरी मेरी प्यारी राजकंवारी चिरंजीव रहो

(छाती से लगाकर कुर्सी पर बैठाना)

पांडे--हे राजन् मैंने आपकी पुत्री सुरसुन्दरी को बड़े परिश्रम से अनेक विद्या पढ़ाई है अब यह समस्त विद्या पढ चुकी है आपके सामने हाजिर है।

राजा--हे महाराज आपने बड़ी कृपा की है (एक थैली में बहुत अशर्फियां लेकर) आपकी भेंट है।

पांडे-- (भेंट लेकर) महाराज की जय हो आपकी पुत्री सुर मन वांछित राज के सुख भोगियो।

(चला जाना)

राजा--हे राजदुलारी सुरसुन्दरी कहो कौन कौन अपूर्व वस्तु पुण्य से प्राप्त होती है।

सुर०-(दोहा) विद्या जोवन रूप धन, और पति का नेह।
राजापुण्य से मिलत हैं, मन वांछित सुख येह॥

राजा-(दोहा) पुत्री जो वर मन वसो, सो मांगो इस आन।
साफ साफ मोसे कहो, करो नहीं कुछ कान॥

सुर०-(दोहा) कोशम्भीपुर राय का, पुत्र महा गम्भीर।
सो ही मेरे मन वसो, हरिवाहन वरवीर॥

राजा- बेटी उसी ही बीर से करूं तुम्हारा ब्याह ॥
सुख भोगो संसार में यही हमारी चाह ॥

२१

परियों का दरबार में आना और मैनासुन्दरी के आने की
मुबारकबाद गाना ॥
चाल—(नाटक) बादे बहारी आके पुकारी गुल की सवारी आती है।

१ आज हमारी राजदुलारी मैना प्यारी आती है ॥
मानो प्यारी आनन्दकारी बादे बहारी आती है ॥
२ राजा की प्यारी राजकंवारी प्राण प्यारी आती है ॥
छव है न्यारी जोबन वारी वह मतवारी आती है ॥
३ उठती जवानी में सुन जिनबानी पढ़करआई जैन का शासन
है सुखदानी धर्मनिशानी सुनकर बाणी खुशहो तनमन ॥
४ मदभरे नैना कोयल बैना चन्दर बदना चन्दर आनन।
तारों में चन्दर मैनासुन्दर धर्म धुरन्धर शील शरोमन ॥
५ समकित धारा भर्म निवारा विद्या पाई फिरकर बन वन।
गुण उच्चारें उसका छिन छिन धन को निसारें वारे

२२

महारानी निपुण सुन्दरी का मैनासुन्दरी सहित दरबार में आना ॥
राजा व सब दरबारियों का खड़ा होना (वार्तालाप)

सुर०- (खड़े होकर) माता जी को प्रणाम।

माता- (छाती से लगाकर) प्रसन्न तो है बेटी सुरसुन्दरी ?

सुर०-माता जी की कृपा है ॥

मैना-जयजिनेन्द्र ॥ पिताजी आपके परमानन्दकारी
चरणार्विंद को बारम्बार प्रणाम है ।

राजा-आओ बेटी मैनासुन्दरी मेरी प्यारी राजदुलारी ।
आज तुमको देख मेरे चित को हुआ है आनन्द भारी ।

मैनासुन्दरी को छाती से लगाकर प्यार करना और कुर्सी पर बिठाना
और रानी जी को सिंहासन पर बिठाना

मैना- हे पिता जी श्रीमती अरजिकाजी व श्री मुनि महाराज जी की कृपा से मैं श्री जैन धर्म की समस्त विद्या पढ़कर आपके चरणों में आई हूं। और श्री जिनेन्द्र भगवान का पूजन करके यह (कटोरी सामने करके) गंधोदक आपके लिए लाई हूँ लीजिए मस्तक पर चढ़ाइये ॥

राजा-गंधोदक की कटोरी लेकर राजा और रानी ने गंधोदक मस्तक पर चढ़ाया

बेटी मैनासुन्दरी इस गंधोदक की शास्त्रों में क्या महिमा है वर्णन करो ।

मैना-बहुत अच्छा महाराज सुनिए ॥

२३

मैनासुन्दरी का गंधोदक की महिमा वर्णन करना ॥

चाल—(नाटक) महाराज गावें कद हम ॥

महाराज लाई हूँ, जल न्हवन श्री जिनवर का ॥ टेक ॥

१ इन्द्रादिक याको तरसें । परसत आनन्द रस बरसें ॥
यह गंधोदक सुखकारी । यानी है दुख परहारी ॥
हो जनम सुफल सुर नर का ।
२ इसको जो अंग लगावे । कुष्ठी सुन्दरता पावे ।
अंधा संसार निहारे । यह पाप करम को जारे ॥
दे पद हरी बल और हरका ॥
३ जब जनम हुआ तीर्थंकर । सागर जल लाए भरकर ॥
सुरपत गागर कर धारे । श्री जिनवर के सर ढारे ॥
हर्षा मन शची इन्द्र का ।

२४

राजा का धन्यवाद देना और मैना सुन्दरी से दूसरा सवाल करना ॥

राजा- १ (शेर) धन है जो तेरा धर्म में ऐसा विचार है ।
सब राजपाट मेरा तेरे पर निसार है ॥
२ लौकिक विद्या कौन कौन सी पढ़ी तूने ।
बतला तो सही सुनने का मेरा विचार है ॥

२५

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—छप्पय छंद ॥

१ ब्रह्मज्ञान[1] चातुरी[2] वान विद्या है[3] वाहन ॥
परम धरम उपदेश[4] वाहुवल[5] जल अवगाहन ॥

२ सिद्ध[६] रसायन करण, ताल लय सप्त स्वर गावन।
वर संगीत[७] प्रमाण, नृत्य[८] वाजित्र वजावन[९] ॥
३ व्याकर्ण[१०] पाठ मुख न्यायनय[११], ज्योतिष[१२] चक्र विचारकर।
वैद्यक[१३] विधान नर चिन्हता[१४], पढ़ी विद्या दश चार वर ॥

२६

राजा का खुश होना और तीसरा सवाल करना ॥ शेर)

खुशी से देता हूँ बेटी बहुत धन्यवाद मैं तुझको।
धर्म अरू कर्म में क्या क्या पढ़ा वह भी वता मुझको।

२७

मेनासुन्दरी का जवाब ॥ (शेर)

१ चार अनुयोग की विद्या पढ़ी मैंने ध्यान करके।
रतनत्रय धर्म दशलक्षण समझ लिए हैं ज्ञान करके ॥
२ स्याद्वादांग की चरचा जो जिनमत की निराली है।
न्याय और तर्क षट दर्शन सभी देखे छान करके ॥
३ करम मीमांसा जिनमत की है मशहूर दुनियां में
पढ़ी है खास कर मैंने ठीक मन में मान करके ॥

२८

राजा का खुश होना और चौथा व पांचवां सवाल करना ॥ (शेर)

वतला तो वेटी दुनियां मुश्किल है कौन चीज।
सारे जगत में सबसे अमोलक है कौन चीज ॥

(२६)

मैना सुन्दरी का जवाब ॥

चाल — यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ॥

१ है दुर्लभ ज्ञान दुनियां में धरम सबसे अमोलक है ॥
यही भगवान ने भाषा धरम सबसे अमोलक है ॥

२ रखो तन अपना धन देकर बचालो लाज तन देकर ।
धरम पर वारदो सबको धर्म सबसे अमोलक है ॥

३ धरम के सामने सब हेच है सामान दुनियां का ॥
धरम ही सार है जग में धरम सबसे अमोलक है ।

४ धरम के वास्ते सीता किया परवेश अगनी में ।
गए बन राज तज रघुवर धर्म सबसे अमोलक है ॥

५ धरम के वास्ते गर जान भी जाए तो दे दीजे ।
समझ लीजे यकीं कीजे धरम सबसे अमोलक है ॥

३०

राजा का खुश होना और छठा सवाल करना (शेर)

है धन्यवाद बेटी तू है गुणभरी ॥
जो छोटी उमर में यह विद्या पढ़ी ॥

२ बहुत खुश हुआ मैं तुझे देखकर ॥
तू जाकर पसंद अब कोई ताजवर ॥

पिता की बात सुनकर मैनासुन्दरी का लज्जा करना और
उदास होकर जवाब देना ॥

चाल—(ठुमरी) दिदी लेदे लेदे लेदे मेरे माथे का सिंगार ॥

स्वामी-बोलो-बोलो-बोलो जरा वाणी को संभार ॥टेक॥

१ क्या प्रश्न आपने किया तजी क्यों लज्जा सुखकार।
सुन बात आपकी होता है हृदय में दुख भार ॥
२ है लज्जा ही परधान श्री जिनशासन के मंझार!
वेटी से पिता को लज्जा रखनी चाहिए हर वार ॥
३ जो फिरूं देखती आप वरूं कोई राजकुंवार।
मेरे लगे शील को दाग शील सतियों का है सिंगार ॥

३२

राजा का जवाब ॥

१ वेटी तू करती किस लिए सोचो विचार है।
क्या धर्म और शील का इसमें विगार है॥
२ कहदे तू साफ जो तेरे मन में विचार है।
जा कर पसन्द कोई तुझे अखतियार है॥

३३

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल — (गजल) यह कैसे वाल विखरे हैं यह क्यों सूरत वनी गम की

१ पिताजी मुझ से तो उत्तर तुम्हारा हो नहीं सकता ॥
मैं अपने आप वर देखूं यह वेजा हो नहीं सकता ॥
२ पिताजी हैं सरासर ना मुनासिव आपकी वातें।
वचन यह आपका मुझ से गवारा हो नहीं सकता ॥
३ जो कुलवंती सती होती हैं लोकालाज रखती हैं।
वह अपने आप वर ढूंढे सो ऐसा हो नहीं सकता ॥
४ सुकन्न और कच ने दी नन्दा सुनन्दा आदि ईश्वर को।

वहो मारग हमारा है सो उल्टा हो नहीं सकता ॥
५ न बर मांगा अहयी सुन्दर अरजिका हो गई दोनों ॥
तजूं मैं रीति सतियों की सो ऐसा हो नहीं सकता ॥

३४

राजा का जवाब ॥ (शेर)

१ सुरसुन्दरी ने जिस तरह मांगा है अपना बर ।
उसको पति दिया है कौशम्भी का ताजवर ॥
२ इस ही तरह से तू भी किसी को पसन्द कर ।
मुलकों में देश द्वीप समन्दर में ढूंढ़कर ॥

३५

मैनासुन्दरी का जवाब ।

चाल — (गजल यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ।

१ पिताजी धर्म के प्रतिकूल मुझसे हो नहीं सकता ।
जो सर चाहो तो ले लीजे मगर यह हो नहीं सकता ।
२ जो सुरसुन्दरी ने बर मांगा कुगुर संगत का फल जानो ।
मैं जिन शासन की वेता हूँ मेरे से हो नहीं सकता ॥
३ वर अच्छा देखकर माता पिता कन्या को देते हैं ।
फिर आगे भाग है जो वेश अरु कम हो नहीं सकता ॥
४ जिसे चाहो उसे दीजे पिताजी आपकी मरजी ।
करम में जो लिखा होगा वह उल्टा हो नहीं सकता ।
५ जगत में जितने सुखदुख हैं वह सब करमों से मिलते हैं ।

मिटाए जो करम रेखा किसी से हो नहीं सकता ॥
६ फिरूं बर ढूंढती गर मैं तो कुल में दाग लगता है ।
लगाऊं दाग अपने शील को यह हो नहीं सकता ॥

३६

राज का जवाब ॥ (शेर)

१ न कर बेटी मेरे से इस तरह इन्कार की बातें ।
नहीं लगती मुझे अच्छी तेरे तकरार की बातें ॥
२ पसन्द करले किसी राजा को जाकर मानले कहना ।
धरी रहने दे तू अपने शील शृंगार की बातें ॥

३७

मैनासुन्दरी का जवाब

चाल जल कैसे भरूं जमना गहरी ।

मत बेटी पे रोप करो जी पिता ।
सीस धरूं तुमरे चरणन में । कर करुणा जी नेक पिता । टेक ।
१ आपका हुक्म बजा लाने में कुछ आर नहीं ।
लाज तजने को मगर राजा मैं तय्यार नहीं ॥
धर्म प्रतिकूल कोई बात नहीं मानूंगी ।
सर मेरा चाहो तो लेलो जरा इन्कार नहीं ॥
मत नाहक दोप धरो जी पिता ॥ मत० ॥
हे पिता आप जिसे चाहें उसे दे दीजे ॥
आप बर ढूढ़ने जाने को मैं तैयार नहीं ॥
लाज है धर्म सती का इसे छोड़ूं क्यों कर ।
धर्म के बदले में दुनियां की खरीदार नहीं ॥

टुक नीति को सोच करो जी पिता ॥ मत० ॥

३८

राजा का सातवां सवाल ॥ (दोहा)

१ अच्छा बेटी जो तुझे, यह नहीं बात सुहाय ।
तो मैं तेरे वास्ते, वर ढूंढूं खुद जाय ॥
२ पर तू जो यह कहत है, सुख दुःख करमन हाथ ।
जो सुःख मैं तोहे देत हूँ, वह है किसके हाथ ॥

३९

मैनासुन्दरी का जवाब।

चाल (गजल एक तीर फैंकता जा तिरछी कमान वाले ।

१ फैला हुआ है राजा, करमों का जाल सारे ।
दरिया पहाड़ नाले, सूरज की चांद तारे ॥
२ तिर्यंच नर सुरासुर, ब्रह्मा ऋषि हरिहर ।
फिरते हैं सब चराचर, करमों के मारे मारे ॥
३ क्या आन कान वारे, क्या शाह शान वारे ।
करमों के आगे सबके, जाते हैं मान मारे ॥
४ रावण ने हरनाकुश ने क्या क्या नहीं किया था ।
आखिर करम बली से सब ही गए हैं हारे ॥
५ सुख और दुख का देना, करमों के हाथ में है ।
चलती नहीं किसी की, करलो यतन अपारे ॥

४०

राजा का जवाब ॥ (शेर)

१ सुख तुझे मैंने दिया और तू कहे तकदीर ने ।

क्या यही तुमको पढ़ाया है गुरू मुनिवर ने ॥
१ कर दिया हैरां मुझे उल्टी तेरी तकदीर ने ॥
कुछ नहीं तकदीर बतलाया यही तदवीर ने ॥

४१

मैना सुन्दरी का जवाब ।

चाल—(सारंग) कोई चतुर ऐसी सखी ना मिली ॥

१ राजा निन्दा गुरू की न कीजे जरा ।
ऐसी पाप की बातें मुझे ना सुना ॥
करें चित्र विचित्र यह क्या क्या करम ।
तुझे करमों का राजा नहीं है पता ॥
२ मैने पहले जन्म शुभ कर्म किए ।
भोगे भोग सो घर तेरे जन्म लिया ।
राजा मेरे करम में यही था लिखा ।
इसमें तूने किया क्या बता तो जरा ॥
३ पहले भव में करती जो मैं पाप करम ।
किसी नीच के घर होता मेरा जन्म ।
दुख पाती जो सहती मैं शीत गरम ।
क्या तू करता मदद मेरी दे तो बता ।
४ क्या तू सुख मोहे देने का मान करे ।
राजा मान का करना नहीं है भला ।
देखो मान किया गढ़ लंकपति ।
भई कैसी गति क्या नहीं है सुना ॥
५ देखो चक्रसभूम ने मान किया ।

सो वह सागर बीच में जाके मरा ।
मान करने का अच्छा समर है नहीं ॥
मत मान करे मेरा मान कहा ॥

४२

राजा का कोप करना और जवाब देना (शेर)

१ बस बस कबूल बात यह करती अकल नहीं ।
इनसां के आगे कोई करम की असल नहीं ॥
२ करमों की क्या मजाल जो सुख दुख दें किसी को ।
इनसां के काम में है करम का दखल नहीं ॥
३ देखूंगा मैं भी तेरे करम के जहूर को ।
जल्दी ही कुछ दिनों में अगर आजकल नहीं ॥

४३

जवाब मन्त्री का ॥

चाल—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

१ अगरचे बीच में तकरीर मेरी ना मुनासिब है ।
मगर इस वक्त चुप रहना भी मेरा ना मुनासिब है ॥
२ समझ के बोलना कन्या से है मर्यादा शासन की ।
तुम्हें बेटी से यूं तकरार करना ना मुनासिब है ॥
३ करम बलवान है दुनियां में अय राजा समझ लीजे ।
यूं आकर मान में झगड़ा बढ़ना ना मुनासिब है ॥
४ किया था मान रावण ने हुई थी क्या गति देखो ।
धरम को छोड़कर जाना कुमारग ना मुनासिब है ॥

५ हटाकर कोप को राजा सुमत धारो विचारो तो ।
कुमत को अपने हृदय में वसाना ना मुनासिब है ।

४४

जवाब राजा का (शेर)

१ मंत्री कायल नहीं हूँ मैं किसी तकदीर का ॥
दुनियां जो कुछ है नतीजा है सिर्फ तदवीर का ॥
२ मैनासुन्दरी को हुवा निश्चय जो है तकदीर का ।
यह सरासर है कसूर उसताद बद तदवीर का ॥
३ देख लूंगा मैं भी बल इस मैना की तकदीर का ।
मानती जो है नहीं दावा मेरी तदवीर का ॥

४५

जवाब मैना सुन्दरी का ।

चाल—(सारंग) कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली ॥

१ मेरे करमों को राजा तू देखेगा क्या ।
तुझे कर्म बिना राज कैसे मिला ॥
मुझे निश्चय है राजा कहूँगी यही ।
मुझे जो कुछ मिला है करम से मिला ॥
२ हैं पिताजी करम की विचित्र गति ।
चाहे छिन में यह राजा को रंक करे ।
इन करमों की रेख में मेख धरे ।
मुझे कोई भी ऐसा बशर ना मिला ॥
३ राजा राम का था दरबार लगा ।
उसे राजतिलक जब होने लगा ॥

देखो राजा यह कर्म हैं कैसे बली ।
बनोवास मिला है छतर ना मिला ।
४ श्रीकृष्ण ने लाखों ही यत्न किए ।
किसी तौर से द्वारका शहर बचे ।
जब आग लगी किसी की ना चली ॥
जल ढूंढ़ा तो जल भी किधर ना मिला ।
५ सती सीता अगन प्रवेश हुआ ।
तब देवों ने अगनी को नीर किया ॥
जब रावण सीता को लेके चला ।
क्यों ना कोई भी सुर या असुर ना मिला ॥
६ श्री आदि जिनेश्वर ज्ञानी बड़े ।
जिनकी सेवा में इन्द्र धनेन्द्र खड़े ॥
जब आकर के करमों के बन्द पड़े ।
बारा मास लों जल किसी घर ना मिला ।
७ राजा कर्म लिखा टाला टलता नहीं ।
चाहे कोई अनेक उपाय करे ॥
यही निश्चय करो मत मान करो ।
कभी मान का अच्छा समर ना मिला ॥

४६

राजा का जवाब (शेर)

१ हे सुता करती है क्या मुझको नसीहत उल्टी ।
मुझको लगती है तेरी सारी नसीहत उल्टी ॥

२ मानले कहना मेरा छोड़ करम का निश्चय।
वरना करदूं तेरी तकदीर को उलटी पुलटी ॥

४७

जवाब रानी का (शेर)

तर्ज—(कल्याण) इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

१ असर जिनमत का दिल में सब के पैदा हो ही जाता है।
इसे जो देख लेता है वह शैदा हो ही जाता है ॥
२ खता क्या इसमें अय राजा कहो तो मेरी बेटी की।
जैन बाणी से तो करमों का निश्चय हो ही जाता है ॥
३ अभी क्या उम्र है इसकी नहीं हैं दूध के टूटे।
लड़कपन में सुनों राजा कि ऐसा हो ही जाता है ॥
४ जमाना झूठ बातों का दिलों पर सख्त मुशकिल है।
सच्चाई का असर जल्दी से पैदा हो ही जाता है ॥
५ ख़फा मत हूजिए राजा छिमा करदो खता इसकी।
चलो जाने दो नादानी में ऐसा हो ही जाता है ॥

४८

जवाब राजा का ॥ (शेर)

१ यह बातें करती हो मेरे से क्या सुनो तो सही।
मुझे उड़ाती हो बातों में क्या सुनों तो सही ॥
२ मेरा कहा जो न मानेगी मैनासुन्दरी अब।
तो कैसे दुःख यह उठायगी देखियो तो सही ॥

४६

मैना सुन्दरी का जवाब देना और दरबार से चला आना ॥

चाल—हाय अच्छे पिया वही देश बुलालो हिन्द में जी घबरावत है ॥

जोड़ूं हाथ पिताजी मैं तुम आगे चरणों में सीस नमावत हूँ ॥टेक

१ जैसा जी चाहे करो आपकी मरजी साहेब ।
सर जुदा तन से करो आपकी मर्जी साहेब ।
खींच शूली पै धरो आपकी मरजी साहेब ।
या बनोवास करो आपकी मरजी साहेब ॥

छोड़ूं नाहीं पिताजी निश्चय करम का दुखों से नहीं घबरावत हूँ

२ करम में दुख ही लिखा है तो क्या करे कोई ।
बने जो बाप ही दुश्मन तो क्या करे कोई ॥
जहां पे न्याय न होवे तो क्या करे कोई ।
धर्म का नाम न होवे तो क्या करे कोई ॥

कीजो मुआफ पिताजी दोष हमारा कर प्रणाम मैं जावत हूँ

[चला जाना]

सीन ८

जंगल का परदा

५०

राजा श्रीपाल का सातसौ कुष्टी वीरों के साथ उज्जैन नगर के जंगल में पहुँचना और अपने करमों की निन्दा करना ।

चाल—[नाटक] दिले नादाँ को हम समझाए जाएंगे।

देखें क्या क्या कर्म दिखलाए जाएंगे।
जैसी करेंगे वैसी भरेंगे-अपने मन को यूंही समझाए जायेंगे
बाप को सर से मेरे तूने हटाया जालिम।
अंग में कुष्ट मेरे रोग लगाया जालिम॥
राज और पाट भी सब तूने छुड़ाया जालिम।
मेरी माता को अलग मुझसे कराया जालिम।
और जितना तेरा जी चाहे सताले जालिम।
हम भी समता से तेरे यह सदमे उठाये जाएंगे॥ देखें० ॥

५१

उज्जैन के राजा पहुपाल का मंत्री सहित सैर करते हुए श्रीपाल के पास जाना और श्रीपाल से बात करना (वार्तालाप)

राजा-अय परदेशी तू कहांसे आया है, कैसा यह लश्कर अपने साथ लाया है, क्यों तेरे तन को यह कुष्ट रोग लगा हुआ है किस कारण इस देश में आना हुवा है।

श्रीपाल-१ (दोहा) राजा कर्मों की गति टाल सके नहीं कोय।
करमों के वस में सभी होनी हो सो होय॥
२ भ्रमत फिरें वनोवास में दुखिया मैले भेस।
विपता के दिन काटने आए तुमरे देश॥

राजा-१ (शेर) फिकर इस कदर अपने दिल में न कर।
तू इस देश को जानियो अपना घर॥
२ मैं दूंगा तुझे बहुत सा मालो जर॥

दूं मैना सती अपने लखते जिगर ॥
३ यहां ठैर कुछ देर आराम कर।
बुलाता हूँ जल्दी तुझे जाके घर ॥

५२

मंत्री को राजा को कुष्ठी साथ मैनासुन्दरी का व्याह करने से रोकना और समझाना

चाल—(गजल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की

१ ग़जब करते हो राजा लाल सिंधु में बगाते हो।
कलंकित करके कुल अपने की क्यों शोभा गंवाते हो॥
२ सितम बेटी पे इतना तो नहीं करना रवा तुमको।
धरम और न्याय को क्यों आज पानी में बहाते हो॥
३ कहां वह सुन्दरी मैना कि जैसे चांद पूनम का।
कहां यह नर महा कुष्टी नहीं दिल में लजाते हो॥
४ जरा सोचो बिचारो तो कहेगी क्या तुम्हें दुनियां।
तिलक अपयश का नाहक अपने मस्तक पर चढ़ाते हो॥

५३

राजा का मंत्री को नाराज होकर जवाब देना और उल्टा नगर को रवाना होना (शेर)

१ अय मंत्री जुबान को अपनी तू बन्द कर।
इस मामले में जिद को न हरगिज पसन्द कर॥
२ मैना की मैं शादी इसी कुष्टी से करूंगा॥
सुरपत भी अगर आए तो हरगिज न टरूंगा॥

३ जल्दी से चलके आज ही दरबार कीजिए।
शादी के इन्तजाम में देरी न कीजिए॥

सीन ६

दरबार का परदा

राजा पहुपाल और मंत्री का जंगल से लौटकर दरबार में पहुँचना राजा का गुस्से में सिंहासन पर बैठना। परियों का गाना और आपस में बातचीत करना

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की।

१ परी-भवें तनती हैं बल माथे पे है और बन के बैठे हैं।
किसी से आज बिगड़ी कि वह यों तन के बैठे हैं।
२ परी-मेरी किस्मत है गर सीधी वह सीधे हो ही जाएंगे।
वह चाहे मन के बैठे हैं वह चाहे तन के बैठे हैं।
३ परी-यह बन के बैठना महफिल में उनका रंग लाएगा।
कयामत बन के उठेंगे भभूका बन के बैठे हैं॥
४ परी-किसी के कहने करने से बुरा कुछ हो नहीं सकता।
हमें परवा नहीं हमसे अगर वह तन के बैठे हैं।

५५

राजा का दरबान को हुकम देना (वार्तालाप)

राजा-अरे दरबान जाओ रानी जी से कहो कि राजा

याद फरमाते हैं और सुरसुन्दरी व मैनासुन्दरी को भी दरबार में बुलाते हैं।

दरबान-बहुत अच्छा महाराज अभी जाता हूँ।

[चला जाना]

५६

दरबान का वापिस आना। रानी का सुरसुन्दरी और मैना सुन्दरी के साथ दरबार में तशरीफ लाना। राजा का सिंहासन से उठकर रानी जी को बांई तरफ सिंहासन पर बैठाना और सुन्दरी का दांई तरफ और मैनासुन्दरी को बांई तरफ कुर्सियों पर बैठाना। राजा का मैनासुन्दरी से पूछना।

[वार्तालाप]

बेटी मैनासुन्दरी देख तू अब भी मेरी बात का विचार करके जवाब दे। अपनी करमों की बात को दिल से निकार दे। नहीं तो देख फिर तू पछतायगी और अपने करमों के झूठे भरोसे पर दुख उठाएगी।

५७

मैनासुन्दरी का जवाब

चाल—बिगड़ी हुई तकदीर बनाई नहीं जाती।

१ राजा जी दिल को सख्त बनाना नहीं अच्छा।
बेटी को वचन ऐसा सुनाना नहीं अच्छा॥
२ है धर्म मेरी जान इसे छोड़ूं मैं क्यों कर।
नाहक किसी बेकस को सताना नहीं अच्छा॥

३ छोड़ूंगी नहीं लाख कहो कर्म का निश्चय ।
इस बात में झगड़े का बढाना नहीं अच्छा ॥
४ आता है वही पेश जो लिक्खा है करम में ।
जिनवाणी में संशय कभी लाना नहीं अच्छा ॥
५ बिन धर्म के जीने से तो मरना ही भला है ।
औलाद को गुमराह बनाना नहीं अच्छा ॥

५८

राजा का कोप करना और जवाब देना [शेर]

१ मैना तू कहना मानती मेरा नहीं अगर ।
तेरा विवाह करता हूँ कुष्टी से जल्दतर ॥
२ जा देखले पड़ा है वह जंगल में बदनसीब ।
श्रीपाल उसका नाम है है मौत के करीब ॥
३ सारी उमर ही देखना आफत सहेगी तू ।
देखूंगा अपने कर्म पै कब तक रहेगी तू ॥

५९

मैनासुन्दरी का जवाब ।

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ।

१ मैं खुश हूँ हों सता अपना दिखाए जिसका जी चाहे ।
मेरी किस्मत का लिखा आजमाए जिसका जी चाहे ।
२ पिताजी ने कहा जो कुछ मुझे मंजूर है वह ही ।
अगर कुछ और दिल में हो सुनाए जिसका जी चाहे ॥
३ मुझे निश्चय है जिनवाणी पे क्या धमकी दिखाते हो ।

अचल है मेरा मन मेरु हिलाय जिसका जी चाहे।
४ मुकद्दर में जो लिखा है नहीं टाले से टलता है॥
किसी पहलू से इसको आजमाए जिसका जी चाहे।
५ करम में गर मेरे सुख हैं कोई दुख दे नहीं सकता।
कोई तदवीर सौ उल्टी बनाए जिसका जी चाहे॥

६०

राजा और मैना सुन्दरी के सवाल जवाब।

चाल—बिगड़ी हुई तकदीर बनाई नहीं जाती।

राजा-१ बेटी मैं हूँ हैरां तेरी तक़रीर के आगे।
तक़दीर तो बेकार है तदबीर के आगे॥
मैना०-२ रावण का उड़ा कोट महावीर के आगे।
तदबीर चली क्या कहो तकदीर के आगे॥
राजा-३ लाखों के सर उड़ जाते हैं शमशीर के आगे।
कायर तो सदा मरते हैं रणवीर के आगे॥
मैना०-४ सुग्रीव की माया उड़ी रघुवीर के आगे।
शक्ति भी चली हार लखन बीर के आगे॥
राजा-५ हाथी का नहीं बस चले जंजीर के आगे।
माही फंसे वंसी में माहीगीर के आगे॥
मैना०-६ सारी कटी जंजीर मुनीवीर के आगे।
गिरधर की चली कुछ ना जरद तीर के आगे॥
राजा-७ मुश्किल नहीं रहती कोई तदबीर के आगे।
तदबीर अड़ी रहती है तकदीर के आगे॥

मैना०-८ है वहस गलत कर्म की तक़दीर के आगे।
तदबीर नहीं चलती है तक़दीर के आगे ॥

६१

राजा का जवाब।

चाल—बिगड़ी हुई तकदीर बनाई नहीं जाती।

१ मैना यह तेरी ज़िद मेरे मन को नहीं भाती।
क्योंकर तुझे समझाऊं समझ में नहीं आती ॥
२ तू उम्र भर इस बात से हैरान रहेगी।
करमों की लगन तू जो नहीं दिल से भुलाती ॥
३ तू देख तेरा व्याह उसी कुष्टी से करूंगा।
बस जिसके बदन से बड़ी दुर्गन्ध है आती ॥
४ बचपन में तू आके बड़ी नादान भई है।
पछताएगी जो तू कही मन में नहीं लाती ॥
५ जंगल में अकेली तू सदा ख्वार फिरेगी।
क्यों मुझसे बिना बात तू है वैर बसाती ॥
६ रह जाएगी तक़दीर धरी देखना नादां।
इस वक्त तेरे एक समझ में नहीं आती ॥

६२

मैनासुन्दरी का जवाब।

चाल—(सारंग) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली।

१ हे पिताजी हो धमकी दिखाते किसे।

ऐसी बात सुना कर डराते किसे ॥
चाहे एक अनेक उपाय करो ।
होगा वही जो विधना ने लेख लिखे ॥
२ रानी श्रीमती की सास रोस भई ।
बाकी मारन की तदबीर करी ।
जब सती ने सरप अपने हाथ लिया ।
फूलमाला भई गल बीच पड़ी ।
३ श्रीराम ने सीता पे कोप किया ।
गिरे अगनी में जाके यह हुक्म दिया ।
जब सीता अगन परवेश किया ।
ठंडा नीर भया गुलजार खिला ॥
४ देखो शीलवती वह सुभद्रा सती ।
वाकि जेठ जिठानी ने ताने दिए ।
कच्चे सूत और छलनी से नीर भरा ।
शुभ कर्म जगे झट पाट खुले ॥
५ सभा बीच द्रोपदी का चीर गहा ।
कोई राजकुवंर न सहाई हुआ ।
वाके कर्म ही आके सहाई हुए ।
चीर बढ़ता गया सत शील रहा ।
६ सती अंजना को घर से निकाल दिया ।
किसी भाई न वन्धु ने साथ दिया ।
शुभ करमों से आकर मामा मिला ।
दुख दूर हुआ सुख राज किया ।

७ तेरे कर्म हैं राजा जी संग मेरे ।
वर कुष्टी मिले काम देव बने ॥
दुख देखूंगी नहीं सुख भोगूंगी मैं ।
कर्म होते उदय नहीं देर लगे ॥

६३

राजा का जवाब देना और दरबान को पंडित जी के बुलाने के लिए हुकम देना (वार्तालाप)

राजा-अरी मैनासुन्दरी तेरा बड़ा दुष्ट स्वभाव है। तू अब भी अपने करमों की हट को नहीं छोड़े है। अच्छा मैं अभी तेरे करमों को देखूंगा कि तेरी क्या सहायता करते हैं। [दरबान की तरफ देखकर] अरे दरबान जाओ पंडितजी को हमारा प्रणाम दो और जल्दी दरबार में बुला लाओ ॥

दरबान- अपना माथा धुनकर दिलमें हाय आज राजा को कैसी कुमत आई है बहुत अच्छा महाराज मैं अभी जाता हूँ। (चला जाना)

६४

दरबान का वापिस आना। पंडित जी का हाजिर होना और राजा से बातचीत करना (वार्तालाप)

पं०- महाराज की जय हो।

राजा-आइये महाराज पधारिये चौकी पर विराजिए।

पं०- [चौकी पर बैठकर] आज महाराज ने कैसे याद फरमाया ?

राजा-महाराज आज बेटी मैनासुन्दरी का ब्याह करना है फौरन महूरत निकाल दीजिए।

पं०- (चौंक कर) आज ब्याह करना है ? महाराज ब्याह है कि कि गुडा गुडो का खेल है ! महूरत तो आज का पहले ही निकाल बैठे हैं फिर मेरे बुलाने की कौन जरूरत थी

राजा-महाराज खफा न हूजिए कोई जल्दी का महूरत निकाल दीजिए काम जल्दी का है।

पं०-हाय क्या समय आया है महाराजों की बेटी का व्याह और जल्दी का मुहूर्त, लोग मुहूरत निकलवाने में गड़बड़ तो आप मचावें और जब व्याह में कोई विघ्न हो जावे तो दोष पंडित जी के सर। खैर हमें क्या जैसा कोई करेगा वैसा भरेगा।

६५

पंडित जी का पोथी खोलना और हाल पूछना (वार्तालाप)

पं०-महाराज किस नाम का कुमार है उसका कौनसा दयार है—अच्छा या बीमार है॥

राजा-नाम श्रीपाल है, न राजा है, न साहूकार है, कुष्ट से लाचार है।

पं०- अरे राजा क्यों अपने वंश को कलंक लगावे है तेरे उल्टे दिन आये हैं जो तू अपनी राजदुलारी को कुष्टी के साथ व्याहे है। देख अच्छा वर और अच्छा घर देखकर कन्या का देना माता पिता का धर्म कहा है

कन्या को दुःख देने से जन्म २ में दुख भोगना पड़ेगा ऐसा शास्त्र में वर्णन किया है।

राजा- महाराज ! हमने विचार किया है वही होना है
इसमें आपको और कुछ नहीं कहना है।

पं०- (माथा धुनकर कुछ अंगुलियों पर हिसाब लगा कर)

मुहूर्त तो आज का अति उत्कृष्ट है पर आपका यह कार्य महा निकृष्ट है।

राजा-महाराज आप इस कार्य में तर्क न कीजिए।
लीजिए आप अपनी दक्षिणा लीजिए। मैनासुन्दरी कहती है कि जो करमों में लिखा है वही होगा सो मैं इसी कुष्टी से इसका व्याह करके इसके करमों को देखूंगा।

६६

पंडित जी का जवाब देना और नाराज होकर दरबार से चला जाना।

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना।

१ गर्व में राजा तुझे इतना न आना चाहिये।
धर्म का भी तो तुम्हें कुछ खौफ खाना चाहिये॥

२ मानले राजा हमारी फिर भी समझाते हैं हम।
अपनी बेटी को न कुष्टी से मिलाना चाहिये॥

३ मैनासुन्दरी ने कहा जो कुछ वजा है ठीक है।
इसकी बातों पे तुम्हें श्रद्धा न लाना चाहिये॥

४ कर्म से सुख दुख मिले सच बात है क्या झूठ है।

सत धर्म को छोड़कर उल्टा न जाना चाहिये ।

५ दक्षिणा लेंगे नहीं पापी तुम्हारे हाथ की ।

ऐसे पापी की सभा में भी न आना चाहिये ॥

[चला जाना]

६७

मंत्री का राजा से फिर अर्ज करना और समझाना ।

चाल—[वियोगिनी] कटी गुनाहों में उमर सारी इलाही तोबा इलाही तोबा ।

पड़ेगा सतियों का सब्र तुझ पर विचार कीजे विचार कीजे ।

सितम जफ़ा इस क़दर न कीजे जरा तो दिलमें क़रार लीजे

१ [दोहा] राजा हमरी बात को, सुन लीजे धर कान ।

अब तक कुछ बिगड़ा नहीं, कहा हमारा मान ।

विनश जाए वह मंत्री, जो मन शंका लाए ।

विनश जाए वह स्त्री, आज्ञा से टर जाए ॥

फरज समझकर अरज करूं हूँ धरम को हृदय धार लीजे ।

सती को अपने गले लगालो, दिलासा दे करके प्यार कीजे

२ [दोहा] जा कोई राजा सुने, नहीं मंत्री की बात ।

राजा निश्चय जानियो. राजपाट सब जात ॥

बात विभिषण की नहीं, सुनी जो रावण राय ।

छिन में लंका जल गई, आप मरा रण मांह ।

विमुख धरम से हुवा जो कोई पड़ा विपत में निहार लीजे ।

जो इतने पर भी ना मानो राजा तो तुझको है अख्तियार कीजे

६८

राजा का कोप करके मन्त्री को जवाब देना। [शेर]

बस बस जुबां दराज का तू पास छोड़दे।
वरना वजीर जीने की अब आस छोड़दे॥

६९

मंत्री का जवाब।

चाल—(गजल) इलाजे दर्द दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता।

१ यह हम समझें कि अय राजा तेरी तकदीर फिरती है।
किसी की कुछ नही चलती है जब तकदीर फिरती है।
२ यह जो करती है बेशक अपनी ही तकदीर करती है।
मुक़द्दर में बिगड़ना हो तो क्या तदबीर करती है।
३ मुक़द्दर की दुरंगी भी अजब तासीर करती है।
कभी करती है खुश वह और कभी दिलगीर करती है॥
४ बहुत सा हमने समझाया मगर तू ही नहीं समझा।
तुम्हारा दोष क्या करती है जो तकदीर करती है॥
५ जो होना होगा सो होगा मगर राजा तेरी यह ज़िद।
सती मैना को राजा तेरा दामनगीर करती है॥

७०

राजा का गुस्से में मन्त्री को हुक्म देना। मन्त्री का श्रीपाल को बुलाने चला जाना और परदा गिरना। (वार्तालाप)

राजा- (गुस्से में आकर) मंत्री बस बस बन्द जुबान करो,
मत मुझे ज्यादा हैरान करो, फौरन ब्याह का मंडप
तय्यार करो, श्रीपाल को हाजिर दरबार करो।

मंत्री-बहुत अच्छा महाराज (चला जाना)

सीन १०

ब्याह के मंडप का परदा

मैनासुन्दरी के ब्याह के मंडप का परदा नजर आना। राजा रानी, सुरसुन्दरी व मैना सुन्दरी और सब दरबारियों का मंडप में बैठे हुए नजर आना। मंत्री का श्रीपाल कुष्टी के साथ मंडप में हाजिर होना, श्रीपाल को चौकी पर बिठाना, रानी और सब दरबारियों का कुष्टी देखकर अफसोस करना और रानी का राजा से फिर अर्ज करना।

चाल—हाय अच्छे पिया वही देश बुलालो हिन्द में जी घबरावत है।

राजा-जुल्म तुम्हारा देखूं में क्योंकर नैनोंमेंजलभर आवत है ॥टेक

१ देख औलाद को तो अपने ही मां बाप सिवा।
जग में कोई भी नहीं और सहारा होता ॥
जुल्म यह आपका में आंख से देखूं क्योंकर।
था यह बहतर न मुझे यहां पे बुलाया होता ॥

राजा-यह दुख मुझमे देखा न जाय काहे को जी तड़पावत है

२ चूक और भूल भी हो जाती है इनसानों से।
नेकी वद दुनियां में कहिए नहीं क्या २ होता ॥
कोप भी आजाया करता है कभी इनसां को।
पर नहीं तेरी तरह आग बबूला होता ॥

राजा-मैनाका तो कुछ दोष नहीं है काहे को दुख दरसावत है

३ मैं ख़तावार हूं वेटी भी ख़तावार मेरी ।
तुम ही अच्छे सही इस वात का झगड़ा क्या है ॥
मुआफ़ महाराज ख़ता कीजे मेरी वेटी की ।
नहीं औलाद से नादानी में क्या क्या होता है ॥
राजा राणी तुम्हारी दो कर जोड़े चरणों में सीस झुकावत है ॥

७२

माता और सब दरबारियों को रोते हुए देखकर मैनासुन्दरी का खड़े होकर
सबको समझाना और तसल्ली देना
चाल (गजल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ।

१ दरो दीवार से आती है क्यों आवाज मातम की ।
खुशी में किस लिए चारों तरफ छाई घटा ग़म की ॥
२ मैं खुश हूँ अपनी शादी से नहीं अरमान इतना भी
कि जैसे वर्ग सोसन पे पड़ी हो बूंद शबनम की ॥
३ नहीं परवाह वह रोगी है भिखारी है कि कुष्टी है ।
मेरे नजदीक हीरे की कनी है मेरी १ खातम की ॥
४ यही रघुवीर यही गिरधर यही सूरज यही चन्दर ।
मेरी नजरों में है मनमथ की सूरत मेरे बालम की ॥
५ तुम्हारा दोष क्या राजा यह सब क़िस्मत की बातें हैं ।
किसी को क्या ख़ता किस्मत में जब तहरीर हो ग़म की
६ वजीरो किस लिए रोते हो क्यों अफसोस करते हो ।
जो चाहे सो करे हाकिम की गरदन हमने है ख़म की ॥

१ अंगूठी

७ अरी माता मुझे मंजूर है मरजी पिता जी की।
भला क्यों आपने इस वक्त अपनी चश्म पुरनम की ॥
८ बजा है बाप की तदबीर क्यों दलगीर होती है।
मेरे संग में मेरी तक़दीर कुछ यह तो नहीं कम की ॥

७३

राजा का जवाब देना और मैनासुन्दरी का हाथ श्रीपाल को पकड़ाना और कन्यादान करना और श्रीपाल का मैनासुन्दरी को अंगीकार करना

राजा- (शेर)बस अब तो हम किसी की ज़रा भी न सुनेंगे
जो दिल में आ गया है वही करेंगे टरेंगे ॥
(वार्तालाप) अय कुष्टी श्रीपाल हम इस कन्या को तुम्हारे साथ करते हैं इसको अंगीकार करो।

श्रीपाल- मैं इसको अंगीकार करता हूँ। (श्रीपाल का मैनासुन्दरी को लेकर चलने को तैयार होना)

७४

मैनासुन्दरी को जाते देखकर वजीर का मैनासुन्दरी को तसल्ली देना और रंज करना।

चाल–कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना।

१ माहे रोशन कर्म से मनहूस अख़्तर बन गया।
नर्म दिल किस वास्ते राजा का पत्थर बन गया ॥
२ गुलबदन मैना सती था नाज से पाला तुझे।
हो चमन से दूर जंगल में तेरा घर बन गया ॥
३ बनती पटराणी किसी राजा के जा महलों में तू।

किस तरह कुष्टी महा रोगी तेरा वर बन गया ॥
४ धीर धर बेटी दशा यकसां कभी रहती नहीं ।
धर्म को जिससे रखा बदतर से बरतर बन गया ।
५ तुझ बिना मैनासती सब राज सूना हो गया ।
आज से दरबार जो बहतर था अबतर बन गया ।

७५

मैनासुन्दरी का वजीर को जवाब देना ।

चाल (गजल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ।

१ चमन से अब तो मैना ने उठाया आशियां अपना ।
संभालो अय वजीर अय बादशाह हमसे मकां अपना ॥
२ मेरी किस्मत की खूबी है बना सय्याद है वह ही ।
जिसे मैं बालपन से जानती थी बाग़बां अपना ॥
३ हमारी तर्क ले उजड़े बसे यह राज यह नगरी ।
उठाया आज से हमने चमन से है निशां अपना ।
४ महल की अब नहीं ख्वाहिश तमन्ना है न गुलशन की
बनाऊंगी किसी जंगल में जाकर के मकां अपना ॥
५ लिया है देख यह हमने कि मतलब का जमाना है ।
पिता माता बहन भाई न कोई राज़दां अपना ॥
६ मेरा जलता है जी बेशक मेरी माता की हालत पर ।
है रो रो कर यह कब से खो रही आरामो जां अपना ॥
७ सबर अब कीजिए माता सिवा इसके नहीं चारा ।
नहीं पैदा हुई मैना यही करले गुमां अपना ॥

७६

सुरसुन्दरी और मैनासुन्दरी की बातचीत।
चाल—(रागनी) अटारियों पे बैठा कबूतर आधी रात।

सुर०-हा हा री मैना कैसे सहेगी दुख भार।
मैना०-नहीं २ री बहना समता धरूंगी सुखकार।
विचार ली मैं होगा जो लिक्खा है ललार ॥टेक॥
१ सुर०-हा हा री मैना कुष्टी मिला है भरतार।
मैना०-नही नहीं री बहना चन्द्रबदन मनहार। विचार०
२ सुर०-हा हा री बहना छोड़ चली परिवार।
मैना०-नहीं २ री बहना झूठा है सारा घरबार। विचार०।
३ सुर०-हा हा री बहना बाबल ने दियो दुख भार।
मैना०-नहीं २ री बहना यूं ही था करम हमार। विचार
सुर०-(छाती से लगाकर)हाहारीमैना फिर ना मिलेगी करूं प्यार
मैना०-नहीं २ री बहना जिऊं तो मिलूंगी कई बार। विचार

मैनासुन्दरी को आते हुए देखकर माता का रुदन करना
और मैनासुन्दरी से कहना।
चाल—(सोहनी) चल बसे लछमन कहां भाई हमारे बेवतन।

७७

१ हो चली मुझ से जुदा तू मैना सुन्दर गुलबदन।
मेरी प्यारी लाडली अय गुलबदन अय सीस तन ॥
२ मां रुदन तेरी करे तुझ बिन जिया कैसे धरे।

रात दिन दुख दर्द से मर जायगी करके रुदन ॥
३ क्या किया था दुष्करम कुष्टी जो वर तुमको मिला ।
क्यों लिया था मेरे घर तूने जनम अय गुलवदन ॥
४ श्रीमती मैना सती जिन धर्म लीन और गुणवती ।
छोड़कर घर हो गई अफ़सोस तू अब वेवतन ॥

७८

मैनासुन्दरी का अपनी माता निपुण सुन्दरी को तसल्ली देना
चाल-(नाटक) कोई जाओ ना अरे संजीवन लाओ ना

ग़म खाए ना तेरा मुझ से लखा दुख जाए ना ॥
काहे रोवे जरावे सतावे जिया ॥ ग़म ॥ टेक० ॥
१ मुझको मालूम न था ऐसी हंसाई होगी ।
सारे घरबार से माता से जुदाई होगी ॥
अब सिवा सब के माता नहीं चारा कोई ।
ध्यान जिनराज धरो गम से रिहाई होगी ॥
दुख पाए ना जी लगाए ना ॥ तेरे हमसे० ॥
२ इस जहां में न कोई यार यगाना देखा ।
गौर कर देखा तो मतलब का जमाना देखा ॥
न कोई माता पिता बन्धु किसी का कोई ।
अपना समझूं थी जिसे वह भी बिगाना देखा ॥
कल्पाय ना, भरमाय ना ॥ तेरा हमसे० ॥
३ अब नहीं फायदा रोने से फिकर जाने दो ।
प्यार कर मुझको ज़रा थाम जिगर जाने दो ।

बाप की जिद मेरे करमों की परीक्षा होगी ।
बस मैं जाती हूँ वनोवास मुझे जाने दो ।
सुध खोए ना, बस रोये ना ॥ तेरा हमसे० ॥

७९

रानी और सुर सुन्दरी व सब दरबारियों को रोते हुए देखकर राजा का दिल भर आना और मैनासुन्दरी से कहना (शेर)

१ अरी मैनासुन्दरी यह क्या हो गया ।
गजब हो गया है सितम हो गया ।
२ है इज्जत मेरी खाक में मिल गई ।
मेरा राज सारा तबाह हो गया ॥
३ दिखाऊंगा मुंह अपना दुनियां में क्या ।
हमेशा का मैं रूसियाह हो गया ॥
४ पड़ा अक्ल पर क्या यह परदा मेरे ।
जो बेटी से नाहक खफा हो गया ॥

८०

मैनासुन्दरी का राजा को जवाब देकर श्रीपाल के साथ मंडप रवाना होना और जंगल को चले जाना और ड्रोप सीन गिराना ।
चाल- है बहारे बाग दुनियां चन्द रोज ।

१ पूछते क्या मुझसे हो क्या हो गया ।
जैसा किस्मत में लिखा था हो गया ॥
२ सुख बहुत भोगा तुम्हारे राज में ।
अब तो जंगल में बसेरा हो गया ।
३ रंज की अफसोस की क्या बात है ।

आपके जी का विचारा हो गया ॥

४ हो गई उम्मीद पूरी आपकी ।
इमतहां इसमें हमारा हो गया ॥

५ जा बजा चरचा तुम्हारा हो गया ।

६ धीर बंधवाना हमारी मात का ।
रोते रोते पहर सारा हो गया ।

७ बख्श देना हे पिता भूल से कुछ ।
दोष गर कोई हमारा हो गया ॥

८ अब तो जाती हूं पिता आज्ञा करो ।
नेग टेहला व्याह का सारा हो गया ।

९ फिर कभी आकर मिलूंगी आपसे ।
गर करम सीधा हमारा हो गया ॥

(चला जाना)

★★
★

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक

का

❋ पहिला ऐक्ट समाप्तम् ❋

❀ सती ❀

卐 मैना सुन्दरी नाटक 卐

-:o:-

—:oooo:—
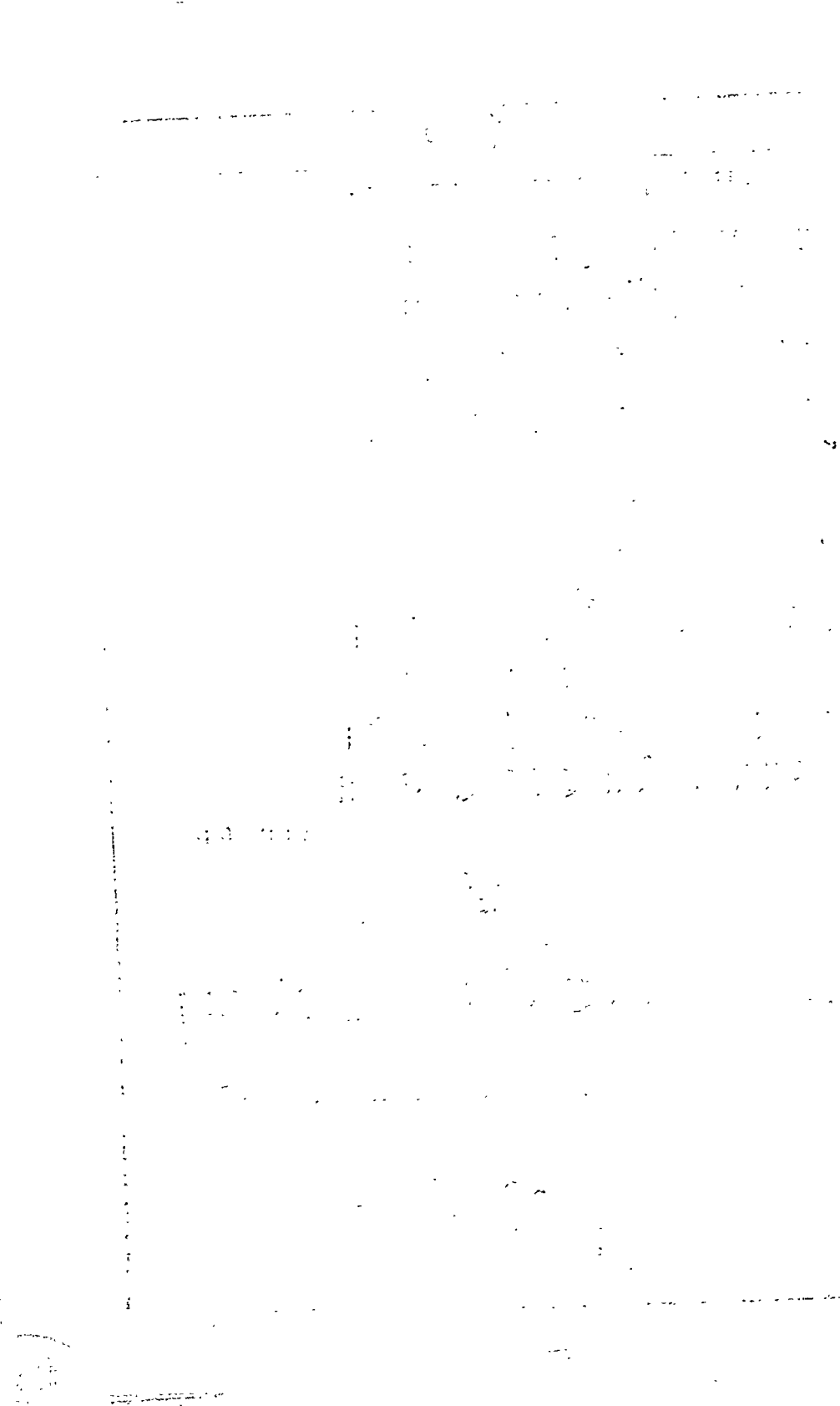
श्रीपाल का कष्ट दूर होना
और श्रीपाल का परदेश
में जाना ॥

श्री जिनेन्द्राय नमः

सीन ११

बन का परदा

८१

मैनासुन्दरी और श्रीपाल का वन में पहुँचना। मैनासुन्दरी का श्रीपाल और सात सौ वीरों को कुष्ट सहित देखकर करमों की निन्दा करना।
चाल-(इन्द्रसभा) घर से यहां कौन खुदा के लिए लाया मुझको॥

१ जितना जी चाहे तेरा आज रुलाले हमको।
जिस कदर तुझको सताना है सताले हमको।
२ सगदिल तुझसा करम और न होगा कोई।
सच बता तूने किया किसके हवाले हमको॥
३ मैं तो जानूं थी कहीं राज के सुख भोगूंगी।
ढंग आते हैं नजर और निराले हमको॥
४ बाप की बातें सुनी ताने सहे दुनियां के।
तुझको अरमां न रहे और सुनाले हमको॥
५ अय करम हमसा दुखी कोई नहीं दुनियां में।
तेरा जी चाहे कहीं जाके दिखाले हमको॥

६ राज और पाट तो छूटा नहीं परवाह उसकी ।
अब तो जीने के भी हैं पड़ गए लाले हमको ॥
७ कुष्ट बालम को दिया मुझको निकाला घर से ।
आगे किस कष्ट में क्या जाने तू डाले हमको ।

८२

मैनासुन्दरी का श्रीपाल के पास बैठना और श्रीपाल का रोकना ।

चाल-इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ।

१ तुझे अय प्राण प्यारी यहां पे आना ना मुनासिब है ।
मेरी खातिर हजारों दुख उठाना ना मुनासिब है ॥
२ कुसंगत से बदी नेकों के दिल में आ ही जाती है ।
मेरे संग बैठना तन को छुवाना ना मुनासिब है ॥
३ मेरा तन कुष्ट से व्याकुल महा दुर्गन्ध आती है ।
कि कोमल कर मेरे तन को लगाना ना मुनासिब है ॥
४ अशुभ करमों का है जब लग उदय मेरे शशी बदनी
मेरे नज़दीक तेरा आना जाना ना मुनासिब है ॥
५ मुसीबत में फंसा मैं तो यही करमों की मरजी है ।
किसी की आग में खुद जलाना ना मुनासिब है ॥

८३

मैनासुन्दरी का जवाब

चाल-(गज़ल) कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ।

१ लिया है साथ जिनका वह निभाना हां मुनासिब है ।
करम में जो लिखा है अज़माना हां मुनासिब है ॥

२ करूंगी क्या बचाकर जान अपनी यह बताओ तो।
पती के वास्ते जां को गवाना ही मुनासिब है॥
३ शरम फेरों की रखनी है न रोको पास आने से।
सती का धर्म जो कुछ है दिखाना ही मुनासिब है॥
४ दुखी तुम हो मैं सुख भोगूं यह हरगिज हो नहीं सकता
मुसीबत जो पड़े मुझ पे उठाना ही मुनासिब है।
५ न जब तक कुष्ट मिट जाए कहो जीना मेरा क्या है।
तेरी सेवा में तन मन का लगाना ही मुनासिब है॥
६ मुसीबत चार दिन की है पिया इतने न घबराओ।
मुसीबत में सदा धीरज बंधाना ही मुनासिब है।
७ मेरा जोबन है शील अरु शील से शोभा हमारी है।
यही श्रृंगार तन मन में सजाना ही मुनासिब है।
८ मुसीबत में नहीं कोई धरम बिन आशना अपना।
भरम तज के धरम में जी लगाना ही मुनासिब है॥

=४

श्रीपाल का फिर मैनासुन्दरी को समझाना।

चाल—(नाटक) चलती चपला चंचल चाल सुन्दर नार अलबेली।

धन धन है तुमरो अवतार सुन्दर नार अलबेली।
मत हम संग वन में डोले। क्यों अमृत में विष घोले॥
तू सुकुमार सुन्दर वेली॥ धन धन०॥ टेक॥
१ (दोहा) तू महलों की लाडली मैं कुष्टी दुख पूर।
कहना मेरा मान ले रहना हम से दूर॥

२ ना जानूं कब लग सहूँ दुख करमों के हाथ।
अय बौरी दुख पाएगी मत बैठो हम साथ॥
हां हां गुणवाली। ओहो हो भोली भाली।
नई बेली सी नार नवेली॥ धन धन०॥

८५

मैनासुन्दरी का जवाब देना और श्रीपाल को धर्म में लगाना और तसल्ली करना और मैनासुन्दरी का सिद्ध चक्र की पूजा करने का विचार करना।

चाल—हाये अच्छे पिया वही देश बुलालो हिन्द में जी गबरावत है।

स्वामी धीरज धारो शोक निवारो क्यों इतना घबरावत हो-टेक

१ उपाय लाख करो चाहे कोई नर नारी।
गति करम की किसी से टरी नहीं टारी॥
अशुभ करम का उदय जब किसी के होता है।
न काम आवें कोई तात भ्रात महतारी॥
स्वामी कौन किसी का बंधु पियारा काहे को जी भरमावत हो

२ मिले जो सिंघ करी[१] नाग ग्राह दुखदाई।
हो रोग कुष्ट वदन में या बन्द के मांही॥
अगन में सिंधु महावन पहाड़ जंगल में।
हों बिजलियों की चमक जल पड़े घटा छाई॥
स्वामी होता है एक धर्म सहाई क्यों निश्चय नहीं लावत हो।
३ द्वेष राग को तजकर भरम को दूर करो।
धरम की शरण गहो और मन में धीर धरो॥

हाथी

मैं सिद्ध चक्र का हृदय में ध्यान करती हूँ।
सूयज्ञ रचती हूँ इस दम प्रभु को याद करो ॥
स्वामी कष्ट तुम्हारा दूर करूंगी काहे को मन कलपावत हो

८६

श्रीपाल का जवाब

चाल—इलाजे दर्द दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता।

१ हुआ निश्चय कि दूर अब तो मुसीबत होने वाली है।
मुझे इस दर्द ग़म से जल्द फ़ुरसत होने वाली है॥
२ सती अहसान यह तेरा उमर तक न भूलूंगा।
तेरे हाथों से प्यारी मुझको राहत होने वाली है॥
३ मेरे सीधे दिन आए हैं मिली तुझसी सती मुझको।
श्री आरहंत की मुझ पे इनायत होने वाली है।
४ तेरे कहने से अय प्यारी यक़ीं अब होगया सबको।
कोई दम में दशा करमों की रुख़सत होने वाली है॥
५ अभी जाओ मेरी प्यारी मिटादो कुष्ट सारों का।
तेरे सत शील की दुनियां में शोहरत होने वाली है।

८७

मैनासुन्दरी का भगवान की स्तुति करना और सिद्ध चक्र की पूजा करने को रवाना होना।

चाल—(नाटक स्वभाव) गगरिया मोरी फोरी रे बाराजोरी से

मोहणया मोरी तारेंगे स्वामी महावीर।
परम हितकारी, मैं जाऊं वारी वारी॥जी मोहणया०॥टेक॥

आज नाथ तेरी शरणा लूंगी, नित नित करूंगी बड़ाई।
तुम नय्या तारो मोरी, मैं सेवा सारूं तोरी ॥ जीप्रोहणया०

सीन १२

श्री जैन मंडप का परदा

८८

नोटः- मैनासुन्दरी का वन में जैन मंडप तय्यार करना और सिद्ध चक्र का यन्त्र स्थापन करना और श्रीपाल व सब कुष्टियों का मंडप में बाहर बैठे नजर आना।

८६

मैनासुन्दरी का सिद्ध चक्र का यंत्र स्थापन करना और उसकी पूजा करना।
नोटः- एक ऊंची चौकी पर सिद्ध चक्र यंत्र स्थापन करना चाहिये।
और ४ पंडितों को बैठकर ऊंचे स्वर से हवन करना चाहिये।
सम्पूर्ण यहां नहीं लिखा है यह केवल नमूना है॥

१ सिद्धान्प्रसिद्धान् वसुकर्म मुक्तान्
त्रैलोक्य शीर्षे स्थित चिद्विलासान्॥
संस्थापये भाव विशुद्धिदातृन्।
सन्मंगलं प्राज्य समृद्धयेहम्॥

९०

अथ निस्तारक मंत्राः (आहुति देना)

सत्याजाताय स्वाहा ॥ १ ॥
अर्हज्जाताय स्वाहा ॥ २ ॥
षट कर्मणे स्वाहा ॥ ३ ॥
ग्रामपतये स्वाहा ॥ ४ ॥
अनादि श्रोत्रियाय स्वाहा ॥ ५ ॥
स्नातकाय स्वाहा ॥ ६ ॥
श्रावकाय स्वाहा ॥ ७ ॥
देव ब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ८ ॥
सुब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ९ ॥
अनुपमाय स्वाहा ॥ १० ॥
सम्यग्दृष्टि निधिपति वैश्रवणाय स्वाहा ॥ ११ ॥

नोटः— अन्त में जलधारा देकर यज्ञ समाप्त करना

९१

मैनासुन्दरी का गंधोदक लेकर श्रीपाल और सात सौ वीरों का कुष्ट दूर होने की प्रार्थना करना और सब पर गंधोदक छिड़कना और सब का एक दम अच्छा होना और जय जयकार करना।

चाल—अजब नहीं अकसीर हमारी खाक को चाहे जर करदे।

१ अजब नहीं तासीर धर्म की ख़ाक को चाहे ज़र करदे।
चींटी से अखतर सबसे बरतर नौकर को अफ़सर करदे।

२ अपरमपार धर्म की महिमा रात को चाहे सेहर करदे।
सीता सती के अगन कुंड को जल भरकर सरवर करदे।
३ सेठ कंवर को डसा सांप ने छिन में उसका विष हरदे।
पड़ा गले में सांप सती के फूलमाल सुन्दर करदे ॥
४ जो कोई विमुख धर्म के होवे छिन में जेरो जबर करदे।
चक्रसभूप की तरह डुबाकर बीच समन्दर के धरदे।
५ रावण की जो जलाके लंका नरक में उसका घर करदे।
पापों के घर दौलत गोहर जोहर को पत्थर करदे ॥
६ सेठ सुदर्शन को सूली से बचा तख्त ऊपर धरदे।
वही धर्म इस मैना सती के पति पे नजर मेहर करदे ॥
७ पूरण यज्ञ हुआ है मेरा मुझ में यही असर करदे।
गंधोदक से इन सब ही को कुष्ट हटा नौभर करदे ॥

(मैनासुन्दरी का गंधोदक छिड़कना-सब का जय जयकार करना।)

६२

श्रीपाल और सब वीरों का एक दम अच्छा होना और
मैनासुन्दरी की स्तुति करना।
चाल-इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता।

१ जुबां से तो अदा अहसां तुम्हारा हो नहीं सकता।
करें किस मुंह से गुण वर्णन तुम्हारा हो नहीं सकता ॥
२ धनंतर है तो तूही है शिफागर है तो तू ही है।
कोई दुनियां में बस सानी तुम्हारा हो नहीं सकता।
३ तेरे अहसान को प्यारी उमर तक हम न भूलेंगे।

सिवा तेरे कोई हामी हमारा हो नहीं सकता ॥
४ तू है सच्ची सती सच्चा धरम तेरा करम तेरा।
हमें बिन आपकी कृपा सहारा हो नहीं सकता ॥

६३

इन्द्र महाराज और इन्द्राणी व देवताओं का आना और मैनासुन्दरी श्रीपाल की जय जयकार करना और दोनों पर फूल बरसाना।
चाल—(नाटक) महाराज गावें अब हम।

धन्यवाद गावें अबहम। बरसावे फूल छमछम ॥धन०॥टेक
१ हीरों का ताज दम दम। करे शीश ऊपर हरदम।
श्रीपाल और मैना नारी। यानी प्यारी प्यारी ॥
आपस में खुश रहें बाहम ॥ धन्य ॥
२ आफत आई थी भारी! अब दूर हुई है सारी।
हे धन धन मैनासुन्दर। गावें जश सुर नर इन्दर ॥
भारत का सत रहे क़ायम ॥ धन्य ॥

६४

मैनासुन्दरी का भगवान की स्तुति करना और परदा गिरना।
चाल—(नाटक) ला ला ला ला भर भर जाम पिला गुलजाला बनादे मतवाला।

जय जय जय जय, श्रीजिन ध्यान धरी सुखकारी—
सदा ही हितकारी ॥ टेक ॥
१ वह शर्णसार है, महिमा अपार है, भव तरन तार है,
दुख हरण हार है ॥ जय० ॥

२ मेरे यज्ञ को रचा, पति कुष्ट को हरा, महिमा धरम दिखा, मेरी लाज को रखा ॥ जय जय० ॥

३ जिन धरम को गहो, निश्चय इसे करो, संसार से तिरो, शिव नार जा वरो ॥ जय जय० ॥

सीन १३

(चम्पापुर के महल का परदा)

६५

नोटः— एक दिन चम्पापुर में श्रीपाल की माता कुन्दप्रभा ने मुनि महाराज से श्रीपाल का हाल पूछा और श्रीपाल के पास जाने की राजा वीरदमन से आज्ञा ली।

६६

माता का श्रीपाल के वियोग में रोते हुए नजर आना और उज्जैन नगर की तरफ श्रीपाल की तलाश में रवाना होना।

चाल—(नाट भैरवी) देखूंगी मेरे बच्चा का मुखड़ा।

देखूंगी मेरे बेटे का मुखड़ा। प्यारा प्यारा प्यारा प्यारा ॥
प्यारा रे मेरे बेटे का मुखड़ा ॥ टेक ॥

१ वन वन फिरूंगी ढूंढ़ करूंगी।
छोड़ूंगी राज महलों का बसेरा ॥ देखूंगी० ॥

२ जब से गया कछु खबर न आई।
दे गया मोहे बरसों का दुखड़ा ॥ देखूंगी० ॥

४ पति मरा, सुत बन को सिधारा ।
कैसे टिके कहो मेरा यह जियरा ॥ देखूंगी ॥

सीन १४

उज्जैन के जंगल में श्रीपाल के महलका परदा

६७

श्रीपाल की माता का श्रीपाल के महल में पहुँचना । श्रीपाल का माता से मिलना और पांवों में गिरना । माता को श्रीपाल को गले लगाना और सिंहासन पर बैठना और मैनासुन्दरी का सास के पांवों में पड़ना और सास का आशीर्वाद देना और सबका बातचीत करना ।

माता-१ (दोहा) बेटी मैनासुन्दरी बढ़े तुम्हारा भाग ।
चिरंजीवो तुम बालमा रहियो सदा सुहाग ॥
२ अंतेवर सेवा करें बढ़े राज चिरकाल ।
सदा नेह तुमसे करे कोटिभट श्रीपाल ॥

मैना०-१ (दोहा) हे माता तुम्हें देखकर मिलो स्वर्ग को राज ।
पाओं पखारे आपके जनम सुफल भयो आज ॥
२ दोनों कुल उज्जवल भये बढ़ा सुमन में राग ।
दर्शन पाय आपके धन्य हमारे भाग ॥

माता- (वार्तालाप) बेटा कोटीभट वीर सुखी तो है तेरा शरीर ।

श्री०-माता जब से आपका दर्शन पाया, सब दुख दूर हुआ स्वर्ग का सुख पाया।

माता-बेटा कैसे मिटा तेरे कुष्ट का मलाल सुना तो सही माता को हाल।

श्री०-हे माता मेरे कुष्ट मिटाने वाली यह सती मैनासुन्दरी है जो आपके चरणों में खड़ी है, यही मेरे लिए धनंतर है इसी ने मुझको मौत से बचा अच्छा किया है।

माता-और वह सात सौ वीर ?

श्री०-उन सबकी भी इसी की कृपा से दूर हुई है सब पीर

माता-बेटा ऐसा क्या जतन बनाया जो दिन में सबका कुष्ट रोग दूर हटाया।

६८

श्रीपाल का जवाब।

चाल-(गजल) इलाजे दर्द दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता।

१ सती ने जिस घड़ी बीमार देखा इक नजर हमको।
दया दिल में हुई पैदा कहा रक्खो सबर हमको॥

२ रचा मंडप करो सिद्ध चक्र की पूजा जतन करके।
जो छिड़का लाके गंधोदक हुआ ऐसा असर हमको॥

३ कि थे जितने महाकुष्टी उन्हें नीरोग किया इकदम।
मिसल सोने के तन आने लगा अपना नजर हमको॥

४ करूं किस मुंह से गुण वर्णन यह सतियों में श्रीमणी है।
हमारे भाग अच्छे हैं मिली यह नार बर हमको ॥

९९

मैनासुन्दरी का जवाब।
चाल—(गज़ल) यह तो मैं क्योंकर कहूँ तेरे ख़रीदारों में हूँ।

१ कौन कहता है मुझे मैं नेक अवतारों में हूँ।
मैं खतावारों में हूँ बल्कि गुनेहगारों में हूँ ॥
२ मत करो तारीफ़ मेरी दोष लगता है मुझे।
मैं तुम्हारी चरण रज तेरे परिस्तारों में हूँ ॥
३ फ़ायदा जो कुछ हुआ है आपके इकबाल से।
वरना मै तो हूँ सियाहकारों में दुखियारों में हूँ ॥
४ बाप ने घर से निकाला जग में रुसाई हुई।
मैं नाचारों में हूं किसमत से लाचारों में हूँ ॥

१००

सास का मैनासुन्दरी को धन्यवाद देना (वार्तालाप)

धन्य है सती मैनासुन्दरी तूने धर्म का फल प्रगट कर दिखाया, मेरे बेटे और सात सौ वीरों का कुष्ट हटाया सतियों का मर्तबा बढ़ाया, अपने इमतिहान को पूरा कर। दिखाया दुनियां में धर्मवंती और शीलवंती का नाम पाया॥

सीन १५
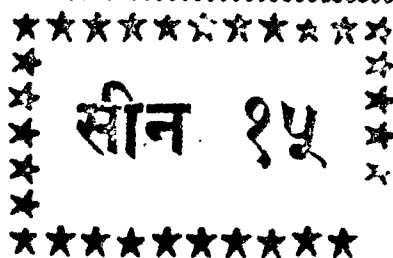
श्रीपाल के महल का परदा

१०१

नोटः— श्रीपाल और मैनासुन्दरी व कुन्दप्रभा वहीं उज्जेन के जंगल में सुख से रहने लगे एक दिन रात को श्रीपाल और मैनासुन्दरी का महल में सोना और श्रीपाल को नींद न आना। मैनासुन्दरी का श्रीपाल से हाल पूछना।

१०२

मैनासुन्दरी का श्रीपाल से नींद न आने का कारण पूछना।
चाल—(गजल) इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता।

१ ऊचाटी किस लिए है क्यों उदासी मुंह पे छाई है।
सबब क्या है जो अब तक आपको नहीं नींद आई है॥
२ किसी ने क्या खबर कुछ आपके घर की सुनाई है।
जिसे सुनकर तुम्हारे दिल में व्याकुलता आई है॥

१०३

श्रीपाल का जवाब।

१ न छेड़ो तुम हमें प्यारी तुम्हें मेरी दुहाई है।
मेरे से कुछ नहीं पूछो मेरे क्या जी में आई है॥

२ नहीं कोई खबर समझो हमारे घर से आई है।
तुझे बतला नहीं सकता कि क्यों नहीं नींद आई है॥

१०४

मैनासुन्दरी।

१ कहा है आपको राजा ने क्या कुछ आज बतलादो।
भला क्यों आपने गमगीन यह सूरत बनाई है॥
२ तुम्हारी देख के हालत मुझे भी बेक़रारी है।
पिया सच हाल बतादो कि क्या दिल में समाई है॥

१०५

श्रीपाल।

१ सुनो प्यारी कहा राजा ने है कुछ भी नहीं मुझको।
नहीं परजा मेरी प्यारी कोई फरियाद लाई है॥
२ न मैं बीमार हूँ प्यारी न मैं दीवाना हूं प्यारी।
तेरे से कह नहीं सकता कि क्या दिल में समाई है॥

१०६

मैनासुन्दरी।

१ कहीं परदेश जाने का किया क्या आपने मनशा।
हुई है क्या किसी दिलदार से तुमरी जुदाई है॥
२ मेरे तुम प्राण प्यारे हो छुपाओ मत भेद मुझसे।
तुम्हें मेरी कसम कहदो साफ जो दिल में आई है॥

१०७

श्रीपाल।

१ सिवा तेरे नहीं दिलदार दुनियां में कोई मेरा।

जवां पर किस लिए तू आज ऐसी बात लाई है।
२ सुनोगी हाल गर मेरा मलिन होवेगा मन तेरा।
मुझे खामोश रहन दे इसी में ही भलाई है॥

१०८

मैनासुन्दरी

१ अगर तुम जानते हो प्राण प्यारी अय पति मुझको।
तो फिर क्यों आपने यह बात मेरे से छुपाई है॥
२ बजा लाऊंगी सर आंखों से कहदो अपने तुम मनकी।
मैं सच कहती हूँ मत समझो हंसी करने को आई है॥

१०९

श्रीपाल का हाल बताना।

चाल-(गजल) इलाजे दर्द दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता :

१ सती सुन किस लिए तू दिल को यों बेजार करती है।
मेरे से किस लिए इस बात पर तकरार करती है॥
२ सुनाता हूँ मैं हाल अपना मगर रखना इसे दिल में।
अगर तू इस कदर इस बात पे इकरार करती है।
३ जमाई राजा का कहती है सब दुनियां मुझे प्यारी।
नाम मां बाप का मेरे नहीं इसरार करती है॥
४ न मेरे नाम को जाने न मेरे देश को जाने।
यह गुमनामी मुझे रुसवा सरे बाजार करती है॥
५ मिटा जब नाम मेरे वंश का जीना मेरा क्या है।
यही है बात जो जी को मेरे बेजार करती है॥

११०

मैनासुन्दरी का जवाब ।

चाल—(कव्वाली) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पी का द्वार बता देती ।

१ राजा आपने जो है यह बात कही ।
है यह सांच ज़रा ऐतराज नहीं ॥
बड़े स्यानों ने है यही बात कही ।
सुसराल बसे रहे लाज नहीं ॥
२ जैसे भगनी के घर कोई वीर रहे ।
कोई सूरमा बिन हथियार लड़े ॥
धन धान बिना कोई दान करे ।
कुछ शोभा नहीं, रहे लाज नहीं ॥
३ मांग राजा से चतुरंग सैन लहो ।
घर चलने का वेगी विचार करे ॥
ससुराल में राजा जी अब न रहो ।
यहां न राज जमे, रहे लाज नहीं ॥

१११

श्रीपाल का जवाब ।
चाल—(नाटक) बूंटी लाने का कैसा बहाना हुआ ।

कहीं जाने का मेरा इरादा हुआ ॥ कहीं जाने को ॥

मेरे जाने का गम कुछ ना कर तू ज़रा ॥ कहीं जाने । टेक

१ मांगे दल हो नाराज, सरेकोईनाकाज, मेरी जावेगी लाज
लेके सुसरे का दल जो पयाना किया ॥ कहीं ॥

२ ज़रा सुन देकेकान, मेरे प्राणों की प्राण, सुख भोगी महान
सारा घरबार तेरे हवाले किया ॥ कहीं० ॥

३ दीजो चहूँ संघ को दान, रखियो माता का मान, करियो
पूजा विधान, जिससे है कुष्ट सबका रवाना किया । कहीं०

४ मेरा दिल तेरे पास, मतहोना निरास, रखियो मिलनेकीआस
मेरे दिल में है तूने ठिकाना किया । कहीं० ।

११२

मैनासुन्दरी और श्रीपाल का बातचीत करना ।

चाल—(कव्वाली) कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली

१ मैना०-स्वामी यह तो मुझे समझा दो भला ।
कब आवोगे वेगी बतादो ज़रा ॥
मैंने जब से है जाने का नाम सुना ।
मेरे दिल को तो आता सबर ही नहीं ॥

२ श्रीपाल-प्यारी ऐसी न मन में अधीर बनो ।
टुक ध्यान करो मन धीर धरो ॥
आऊं बारा बरस दिन आठम को ।
देखो मेरे वचन कभी टर ही नहीं ।

३ मैना०-पल बारा रहूँ बिन दर्श पिया।
भर आवे हिया मेरा तड़पे जिया ॥
कैसे बारा बरस में रहूँगी पिया।
मेरे मरने का क्या तुम को डर ही नहीं ॥
४ श्रीपाल-प्यारा मोह से भव-भव में दुख सहे।
बिन मोह हते नहीं ज्ञान लहे।
मत मोह करे मत दुख भरे।
मोह करने का अच्छा समर ही नहीं ॥
५ मैना०-प्यारे बात हंसी की न समझो इसे।
जरा देकर के तुम कान सुनलो इसे ॥
रहो घर में या ले जाओ संग अपने।
पिया बिन मेरा होगा गुज़र ही नहीं।

११३

श्रीपाल का जवाब
चाल-(गजल) इलाजे दर्द दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता।

१ तुझे साथ अपने लेजाऊं सो यह भी हो नहीं सकता।
बिन उद्यम बैठके खाऊं सो यह भी हो नहीं सकता ॥
२ मुझे जाने दे मत रोके खुशी से दे मुझे आज्ञा।
तुझे नाराज़ कर जाऊं सो यह भी हो नहीं सकता ॥
३ बिना उद्यम के निष्फल है जनम इन्सान का समझो।
बिना उद्यम कर्म फल पाऊं सो यह भी हो नहीं सकता

४ है सुसती मां गरीबी तंगदस्ती बेतमीजी की ।
बिना उद्यम के धन लाऊं सो यह भी हो नहीं सकता ॥
५ इसी कारण हुआ मंशा मेरा परदेश जाने का ।
इरादे से जो टल जाऊं सो यह भी हो नहीं सकता ॥

११४

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल-कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

१ खुशी से जाइये बालम तुम्हें जाना मुबारिक हो ।
तुम्हें बारा बरस में लौटकर आना मुबारिक हो ॥
२ न भूलो धर्म को दिल से ध्यान इसका सदा रखना ।
तुम्हें जिन धर्म पर श्रद्धान का लाना मुबारिक हो ॥
३ मिलेंगी आपको परदेशी में कन्यायें राजों की ।
हमें मत भूलना बालम तुम्हें जाना मुबारिक हो ॥

११५

श्रीपाल का जवाब ॥
चाल-नाटक अलबेले ला छैला ऐसा लादेंगे हो रंगीला ॥

अलबेली सुन्दर ऐसे ना बोलो हो हठीली ।
टुक ध्यान कर कुछ ज्ञान कर ॥ अलबेली० ॥ टेक ॥
जिन यज्ञ रचाने वाली-अरी सुन सुन सुन ।
मेरी कुष्ट हटाने वाली -अरी सुन सुन सुन ॥
कोई नहीं दूपण-सतितों मे भूपण ।
सत मारग दिखाने वाली-अरी सुन सुन सुन ॥

मेरी धीर बंधाने वाली--अरी सुन सुन सुन।
तोहे ना जीयासे भूलाऊं परमाण कर, मेरी मानकर। अलबेली

११६

मैनासुन्दरी का जवाब।
चाल—इलाजे दर्दे दिल० ॥

१ कुसंगत से बुरी नेकों में आदत आ ही जाती है।
बदों के पास रहने से शरारत आ ही जाता है॥
२ बरस सोला की ऊपर नार से बातें नहीं करना।
जब आंखे चार होती हैं मुहब्बत आ ही जाती है।
३ दिये बिन कुछ नहीं लेना अदत्तादान चोरी है।
पराई देखकर दौ त तबियत आ ही जाती है॥
४ दगावाजों से जूवे से ज़रा रहना संभल करके।
पिया परदेश में जा करके दुर्मत आ ही जाती है॥
५ न आए तुम जो वादे पे तो लेलूंगी जिन दिक्षा।
ग़लत वादे के होने से कदूरत आ ही जाती है।

११७

श्रीपाल का जवाब देना और उसी वक्त रात को रवाना होने को तैयार होना॥
चाल—(कान्हड़ा) घर जाने दे छोड़दे मोरी बय्यां॥

१ हट जाने दे छोड़ दे ऐसी बतियां।
प्रेम धरत तोसे विनती करत हूं॥
वार वार समझाइयां॥ हट०॥ १॥

२ कोटी भट ना वाक[1] टरेंगे ।
टर जावें निश दिन पतियां ॥ हट ॥ २ ॥
३ बारा बरस में आन मिलूंगा ।
अष्टम की प्यारी रतियां ॥ हट ॥ ३ ॥

११८

श्रीपाल को जाते हुए देखकर मैनासुन्दरी का दिल भर आना और मुंह पर अंचल डालकर रोना और कहना ।

चाल—(नाटक सिंध भैरवी) हाय सय्यां पड़ूं मैं तोरे पय्यां सतावो काहे मही का ।

प्यारे सय्यां पड़ूं. मैं तोरे पय्यां न जाओ प्यारे कहीं को ।
पिया प्यारे साजन पे जाऊं वारी हां हां हां हां हां ।
कहीं जाने की प्यारे क्यों विचारी ॥
विचारी मोरे सय्यां-क्यों धारी मन सय्यां ।
पलपलयां तलमलयां बेकलयां-होरहियां ॥ प्यारे० ॥
प्यारे सांवरिया मैं तो जाने न दूंगी हां ।
मोहे काहे सताए-मोहे काहे जराए ।
जी जलाए-कलपाए-दुख दिखाए-तरसाए ॥ प्यारे० ॥

११९

श्रीपाल का जवाब ।
चाल—इलाजे दर्दे दिल०

१ समझ में कुछ नहीं आता अजब है माजरा तेरा ।

---

१ शब्द

कि मुंह पर डालकर आंचल तू क्यों हरबार रोती है।
२ खुशी से पहले दी आज्ञा मुझे परदेश जाने की।
अभी क्या हो गया प्यारी जो यूं बेताब रोती है॥
३ बतादो साफ तुम हमको असल जो बात है मनकी।
तबियत तेरे रोने से मेरी नाशाद होती है॥

१२०

श्रीपाल और मैनासुन्दरी का सवाल जवाब।

चाल-(नाटक) जीया तरसे बदरिया बरसे सखी री दिन कैसे कटेंगे बहार के।

मैनासुन्दरी-

१ जीया तरसे बदरिया बरसे हमारे दिन कैसे कटेंगे बहारके
कैसे पी बिन रहूँगी जीया मारके॥ जीया०॥ ॥टेक॥
नीर बरसेगा व कड़केगी बिजलियां घन में।
आप बिन कैसे अकेली मैं रहूँगी बन में।
संग ले चलिए मुझे वरना समझलो मन में।
मैं नहीं जीती मिलूं प्राण तजूंगी छन में॥
तुम्हीं सोचो जरा तो विचार करके॥ जीया०॥

१२१

श्रीपाल-

२ हित करले सुमतहिए धरलेपियारी दिन नीके कटेंगे बहार के
शील संजम को रखियो संभार के॥ हित॥ टेक॥
वन पहाड़ों में कहीं दरिया में चलना होगा।
भूख अरु प्यास गरम शीतका सहना होगा॥

भूमि में सोना बनोवास में रहना होगा ।
शशी वदनी कहो कैसे तेरा चलना होगा ॥
ज़रा देखो तो मन में विचार के ॥ हित० ॥

१२२

मैनासुन्दरी—

३ भूख और प्यास की तकलीफ सहन कर लूंगी ।
वन में दरिया पहाड़ों में गमन कर लूंगी ॥
भूमि सोने को मिलेगी तो वहीं पड़ लूंगी ॥
अपने रहने का पिया आप जतन कर लूंगी ।
तेरी सेवा करूंगी चित धार के ॥ जीया ॥

१२३

श्रीपाल—

४ प्यारी बैठी रहो घर में बखुशी राज करो ।
धन का सुख भोगो यहां धर्म का कुछ काज करो ॥
सात सौ वीर हैं सेवा में अटल राज करो ।
मैं बरस बारा में आजाऊंगा तुम राज करो ।
हट कीजे न मन को बिगार के ॥ हित० ॥

१२४

मैनासुन्दरी—

५ इस तेरे राज और पाट को सब आग लगे ।
फ़ौज और माल ख़ज़ाने को तेरे आग लगे ।

आप बिन कौन रहे घर में यह घर आग लगे।
वर्ष बारा किसे इक छिन में बिरह आग लगे।
किसे देते हो धोका संवार के॥ जीया० ॥

१२५

श्रीपाल।

६ मात को छोड़ तेरे संग करूंगा जो गमन।
किस तरह दुनियां में दिखलाऊंगा मुंह गुन्चेदहन।
बीच राजों के जो बैठूंगा तो आवेगी लजन।
लोग दुनियां के हंसेंगे यह सुनावेंगे वचन।
गया माता को छोड़ संग नार के ॥ हित० ॥

१२६

मैनासुन्दरी।

७ राम बनोवास गए संग सिया को लेकर।
माता कौशल्या ने भेजी उसे आज्ञा देकर।
मैं भी आजाती हूँ बस सास की आज्ञा लेकर।
उजर अब क्या है चलो संग में मुझको लेकर।
कहूँ चरणों में मस्तक पसार के॥ जीया ॥

१२७

श्रीपाल।

८ हम अगर दोनों गए मात मरेगी रो रो।
हूँगा बदनाम बिगड़ जायगा मेरा परभो॥

संग ले जाने की अब वात मेरे से न कहो।
मानले कहना मेरा, प्यारी न मेरी पत खो।
वस मैं जाता हूँ दोनों को छोड़के।

(श्रीपाल का रवाना होना)

१२८

मैनासुन्दरी का श्रीपाल को जाते हुए देखकर उसका दामन
पकड़ना और रोकर कहना।

चाल—(नाटक—कमाख) कर गयोरी झूठा वादा पिया मोसे॥

कर चलेजी-कैसा धोका पिया मोसे कर चलेजी। टेक।
१ चलूंगी संग में तुझको ज़रा न दुख दूंगी।
करूंगी सेवा तुम्हारी वनों में सुख दूंगी।
हवाले सास के घर बार फौजों माल करूं।
उसे मनालूंगी मैं जा चरण में सीस धरूं।
मेरे गुलशन की कलियां कतर चलेजी॥ कैसा॥
२ क्या साम दाम मुझे भेद भय दिखाते हो।
वनों का कष्ट दिखा क्या मुझे डराते हो।
न एक मानूंगी मैं चाहे आप लाख कहें।
चलूंगी संग में बातों में क्या बनाते हो।
मुझे विरहन बनाके किधर चलेजी॥ कैसा०॥

१२६

श्रीपाल का नाराज होना और मैनासुन्दरी से अपना दामन
छुड़ाना और गुस्से में जवाब देना

चाल—(नाटक) तुम कौन हो तुम कौन हो साहिब आये कहां से
किससे है पहिचान।

नादान नादान हो प्यारी हो मतवारी। किस लिए हो
परेशान ॥ नादान ॥

यह झगड़ा यह झगड़ा कैसा लाया है तुमने कर दिया
है हैरान ॥ नादान ॥

(दोहा) पल्ला जो दामन का मेरा पकड़ा रुकी मेरी गति।
क्यों अपशगुन मुझको किया प्रदेश जाते हे सति
हां हां हां जोबन वाली ओहो हो भोली भाली।
तुम हो कोई बड़ी हटवाली। मेरा दिल तुमने किया परेशान
ओ मतिवान।नादान।

१३०

मैनासुन्दरी का नाराज़ होकर दामन छोड़ना और जवाब देना।

चाल (नाटक) जाओ जी जाओ बड़े दान के दिलाने वाले।

जाओ जी जाओ झूठी बात के बनाने वाले।
दिल के जलाने वाले। टेढ़ी सुनाने वाले।
नादां बनाने वाले। आंखों में आने वाले।
वय्यां मरोड़ दामन हाथ से छुड़ाने वाले॥ जाओ० । टेक।
झूठा ही प्यार घरवार यह संसार देखा।

कोई ना यार वफ़ादार न हितकार देखा ।
कर्म गति है न्यारी । काहु ना जाए टारी ॥
सुनकर बातें तिहारी । चोट लगी है भारी ।
मैं दुखयारी-अबला नारी-किस्मत मारी-देते गारी ॥
क्यों बालम तरसाने वाले ॥ जाओ० ॥

१३१

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को राज़ी करना और समझाना ।
चाल—चलती चपला चचल चाल सुन्दर नार अलबेली ।

सुन तू समता मन में धार सुन्दर नार अलबेली ।
क्यों लोचन भर २ रोवे । क्यों जान पियारी खोवे ।
मुख पूनम चांद उजारी ॥ सुन० ॥ टेक ॥
दोहा-तू सतियों में शिरोमणी तू है परम सुजान ।
शील धुरंधर तू सही तू है गुण की खान ।
हां हां शुद्ध हिरदय वारी । तू कुष्ट निवारन हारी ।
तू है मेरी प्राण प्यारी ॥ सुन० ॥
दोहा—जो बालम परदेश जा आंचल पकड़े नार ।
बुरा सगुन ताहे होत है देखो सोच विचार ।
ताते मैं बैन उचारी । तैं क्यों उल्टी मन धारी ।
ओ हो हो भोरी भारी ॥ सुन० ॥

१३२

मैनासुन्दरी का राज़ी होना और जवाब देना ।
चाल—[illegible]

१ पिया गर तुम नहीं टेरा न अपने संग ले जाओ ।

तुम्हारी खैर मरजी है मैं अपने आप सहलूंगी ॥
२ जहां जी चाहे वहां जाओ न रोकूंगी मगर सुन लो।
न आए तुम जो आठों को तो मैं जिन दिक्षा लेलूंगी ॥

१३३

श्रीपाल का जवाब।
चाल—इलाजे दर्द दिल०

१ निभाऊंगा बचन अपने न कर तू सोच कुछ दिल में।
कसम जिन धर्म की मुझको इसी दिन लौट आऊंगा।
२ अगर तू दिक्षा ले लेगी मेरी प्यारी यकीं जानों।
कि पहले तेरी दिक्षा से मैं अपने जी से जाऊंगा ॥

१३४

मैनासुन्दरी का जवाब (वार्तालाप)

अय प्राणनाथ दासी को सविनय प्रार्थना है कि आप अपने संग कुछ फौज (रक्षक) अवश्य ले जावें और इस बात को निश्चयपूर्वक समझें कि यदि बारा बरस में अष्टमी के दिन आप का शुभागमन नहीं होगा तो आपकी यह अभाग्य दासी अवश्य जिन दिक्षा ले लेगी।

१३५

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को तसल्ली देना और बारा बरस में अष्टमी के दिन आने का वायदा करना।
(चाल—नाटक चलत) घर से यहां कौन खुशी के लिए लाया मुझको :

१ बस अकेला कहीं परदेश को मैं जाऊंगा।
अपनी किस्मत को फ़कत संगमें ले जाऊंगा।
रंज जाने का मेरे कुछ भी न करना मन में।

यहां पे खुश रहना व जिनधर्म को रखना मन में ।
३ इन भुजाओं की क़सम खाके यह कहता हूँ में ।
लीक पत्थर की समझ लेना जो कहता हूं में ॥
४ बरस बारा में दिन आठों को मैं आजाऊंगा ।
गर ना आया तो उसी दिन कहीं मर जाऊंगा ॥
५ मैं तो बस डाल कमन्द यहां से अभी जाता हूं ।
तुम्हें भगवान भरोसे पे छोड़ जाता हूँ ॥

१३६

श्रीपाल का भगवान को याद करना और महल से कमन्द डालकर
उतरना और अकेला परदेश में चला जाना ।
चाल—(नाटक) मेरी मानो भी मानों क्या डर है ॥

प्रभु चरणों में तेरे यह सर है तुझ भरोसे पे मेरा सफ़र है ॥
हां सबको छोड़ जाता हूं किस्मत को लिए जाता हूँ ॥
आगे जा-भल दिखा-काम बनाके जल्दी आ ॥
देखूं किस्मत में क्या क्या असर है । तुझ भरोसे० ॥
(कमंद डाल कर चला जाना और परदा गिरना)

—:०:—

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक का
दूसरा ऐक्ट समाप्तम् ॥

—:०:—

❁ सती ❁

卐 मैना सुन्दरी नाटक 卐

-:o:-

—:oooo:—

श्रीपाल का विद्या सिद्ध करना, धवल सेठ से मिलना, चोरों को जीतना, सहस्र कूट चैत्यालय को खोलना, रैनमंजूषा को ब्याहना, धवल सेठ का रैनमंजूषा पर आसक्त होना और श्रीपाल को दरिया में गिराना ।

श्री जिनेन्द्रायनमः

जंगल का परदा

श्रीपाल का वत्सनगर में पहुँचना । नन्दनवन और चम्पकवन की सैर करना एक वृक्ष के नीचे एक वीर को वस्त्राभूषण पहने हुए मन्त्र जपते हुए और मन्त्र सिद्ध न होने से क्लेश करते हुए देखना और श्रीपाल का वीर से हाल पूछना (वार्तालाप)

श्री०-अय मित्र यह कैसा मंत्र जप रहे हो और आपका चित्त क्यों चपल हो रहा है ॥

वीरः-- (चौंक कर और हाथ जोड़ कर) मेरे गुरु ने एक मन्त्र दिया है जिसको मैंने जपना प्रारम्भ किया है परन्तु न मेरा मन स्थिर होता है न यह मन्त्र सिद्ध होता है आप सहनशील हैं इस मन्त्र को आराधें और कृपा कर मेरे इस काम को साधें ॥

श्री०-अय मित्र हम रस्ते चलते मुसाफिर हैं विद्या साधन की क्रिया को क्या जानें ॥

वीर:-- (हाथ जोड़ कर) अय स्वामी आप मुझको अभयदान दें एक वार इस मंत्र को आराधें आपकी कृपा से जरूर यह विद्या मुझको सिद्ध होगी।

श्री०-- (मन्त्र जपकर और विद्या सिद्ध करके) अय मित्र यह लो आपकी विद्या सिद्ध हो गई है।

वीर:-- (श्रीपाल के पांव पकड़ कर) अय मित्र आपको धन्य है आप मुझे आज्ञा दें तो में घर को जाता हूँ इन सब विद्याओं के आप मालिक हैं में आपके चरणों में सर झुकाता हूँ।

श्री०-अय वीर मैंने रस्ते चलते अपने दिल का इम्तिहान किया है, आप अपनी विद्या संभालें इनमें मेरा हक़ क्या है।

वीर:--(सब विद्या लेकर) अय स्वामी में आपका सेवक हूँ आपने मेरा बड़ा उपकार किया है। जो बड़ी २ विद्या हैं वह आप रक्खें और जो विद्या आप मेरे योग्य समझें वह अपने हाथ से मुझे दें।

श्री०-- अय मित्र यह सब विद्या आपकी ही है इनमें मेरा कोई भी हक़ नहीं है।

वीर:-- (हाथ जोड़ कर) आप यह दो विद्या एक शत्रु निवारण और दूसरी जल तारणी तो जरूर लें और आप कुछ दिन यहां आराम करें।

श्री० (दोनों विदा लेकर) अच्छा आपकी मर्जी किन्तु हे मित्र मैं यहां ठैर नहीं सकता मुझे आगे जाना है ॥

(रवाना होना)

सीन १७

बाग का परदा

१३८

नोट— कोशंमीपुर नगर में राजा रथवाहन राज करता था और उस नगर में धवल सेठ नामी एक साहूकार था वह साहूकार पान सौ जहाज भर कर बारा वर्ष का सामान और आठ हजार फौज लेकर व्यापार के लिए परदेश को रवाना हुआ। जब मृगकच्छपुर पट्टन के करीब पहुँचा तो उसके जहाज एक दरह में अटक गए सेठ को एक वीर ने बतलाया कि किसी शुभलक्षण पुरुष को बलि देने से यह जहाज चलेंगे भेंट लेकर मृगकच्छपुर पट्टन के राजा के पास गया और एक आदमी बलि वास्ते मांगा। राजा ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि कोई आदमी तलाश करके सेठ जी को दे दो॥

१३९

श्रीपाल का मृगकच्छपुर पट्टन में पहुँचना और एक उपवन में एक वृक्ष के नीचे सो जाना। सेठ जी के महाजन और सिपाहियों का शहर और वन में किसी योग्य आदमी की तलाश करते हुए नजर आना और उसी वन में पहुँचना जहां श्रीपाल सोया हुआ है और सबका आपस में बातें करना। (वार्तालाप)

महाजन—(आपस में) ओहो यह तो भला मनुष्य है इसी से काम सरेगा।

सिपाही:—फिर इसको उठायगा कौन यह तो किसी से भी नहीं पकड़ा जायगा।

महाजन:—(श्रीपाल की तरफ जो इनकी बातें सुनकर नींद से जाग उठा था देखकर और हाथ जोड़कर) हे महाराज हम आपको सेवा करने को आए हैं आपको देखकर हमारे हृदय में स्नेह उत्पन्न होता है हे स्वामी हमसे यह पाप नहीं हो सकता।

श्रीपाल:—अय महाजनों कैसा पाप। तुम्हारा क्या मतलब है हमको साफ-साफ समझाओ और तुम अपने दिल में मत डरो॥

महाजन:—हे महाराज एक धवल सेठ नामी साहूकार है उसके जहाज सागर में अटक गए हैं एक योग्य पुरुष का बलिदान देने का विचार है। सब जगह तलाश किया कोई योग्य पुरुष न मिला। अगर खाली जाते हैं तो सेठ हमको गिरफ्तार कर लेगा और दुःख देगा सो आपकी शरण आए हैं।

१४०

श्रीपाल का जवाब॥

चाल—(दादरा) [illegible]

प्यारो प्यारो जी धीरज क्या डर है। मोहे मरने का नाहीं खतर है।

चाहो तो संग जाता हूं—भ्रम सबका मिटा आता हूँ।
वहां पे जा—बल दिखा-दुख मिटा के जल्दी आ ॥
चल दूंगा आगे सफर है कहदो जो कुछ कि तुमको फिकर है।

१४१

महाजनों का जवाब

चाल—पनघट पर हो रही भीर सीस पर घड़ा धरे पनहारी

हम सब पर पड़ रही भीड़ हियेमें दया धरो बलधारी।टेक।
१ टुक उठकर हम संग चलिए, नाथ हम सबका कष्ट निवारोजी
२ तुम सब जगपर उपकारी, सेठ तुम निरख परख हित धारोजी

१४२

श्रीपाल का खड़ा होना और महाजनों से कहना और उनके साथ रवाना होना।

चाल—इलाजे दर्द दिल०।

१ मेरी किस्मत में क्या लिखा है इसको आजमाऊंगा।
तुम्हारे पे पड़ा जो दुख उसे जाकर हटाऊंगा ॥
२ किसी दिन तो था कोटीभट का बल मेरी भुजाओं में
घटा है या बढा है आज इसको आजमाऊंगा ॥
३ अपूरब बात यह मुझको मिली है आज दुनियां में।
भरम आंखों से सारा देखकर जी का मिटाऊंगा ॥
४ करम से आज सन्मुख हो लडूंगा जाके दरिया पर।
चलो कुछ रंजोगम दिल में नहीं अपने मैं लाऊंगा।

(सबका रवाना होना)

सेठ जी के डेरे का परदा

१४३

श्रीपाल और सब महाजनों का धवल सेठ के पास पहुंचना
और महाजनों का सेठजी से कहना । वार्तालाप

महाजन—सेठजी मन का सोच दूर करो देखो आपके
भाग्य से यह कैसा लक्षणवंत पुरुष मिल गया

सेठजी- (श्रीपाल की तरफ देख कर और खुश होकर) बहुत अच्छा
चलो दरिया के पास चलो बाजे बजाओ मंगला-
चरण गाओ अनेक प्रकार का दान करवाओ इस
पुरुष को स्नान कराओ अंग में चन्दन लगाओ
वस्त्रभूषण पहनाओ जलदेवों की पूजा कराओ
ओर इसे भेंट चढाओ ।

—:ooo:—

सीन १९

दरिया का परदा

१४४

श्रीपाल को घेरे हुए सबका दरिया पे आना और बाजों का बजना
श्रीपाल को वस्त्राभूषण पहना कर सेठजी के सामने लाना।
एक वीर का श्रीपाल को बलिदान देने के लिए तलवार
खैंचना और श्रीपाल का सेठ से कहना ॥

चाल—(इन्द्र सभा) अरे लाल देव इस तरफ जल्द आ।

१ सुनो सेठ जी कर तवज्जाह जरा।
कहो तो है क्या मुद्दआ आपका ॥
२ है मंशा कि प्रोहण चले आपका।
कि है मुद्दया बस मेरे क़तल का ॥

१४५

सेठ का जवाब

चाल-(खमाज) जीवो राजा दशरथ के पुत्र चार।

देखो देखो जी सुभट सुन्दर सुकुमार ॥ टेक ॥
१ ना तुम से कछु वैर हमारा। ना तुम मारन का विचार।
२ निकलें प्रोहण पड़े भंवर में कारज है यह हा अवार ॥

१४६

श्रीपाल का जवाब

चाल—(नाटक) किस्मत खुद पर लाती आफत।

मूरख बन्दे हिय के अन्धे ध्यान हिय में धर कर देख।
जीव हते से कहो तो कैसे चलेंगे प्रोहण हितकर देख॥
कितने तेरे बीर सूरमा जोधा क्षत्री गिण कर देख।
जो मैं अपना बल परकाशूं छिन में मारूं लड़कर देख।
तेरी किसने मत हरी। तेरी मौत आ लगी।
मैं कोटीभट बली। देता मुझे बली।
कुछ मन में कर शरम। अय पापी वेशरम।
ले शरण जिन धरम। तज पाप का भरम। धरकर०।

१४७

सेठजी का हाथ जोड़ कर जवाब देना। (दोहा)

दया जो हम पर कीजिए, तुम हो गुण गम्भीर।
हाथ जोड़ विनती करूं क्षमा करो तकसीर॥

१४८

श्रीपाल का जवाब देना और सेठ जी को धमकाना

चाल (नाटक) [illegible]

तू है कैसा पाजी लोभी पापी नरकों जाने वाला।
परका जीवन हरने वाला। मनको पापी करने वाला।
पर धन ऊपर मरने वाला। धर्म उठाकर धरने वाला॥कैसा०
तुझसे ऐसे पापी लालच में जो आते हैं जो आते हैं।

वह मरके सीधे नरकों माहीं जाते हैं वह जाते हैं।
जावो जावो यहां से जावो मतना अपना मुंह दिखलावो
पत्थर सेती सर टकराओ, जैसा करना वैसा पाओ ॥
तुझे मारूं इसी दम, अभी भेजूं द्वारे जम।
महा पापी बेशरम तू है लोभी नर अधम ॥
अरे मूरख पाजी दुष्टी पापी पर की हिंसा करने वाला ।कैसा

१४६

धवल सेठ और सब महाजनों का अर्दास करना।
चाल—अपनी हमें भक्ति का कुछ दीजो दान ॥

अपनी हमें करुणा का अब दीजो दान ॥ टेक
१ तू दयावान हितकारी। तू शीलवंत गुणधारी।
बचाओ हमारे प्राण। अपनी०
२ अब मन का रोस निवारो, टुक करुणा चित्त में धारो।
तू कोटीभट बलवान। अपनी०
३ तू दुःख मिटावनहारा, करिये सब का निस्तारा।
शरण ली तुमरी आन ॥ अपनी०

१५०

श्रीपाल का दया करना और जहाज पर चढने का हुक्म देना और अपने पाओं से जहाज चलाना और सबका जय जयकार बोलना।
चाल नाटक—(भैरवी सकीरन) परम पिता की प्रीति से यश गाओ सदा।

भरम-हटा के वेगी से सब आवो जरा-सब आओ-जरा।
भगवत विचार करूं प्रोहण उद्धार करूं ॥

पांवों से उभार धरूं, सबको यहां से पार करूं।
ओ अभिमानी है हैरानी-बल देने की मन में ठानी ॥
थी नादानी-आगे ऐसी मत करो नादान।
अब तन मन धन से जिनवर के गुण गावो सदा—
गुण गावो सदा ॥ भरम

(जहाज का चलना और सब का जय जयकार बोलना)

१५१

नोटः—मंत्री ने धवल सेठ से कहा कि अगर श्रीपाल को अपने साथ ले चलें तो अच्छा है यह कोई पुन्यवान पुरुष है रास्ते में अनेक प्रकार की सहायता मिलेगी सेठजी ने इस राय को पसन्द किया और जहाज को चालित श्रीपाल के पास लाये और उसके साथ चलने के लिए अर्ज करते हुए।

सेठजी—हे स्वामी आपने हमारे प्राण बचाये हैं आप महा परोपकारी हैं आप हमारे साथ चलें और जो चाहें सो लें

श्रीपाल—हे सेठ अगर तूं दसवां हिस्सा माल का देवे तो मैं तेरे साथ चलूं

सेठजी—हे स्वामी हमारे से जो बन सके सो लो।

श्रीपाल—सुनो सेठ दसवें हिस्से से कम नहीं लेंगे।

सेठ—अच्छा कंवरजी आपको दसवां हिस्सा ही देंगे आप हमारे संग चलें। कंवर जी मेरे कोई पुत्र नहीं है और मैं आपको अपना धर्म का पुत्र बनाता हूं आप मेरे सब मालके मालिक हैं और मैं आपने कभी

दगा नहीं करूंगा आपसे प्रण करता हूँ आप अंगीकार करें।

श्रीपाल--अच्छा पिताजी चलो मैं अंगीकार करता हूँ॥

(श्रीपाल और सब का जहाज पर सवार होना और रवाना हो जाना॥ परदा गिरना)

★★★★★★★★★★★★

सीन २०

★★★★★★★★★★★★

दरिया का परदा

१५२

रास्ते में एक लाख चोरों का आना और मल्लाहों का पुकारना॥ सब लोगों का हाहाकार मचाना॥ (वार्तालाप)

मल्लाह—चोर आवत हैं सब खबरदार हो जाउ॥

महाजन—(रोते हुए) हाए कौन विपत आई कहां भाग कर जावें और कैसे प्राण बचावें। हाय रे

धवल सेठ—मत घबराओ फौरन फौज तय्यार करो और लड़ाई का सामना करो।

१५३

सब फौज का तैयार होकर आना और धवल सेठका फौज लेकर लड़ाई को आना और लड़ाई करना और चोरों से हार कर वापिस भागना और चोरों का धवल सेठ को बांध कर ले जाना और महाजनों का गिर पड़ना श्रीपाल का वह

हाल देख कर हंसना और महाजनों का श्रीपाल के पास आना और अदाल करना (दोहा) ॥

सुनो कंवर जी सेठ को, बांध ले गये चोर ।
जाय छुड़ाओ वेग ही, जो होतो बलजोर ॥

१५४

श्रीपाल का जवाब देना और लड़ाई के लिए रवाना होना ॥
चाल—(नाटक) बहादुर जंगी सारे नंगी मियान करो शमशीर ॥

अय तज्जारो साहूकारो ज़रा धरो मन धीर ।
अब ही चलकर सन्मुख लड़कर दूर करूं सब पीर ।
चोर लुटेरे भील डकेरे क्या गूजर क्या हीर ।
देव अरी गण भूत परो जिन डारूं दम में चीर । अय०

१५५

श्रीपाल का चोरों को जीतना और धवल सेठ को छुड़ाना और चोरों को बांधकर लाना सेठ जी से कहना ॥ (वार्तालाप)

श्रीपाल—कहो पिता जी इन चोरों को मारूं या छोड़ूं ।
सेठजी—अय मंत्रियो आपकी क्या राय है ।
१ मंत्री-इनको कत्ल करवादो ।
२ मंत्री-अजी आग में जलादो ।
३ मंत्री-नहीं हाथ पांवों को काट डालो ।
४ मंत्री-अजी इन सबको समुद्र में डुबादो ।
५ मंत्री-नहीं नहीं इनको खान में चुन भरवादो ।
सेठजी—हां इनको अनेक दुख देकर मार डालो ।

१५६

श्रीपाल का दया करना और कहना
चाल—बिगड़ी हुई तकदीर बनाई नहीं जाती ॥

१ दुनियां में किसी को भी सताना नहीं अच्छा ।
सुनिये पिता जी जुल्म दिखाना नहीं अच्छा ।
२ हृदय में ज़रा जीव दया को तो विचारो ।
नाहक किसी का खून बहाना नहीं अच्छा ॥
३ अपने किये का आप उठाएंगे नतीजा ।
करुणा को कभी दिल से भुलाना नहीं अच्छा ॥
४ है जग में दया का सार दया मूल धर्म का ।
दिल भूलके भी सख्त बनाना नहीं अच्छा ।

१५७

सेठ जी का जवाब ॥ (वार्तालाप)

बहुत अच्छा कंवर जी जो आपकी मरजी हो सो कीजिये ।

१५८

श्रीपाल का चोरों को छोड़ना और चोरों से कहना (वार्तालाप)

अय मित्रो तुमको जो दुःख हुआ इसमें हमारी कोई नहीं खता. आपने हम पर धावा किया और हमारे पिता को बांधा इस कारण मुझे भी तुमको बांधना पड़ा अब आप मेरा अपराध क्षमा करें क्रोध भाव को तजकर समता भाव धारण करें हमारे मित्र बनें ।

१५६

चोरों का श्रीपाल की महिमा का वर्णन करना और बहुत सा माल देकर चला जाना और जहाजों का रवाना होना ॥

चाल—हुआ सुत राम का दशरथ के बहादुर हो तो ऐसा हो

१ मिले श्रीपाल कोटिभट दयाकर हो तो ऐसा हो।
हराया लाख चोरों को दिलावर हो तो ऐसा हो ॥

२ दया दिल में विचारी है मुआफ़ इनकी खता करदी।
बचा दी जान सारों की सखावर हो तो ऐसा हो ॥

३ नज़र है आपकी यह माल सो मंजूर कर लीजे।
दयाधारी तू बलधारी कि बरतर हो तो ऐसा हो।

सीन २१

हंस द्वीप का परदा

१६०

नोट—हंसद्वीप में राजा कनककेतु राज करता था और उसकी रानी का नाम कंचनमाला था [illegible] रत्नमंजूषा एक पुत्री थी एक दिन राजा ने श्री मुनि महाराज से पूछा कि मेरी पुत्री रत्नमंजूषा का कौन पति होगा। मुनि महाराज ने प्रकाश किया कि जो कोई पुरुष सहस्र कूट चैत्यालय के बज्रमई किवाड़ खोलेगा वह तेरी पुत्री का [illegible] होगा। राजा ने सहस्रकूट चैत्यालय पर पहरा लगादिया और हुक्म दिया कि जिस वक्त कोई पुरुष इस मन्दिर के किवाड़ खोले फौरन [illegible] जावे।

१६१

हंसद्वीप का परदा नजर आना, धवल सेठ और श्रीपाल के जहाजों का हंसद्वीप में पहुँचना और श्रीपाल का जैन मन्दिर के दर्शन करने को जाने के लिए आज्ञा मांगना ।।

श्रीपाल-हे पिता जी मैं श्री जैनमंदिरजी के दर्शन को जाता हूँ

सेठजी- अच्छा पुत्र जाओ जल्दी आजाना ।

(श्रीपाल का रवाना होना)

सीन २२

सहस्त्र चैत्यालय का परदा

१६२

सहस्त्र कूट चैत्यालय का परदा नजर आना और श्रीपाल का मन्दिर के दरवाजे पर पहुँचना और किवाड़ बन्द देखकर दरबानों से हाल पूछना ।। (वार्तालाप)

श्रीपाल—अय दरबानों यह किसका मंदिर है ।

दरवान—हे महाराज यह श्री जैन मंदिर है और इसका सहस्त्रकूट चैत्यालय नाम है ।

श्रीपाल—यह बन्द क्यों है क्या किसी व्यंतर या देवता ने इसको कील दिया है या किसी ने कलंक दिया है।

दरबान-महाराज इसके वज्रमयी किवाड़ हैं सो इसको कोई खोल नहीं सकता है और कोई बात नहीं है ।

श्रीपाल—अच्छा इसको हम खोलेंगे ।

दरबान—अजी महाराज आप जैसे अनेक आ चुके ।

श्रीपाल—अच्छा तुम सब हट जाओ मैं अपनी ताकत आजमाऊंगा ।

दरबान—महाराज यह वज्रमयी किवाड़ कौन खोल सकता है आप अपना रास्ता लें काहे को व्यर्थ परिश्रम करते हो

१६३

(श्रीपाल का जवाब देना)

चाल—(गज़ल) गए फैंसे बाल बिखरे हैं नाग क्यों [illegible] ॥

१. विना खोले किवाड़ इसके नहीं मैं यहां से जाऊंगा ।
 भुजा अपनी का बल मैं आज यहां तुमको दिखाऊंगा ।
२. प्रभु का नाम लेकर हाथ मैं जिस दम लगाऊंगा ।
 वजर हो संग हो कुछ हो कि तोड़ एकदम बगाऊंगा ।
३. समझते क्या हो तुम मुझको मेरा है नाम [illegible] ।
 हटो सारा भरम दिल का तुम्हारा मैं मिटाऊंगा ।

१६४

दरबानों का दूर होना और श्रीपाल का [illegible] और [illegible] [illegible] किवाड़ खोलना और [illegible] [illegible] [illegible] दर्शन करना और [illegible] [illegible] ।

चाल—(बंजारा) टुक हिर्सो हवा को छोड़ मियां क्यों देश विदेश फिरे मारा

जय जय जय ॥

१ जय चन्द्रानन चन्द्रछवी तुम, चरन चतुर चित ध्यावत हैं।
कर्म चक्र चकचूर चिदातम, चिन्मूरत पद पावत हैं।
२ कलिमल गंजन मन अलिरंजन, मुनिजन तुम गुनगावत हैं
तुमरी ज्ञान चन्द्रिका लोकालोक भेद दर्शावत हैं।
३ तुमरे चन्द बरन तन द्युतिसों, कोटिक सूर लजावत हैं।
आतम ज्योत उद्योत माँहि सब ज्ञेय अनंत दिपावत हैं॥
४ बिना इच्छा उपदेश मांहि हित अहित जगत दरसावत हैं।
तुम पदतट सुर नर मुनि झटपट, बिकट विमोह नसावत हैं

१६५

नोट—श्रीपाल भगवान के दर्शन करके सामयिक करने लगे और दरबानों ने राजा कनककेतु को मंदिर का दरवाजा खुलने की खबर दी।
राजा का अपने मंत्री व रानी सहित सहस्रकूट चैत्यालय में आना और भगवान के दर्शन करना:

चाल—पद्धरी छन्द

जय जय जय ॥

दोहा—सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रसलीन।
सो जिनेंद्र जयवंत नित, अरि रज रहस विहीन।
१ जय बीतराग विज्ञान पूर।
जय मोह तिमिर को हरण सूर॥
जय ज्ञान अनंतानंत धार।
दृग सुख बीरज मंडित अपार॥

२ जय परम शांति मुद्रा समेत ॥
भविजन को निज अनुभूति हेत ॥
भवि भागन वच जोगे वशाय ।
तुम धुनि है सुनि विभ्रम नसाय ॥
३ तुम गुणचिंतत निज पर विवेक ।
प्रघटे विघटे आपद अनेक ॥
तुम जग भूषण दूषण वियुक्त ।
सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥

१६६

राजा कनककेतु का श्रीपाल से मिलना और बातचीत करना ।

राजा--हे मित्र धन्य है आपका अवतार आप ध्यान देकर मेरी एक बात सुनें । श्रीमुनि महाराज ने मेरे से कहा था कि जो पुरुष इस सहस्रकूट चैत्यालय के किवाड़ खोलेगा वह मेरी पुत्री रैनमंजूषा का वर होगा आज आप हमारे भाग्य से यहां पधारे हैं और आपने यह वज्रमयी किवाड़ खोले हैं सो आप कृपा करके हमारे घर चलें और मेरी पुत्री को अंगीकार करें ।

श्रीपाल-हे महाराज मैं इस योग्य नहीं हूं मैं एक परदेसी चलता मुसाफिर हूं ।

राजा--हे पुत्र मुझे श्रीमुनि महाराज के वचन प्रमाण हैं वह झूठे कदापि नहीं हो सकते आप मुझ पर कृपा करो

श्रीपाल--अच्छा आपकी मरजी आप यहां के राजा हैं। आपकी आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है।

(सब का चला जाना)

राजा के महल का परदा

राजा का श्रीपाल को साथ लेकर दरबार में पहुंचना और रैनमंजूषा का श्रीपाल के साथ ब्याह होना और सब का मिलकर मुबारकबाद गाना और श्रीपाल का रैनमंजूषा को लेकर चला जाना और परदा गिरना ॥

चाल—(नाटक) मुबारकबादी गावो शादी अब शहजादी की ॥

मुबारकबादी गावो शादी दूलहा दूलहन की।
राजदुलारी की है-क्या प्यारी प्यारी सूरत नियारी ॥दूलहा॥
हंस नगर में नगर शहर में फूल खिला है शादी का।
तन मन वन वन गुलशन फूला।
कलियां खिलियां हंसियां सखियां। दुलहा दूलहन की ॥

सीन २४

दरिया और जहाज का परदा

१६८

श्रीपाल का रैनमंजूषा को लेकर हंसद्वीप से रवाना होना रास्ते में एक दिन श्रीपाल का रैनमंजूषा से जहाज में चलते चलते बातचीत करना

चाल—(इन्द्र सभा) चले लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

१ सुनो प्यारी मेरी तरफ को निहार ।
पिता ने तुम्हारे किया क्या विचार
२ समझ में नहीं आती कुछ मेरे बात ।
कि क्यों तुमको ब्याहा विदेशी के साथ ॥

१६९

रैनमंजूषा का अफसोस करना और कर्मों की निन्दा करना ॥दोहा॥

१ राजा हमारे तात ने जो कुछ किया विचार ।
सो हमको प्रमाण है लीला मस्तक धार ।
२ कन्या को पितु मात की आज्ञा है सुखकार ।
जिन शासन की शान है सतियों का शृंगार ।
३ परदेशी निर्धन दुखी चाहे नर कुरूप ।
मेरे लेखे हो पति हरि बल काम स्वरूप ॥

१७०

श्रीपाल का रैनमंजूषा को अपना हाल बताना और उसकी तसल्ली करना।
चाल नाटक—(संकीर्ण भैरवी) वेदों पे विश्वाश लाओरे भइया।

बातों पे विश्वास तू मेरे लाईयो।
राजा महान हूं कोटि बलवान हूँ। बातों पे०
मैनासुन्दरी राणी है—चम्पापुरी राजधानी है।
भारतवर्ष के पुरुषों ने शमशीर मेरी मानी है।
हंसने की बातों पे प्यारी न जाईयो। बातों पे०
दोहा—१ बीरदमन का पुत्र हूँ कुन्दप्रभा है मात।
धर्मपित सम जानियो, धवलशाह विख्यात।
२ कुछ कारण ऐसो भयो कर्म गति बलवान।
राज चचा को सोंपकर आ पहुँचा इस स्थान।
तू अपने सब मनका संदेह मिटाइयो॥ बातों पे०

१७१

रैनमंजूषा की तसल्ली होना और खुश होकर जवाब देना।
चाल—(गजल) इलाजे दर्द दिल०

१ मेरे धन भाग हैं राजा पति तुझसा मिला मुझको।
सिया को राम रुक्मणका हरी तू बावफा मुझको।
२ थे पहले तो बहुत संदेह सुनो राजा मेरे मन में।
मिटाये आपने सारे हैं हाल अपना सुना मुझको।
३ विना जाने कहा जो कुछ खता सब बख्श दो मेरी।
हैं राजा आप कोटिभट न था पहले पता मुझको।

४ नहीं अब स्वर्ग की ख्वाहिश तमन्ना है नहीं धन की ॥
हुवे अब आपके दर्शन तो फिर सब कुछ मिला मुझको ॥
झुकाती हूँ मैं सर अपना प्रभु के सार चरणों में ॥
करूं धन्यवाद तन मन से पति तू मिल गया मुझको ॥

सीन २५

टापू का परदा

१७२

धवल सेठ का एक दिन रैनमंजूषा को देखना और आसक्त होना और उसके वियोग में बीमार होना और मूर्छा आना श्रीपाल का सेठ को सचेत करना और हाल पूछना ॥ (वार्तालाप)

श्रीपाल-हे पिताजी आज आपका क्या हाल है क्या आपको किसी व्यंतर ने सताया या समुद्र की लहर ने घबराया

सेठ-हे पुत्र मुझे वाय की बीमारी है पांच दस वर्ष में कभी कभी यह बीमारी हो जाती है आप न घबरावें आराम करें ॥ (श्रीपाल का चला जाना)

सुमत प० मन्त्री-सेठ जी अब आपका क्या हाल है। आपकी बीमारी बढ़ती जाती है कोई दवाई कारगर नहीं होती जो आप फरमावें वही इलाज करें हम सब आपकी आज्ञा पालन करने को तय्यार हैं ॥

१७३

सेठ का जवाब ॥

चाल—इलाजे दर्द दिल ॥

१ हकीमों से इलाज अब तो हमारा हो नहीं सकता ॥
वह सब मजबूर हैं और कोई चारा हो नहीं सकता ॥
२ हुआ है रैनमंजूषा पे मेरा आज दिल मायल ॥
बिना उसके मिले समझो गुजारा हो नहीं सकता ॥
३ करो तदबीर कुछ ऐसी मिले वह नाजनी मुझसे ॥
दवा हों लाख तुम करलो सहारा हो नहीं सकता ॥
४ अभी मर जाऊंगा समझो शुबा मत मेरे मरने में ॥
अगर जल्दी से इसका कोई चारा हो नहीं सकता ॥

१७४

सुमतप्रकाश मन्त्री का जवाब ॥

चाल—इलाजे दर्द दिल० ॥

१ इलाजे दर्द हमसे तुम्हारा हो नहीं सकता ॥
तेरी व्याधी का समझो कोई चारा हो नहीं सकता ॥
२ सती है पाक दामन है वह कोटिभट की रानी है ॥
किसी को उसके यहां लाने का पारा हो नहीं सकता ॥
३ जुबां को बन्द कर लीजे इसी में कुछ भलाई है ॥
जतन हों लाख भी मनका विचारा हो नहीं सकता ॥
४ खबर इस बात की कानों में गर श्रीपाल के पहुँचे ॥
हमारा और तुम्हारा फिर गुजारा हो नहीं सकता ॥

१७५

धवल सेठ का जवाब ॥ शेर ॥

१ मन्त्री रहने दे बस तू अपने इस उपदेश को ॥
मैं तो दुश्मन जानता हूँ ऐसे खैरअन्देश को ॥
२ कर कोई तदबीर जल्दी उसको दे मुझसे मिला ॥
वरना जा यहां से चला नाहक मेरा मत दिल जला ॥

१७६

सुमतप्रकाश मन्त्री का जवाब ॥
चाल—(नाटक) दिले नादां को हम समझाए जायेंगे ॥

तुझे नेकी का रस्ता दिखाये जायेंगे ।
मानो न मानो यह मन्शा तुम्हारी ॥
न समझाने से हम तो बाज आयेंगे ॥ तुझे० ॥
वह श्रीपाल की रानी है समझ तो जाहिल ॥
पाक दामन है सती शील में पूरी कामिल ॥
धर्म सुत तूने श्रीपाल को बनाया जाहिल ॥
है गजब पुत्र वधु पे है तेरा दिल माइल ॥
सारी दुनियां क्या कहेगी तुझे पापी जाहिल ।
न यह पापों के फन्दे श्रो अन्धे हटाए जायेंगे ॥ तुझे० ॥

१७७

सेठजी का सुमतप्रकाश मन्त्री पर [illegible] करना और [illegible] को बुलाना ॥ (वार्तालाप)

सेठ—अय नमकहराम मन्त्री तुम मेरे सामने से चले

जाओ अरे कुमत प्रकाश मन्त्री तू कहां है फौरन हाजिर हो ॥

कुमत प्र०-सेठजी साहिब मैं हाजिर हूँ ॥ किस तरह किया याद, कुछ कीजिए इर्शाद, फरमाइए। दिल का हाल, दिखाऊं अपना कमाल ॥

सेठ—हां हमको भी तेरी चालाकी और होशियारी पे भरोसा है मगर मेरे काम को जरा दिलोजान से करियो ऐसा न हो कि नाकामयाबी हो ॥

कुमत प्र०—अजी आप फरमाइये आपके इर्शाद करने की देर है वरना उसके पूरा होने में क्या हेर फेर है ॥

सेठ—मगर मेरा काम जरा मुशकिल है ॥

कुमत प्र०—वन्दा भी आसान करने के काबिल है ॥

सेठ—देखो कभी डर न जाना ॥

१७८

कुमतप्रकाश मंत्री का जवाब ॥

चाल-(नाटक) मैं आफत का परकाला हूँ ॥

मैं आफत का परकाला हूँ। मैं किससे डरने वाला हूं।
फंदा फांसा हीला झांसा। लाखों हिकमत वाला हूँ ॥टेक॥
वदमाश बद चलन का पहना है मैंने बाना ॥
गर हूँ ठगों का दादा शैतान का हूँ नाना ॥

धोका फरेब देकर करके अजब बहाना ॥
दावा यही है मेरा काबू में सबको जाना ॥
हरदम मेरे पो बारे, कुल स्याने मुझसे हारे हैं ॥
बदमाशी झगड़े की हंडिया बेढब गर्म मसाला हूँ ॥मैं॥

१७६

सेठ जी और कुमतप्रकाश की बातचीत

सेठ—शाबास अय कुमतप्रकाश क्या कहूँ इश्क का बीमार हूँ इसी से लाचार हूँ रैनमंजूषा का आशिके जार हूँ बजानों दिल खरीदार हूँ ॥

कुमत०—(हैरान होकर) राम राम यह किसका नाम लिया मैंने हाथों से दिल को थाम लिया अजी सेठजी कायम रहे आपकी शौकतो शान यह अर्मान नहीं कुछ आसान ॥

सेठ—अजी फिर कुछ तो तदबीर बताइये ॥

कुमत०--क्या कहूँ दिल तड़पा वाला है तुमने कुछ अजब शशोपंज में डाला है ॥

सेठ--नहीं नहीं डरने की कौन बात है तुममें बड़ी करामात है

कुमत०-रैनमंजूषा श्रीपाल कोटिभट की रानी है महारानी शील की निशानी है इसकी निस्बत फिकर ख्याल करना अपनी जान खतरे में फंसानी है ।

सेठ-तुम कुछ फिक्र मत करो एक बार मेरी किस्मत आजमाई करो अपनी होशियारी का कुछ नमूना करो ।

१८०

कुछ सोचकर कुमतप्रकाश का जवाब देना ॥

चाल— (नाटक) तुम्हें दूंगा मैं बाकी खबरिया जान ॥

तेरा दूंगा बना काम आज की रात ॥
मुझे सूझी है कैसी अनोखी यह बात ॥
मैं हूं चंचल-बनाऊं लाखों अल छल ॥
मचादूं सारे हलचल-शैतान का काम दूं ॥ तेरा० ॥
मल्लाहों से मिलकर--उनको लालच देकर ॥
झूठा शोर मचावें--प्रोहण डूबे जावें ॥
वेग श्रीपाल चढाऊं—रस्से काट बगाऊं ।
वह नीचे गिरकर—सागर पड़कर—झटपट मरकर—
सब कुछ करकर ॥ दूंगा बना ॥

१८१

सेठजी का जवाब (वार्तालाप)

सेठ--वाह वाह क्या बेनजीर तदबीर है अय कुमतप्रकाश
मल्लाहों को फौरन हाजिर करो ॥
कुमत०—वहुत अच्छा मैं अभी हाजिर करता हूँ ॥

(चला जाना)

१८२

सुमतप्रकाश मन्त्री धवल सेठ को फिर समझाना ॥

चाल—(गजल) एक तीर फेंकता जा तिरछी कमान वाले ॥

१—फैला हुआ है सारी दुनियां में नाम तेरा ॥
सबसे बढ़ा हुआ है सेठों में काम तेरा ॥

२ निर्मल है वंश तेरा उत्तम है धर्म तेरा ।
राजों में सारी दुनियां गिनती है नाम तेरा ॥

३ है आपकी सिठानी गुणवन्त खूबसूरत ।
परनार से कहो तो फिर क्या है काम तेरा ॥

४ वह कोटिभट की रानी पुत्री समान जानो ।
हो जाएगा वरना बदनाम नाम तेरा ।

५ खोटी नजर सती को देखा तो देख लेना ।
एकदम खराब होगा लश्कर तमाम तेरा ॥

६ गर अब भी मान जाओ मन से कुमत हटाओ ।
यों ही बना रहेगा दरबारे आम तेरा ॥

१=३

धवल सेठ का जवाब (व्योगनी)

सुनो तो मंत्री किसी शक्ल से मिलादो या तो वह जान शीरीं ।
फिराक में उसके वरना मेरी जरूर जावेगी जान शीरीं ॥

१=४

सुमतप्रकाश मन्त्री का जवाब (व्योगनी)

१ फिराकमें किसके खो रहा है तू किसलिये अपनी जानशीरीं ।
जो सेठ मानो हमारा कहना गवां न अपनी तू जानशीरीं ।

२ वह पाकदामन है शीलवंती बुरी निगाह देखना बुरा है ।
तेरे लिए है वह जहरे कातिल समझ न इसे हयात शीरीं ।

३ हटाके अपने तू मनसे शरको, कदमपे इनके गिरा न सर को ।

जो चाहता है बचाना नादां, अय सेठ अपनी तू जान शीरीं
४ धर्म का बेटा बनाया तूने, है कोटिभट को न भूल मूरख
वह उसकी रानी है तेरी बेटी, ले मान मेरी यह बात शीरीं
५ तुम्हारे हक में यही भला है, तेरे मरज की यही दवा है।
सती के चरणों को धो के पीले, समझ के आबेहयात शीरीं

१८५

धवल सेठ का जवाब ॥

१ हट छोड़दे छोड़ नहीं तू यूं कहे मैं यूं कहूँ ॥
बहतर है वह बहतर है यह तू यूं कहे मैं यूं कहूँ ॥
२ यह काम खोटा तू कहे अच्छा है यह मैं यूं कहूँ ॥
क्योंकर सुनूं मैं बात तेरी तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥
३ मैं तो कहूँ वह नाजनीं और तू कहे वह नागनी ॥
वह जहर है अमृत है वह तू यूं कहे मैं यूं कहूँ ॥
४ दारू हमारे दर्द की मन्त्री तू कर सकता नहीं ॥
तेरी मेरी बनती नहीं तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥

१८६

सुमतप्रकाश मन्त्री का जवाब ॥
चाल—(गजल) इलाजे दर्दे दिल०

१ सती के दिल दुखाने का समर अच्छा नहीं होगा ॥
पराई नार लाने का असर अच्छा नहीं होगा ॥
२ सुता सुत नार और भगनी अनुज नारी बराबर हैं ॥
इन्हें मत देखना खोटी नजर अच्छा नहीं होगा ॥

३ जबरदस्ती दगाबाजी से चाहे आप जो करलें ।
नतीजा ऐसी बातों का मगर अच्छा नहीं होगा ॥
४ जरा श्रीपाल कोटिभट का डर भी दिल में कर लीजे ॥
अगर हो जाएगी उसको खबर अच्छा नहीं होगा ॥
५ बदी से आज आ जावो हमारा मानलो कहना ॥
तुम्हारी इस शरारत का असर अच्छा नहीं होगा ॥

१८७

धवल सेठ का जवाब ॥
चाल—(गजल) इलाजे दर्द दिल०

१ नतीजा इश्क का क्या है सो अच्छा हम भी देखेंगे ॥
बला से जान जायेगी तमाशा हम भी देखेंगे ॥
२ शीलवंती पाक दामन बताते हो जो तुम उसको ॥
रखेगी कब तलक हमसे वह परदा हम भी देखेंगे ॥
३ नहीं मरने का गम मुझको न रुसवाई का डर मुझको ।
करेगा क्या वह कोटिभट सो अच्छा हम भी देखेंगे ।
४ वह चाहे नागनी है जहर है कातिल है फितना है ॥
मगर उस नाजनी का इक नजारा हम भी देखेंगे ।
५ नसीहत की वह बातें अब किसी की हम नहीं सुनते ॥
जो होना होगा सो होगा नतीजा हम भी देखेंगे ॥

१८८

[illegible]
[illegible]

मल्लाह—हुजूर हम सब मल्लाहिया हाजिर हैं क्या हुक्म है

सेठजी—देखो जैसे कुमतप्रकाश मंत्री तुमको आज्ञा करें वैसा ही करो हम तुमको बहुत इनाम देंगे और राजी करेंगे ॥

मल्लाह—बहोत अच्छो महाराज ऐसा ही होगा ।

(मल्लाहों का चला जाना)

सीन २६

दरिया का परदा

१८६

रात के वक्त जहाजों का चलते हुए नजर आना और मल्लाहों का पुकारना ।

मल्लाह—दौड़ियो दौड़ियो कोऊ बड़ा भारी मगरवो टकरात है प्रौहणियो डूबत जात है दौड़ियो दौड़ियो ॥

सब लोग— (दौड़कर मल्लाहों के पास जाकर) अरे क्या हो गया क्या आफत आ गई ।

मल्लाह—अरे कोऊ बरत पर वेगी चढ़ौ प्रौहणियो डूबत जात है ॥

कुमत०—(श्रीपाल स) कुंवर जी आप जल्दी पधारें जहाज डूबते हैं आप रक्षा करें ॥

श्रीपाल—अरे क्या हो गया है ।

कुमत०—महाराज हमें कुछ पता नहीं ॥

श्रीपाल—(खड़ा होकर) अच्छा चलो (मल्लाहों के पास जाकर)

अरे क्या शोर है क्या आफत है ॥

मल्लाह—महाराज प्रौहणियो डूबत जात है कोऊ बेगी चढ़ो बरत को ठीक करो हमन से यो काम नहीं बनत है ॥

१९०

श्रीपाल का सब को तसल्ली देना और बरत पर चढ़ना ॥

चाल—(नाटक) मेरी मानो जी मानो क्या डर है ॥

जरा ठैरो जी ठैरो क्या डर है-नहीं समझा कि कोई खतर है ऊपर को अभी जाता हूँ—रस्से को संवार आता हूँ ।
अभी जा--हाथ लगा--काम बना के जल्दी आ ।
दिल में न कोई फिकर है ॥ नहीं समझो ॥

१९१

नोट—श्रीपाल का बादबान पर चढ़ना ॥ [illegible] और श्रीपाल का समन्दर में गिरना और सिद्ध [illegible] समाप्त ॥

[illegible]

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी
नाटक का तीसरा [illegible] समाप्त शुभम् ॥

❀ सती ❀

卐 मैनासुन्दरी नाटक 卐

-:०:-

चौथा ऐक्ट
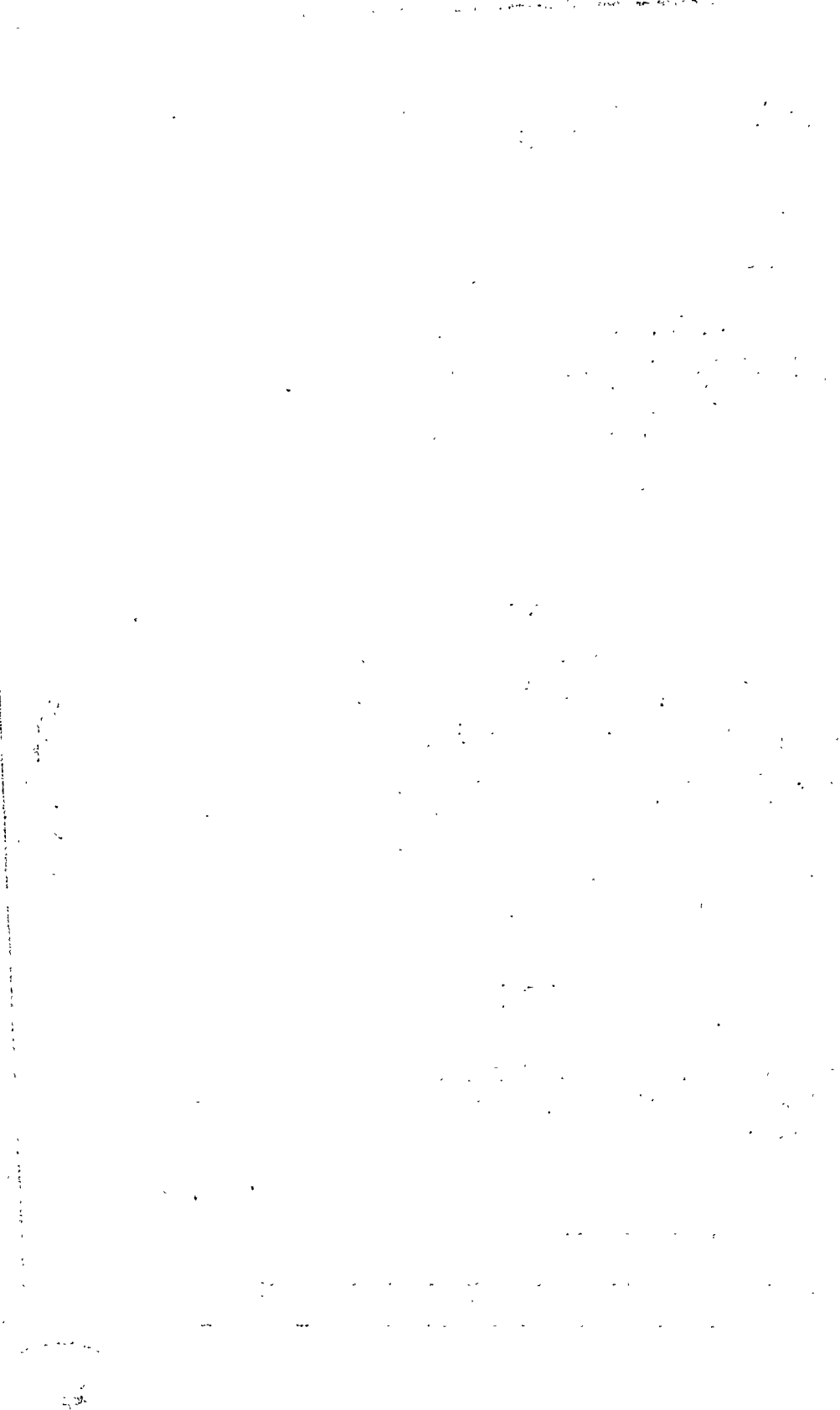
—:००००:—

रैनमंजूषा का श्रीपाल के वियोग में विलाप करना, धवल सेठ का रैनमंजूषा को सताना, देवताओं का आकर सती का शील बचाना, श्रीपाल का समुद्र से पार होना और गुणमाला से ब्याह करना ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन २७

जहाज में रैनमंजूषा के महल का परदा

१६२

रैनमंजूषा का जहाज में बैठे हुए नजर आना। श्रीपाल के समुद्र में गिरने की खबर सुनकर बांदी का रोती हुई रैनमंजूषा के पास आना और रैनमंजूषा का बांदी से हाल पूछना (चौपाई)

१ कारण कवन रही मुरझाई। क्यों रोती हो कहो समझाई
२ काहु करो अपमान तुम्हारो। या कोई दुर्वचन उचारो।

१६३

जवाब बांदी का (चौपाई)

१ रानी बिपत पड़ी अति भारी। मुखसे बात न जाय उचारी।
२ श्रीपाल महाराज हमारो। आज पड़ो दधि के मंझधारी।

—:❀:—

१९४

रैनमंजूषा का यह हाल सुन कर मूर्छित होना। बांदी का
सचेत करना और रैनमंजूषा का विलाप करना
चाल--दिए दुख फलक ने भारे चले छोड़ के राज विचारे ॥

दिए दुख यह करमने भारे। पड़े सिंधमें कंथ हमारे। टेक

१ तुझे कर्म दया नहीं आती। है जान हमारी जाती जी।
चलें गम के जिगर पर आरे ॥ पड़े ॥

२ ससुराल न पीहर मेरा। हुआ जग में आज अन्धेरा जी।
हमें छोड़ा किसके सहारे ॥ पड़े ॥

३ सती पूछेंगी मैना नारी। मां देखे है बाट तुम्हारी जी।
क्या कहूँगी मैं बात विचारे ॥ पड़े ॥

४ जो सुनेगी खबर वह तिहारी। मरजांगी दोउ दुखियारी जी।
लगे दोनों का पाप हमारे ॥ पड़े ॥

५ अरे करम महा अन्याई। क्यों हो गया महा दुखदाई जी ॥
तूने कबके यह बदले निकारे ॥ पड़े ॥

६ कौन धीर बंधावे हमारी। दुख पड़ गया हम पर भारी जी।
जल नैनों से बरसे हमारे ॥पड़े० ॥

१९५

[illegible]

सुनो महारानी सती तुम हो गुण गम्भीर ॥
होना था सो हो गया मन में राखो धीर ॥

१६६

रैनमंजूषा का आभूषण उतार कर फैंकना और विलाप करना ॥

चाल—बिंदी लेदे लेदे मेरे माथे का सिंगार ॥

सब तारो तारो तारो मेरे हाथों का शृंगार ।
हाथों का शृंगार मेरे माथे का शृंगार ॥ सब० ॥ टेक
१ कटी बेसर बिंदी बैना गल मोतियन हार ॥
क्या मोहन माला सुन्दर कुंडल नेवर झंकार ॥ सब०
२ लो सीस मुकट हथफूल करो चुंदरी का तार तार ॥
मेरे बालम डूबे जल में मेरा जीना है धिक्कार ॥सब०
३ मेरे कर की मेंहदी दूर करो लगे अगन अंगार ॥
मस्तक की बींदी तारो डारो करके तोन चार ॥ सब०
४ क्या करूंगी राज और पाट करूं क्या सारा घरबार ॥
मेरा लुट गया छिन में राज गया मेरे सर का सरकार ॥सब०

१६७

सखियों का आना और समझाना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ॥

१ कौन जाने की किस्मत में तुम्हारे क्या लिखा होगा ॥
जो लिखा है वही होगा बुरा हो या भला होगा ॥
२ सुखी कोई दुखी कोई वह सब करनी के फल जानो ॥
किया है जैसा फल उसका किसी दिन बरमला होगा ॥

३ खुशी में होगया है ग़म सदा यह भी न रहने का ॥
सबर मन में करो रानी जो कुछ होगा भला होगा ॥
४ विपत में हे सती जिन धर्म ही होता सहाई है ॥
शरण जिनराज की ले लो इसी से दुख जुदा होगा ॥

१६८

रैनमंजूषा का जवाब ॥
यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

१ प्रभू जाने सखी पहले जनम में क्या किया होगा ॥
किसी का धन हरा होगा किसी को दुख दिया होगा ॥
२ किसी परपुरुष पर मैंने चलाया होगा मन अपना ॥
पति का या हुक्म मेरे कभी मन से टरा होगा ॥
३ करी होगी कभी निन्दा धरम जिनराज की मैंने ॥
कोई या जीव जल अगनी में मेरे से पड़ा होगा ॥
४ किसी का अंग उघारा या किया होगा नियम खंडन ॥
वचन झूठा कोई मुंह से कभी मैंने कहा होगा ॥
५ लगाया होगा मैंने दाग़ अपने शील संजम में ।
किसी का गुण मिटाया या कोई औगुण कहा होगा ।
६ करी होगी जुदाई या किसी नर नार में मैंने ।
दगाबाजी से या मैंने किसी को दुख दिया होगा ।
७ यहां वह ही करम मेरे उदय आया पति संग ।
गिरी जाकर समंदर में तड़पना या मरा होगा ।

१९९

सुमतप्रकाश मंत्री का आना और समझाना ॥
चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

१ शुभाशुभ हे सती कर्मों से ही इजहार होते हैं ।
खुशी जो आज होते हैं वह कल लाचार होते हैं ।
२ लखन रामा सती सीता किसी दिन राज भोगें थे ।
वही इक दिन बनों में जा दुखी बेज़ार होते हैं ।
३ सिया के वास्ते रावण से राम इक रोज लड़ते थे ।
वह अब बनवास देने के लिए तय्यार होते हैं ।
४ पवंजय को किसी दिन अंजना की बू न भाती थी ।
वही चोरी से जाके रात को गमख्वार होते हैं ।
५ प्रभू का नाम ले रानी बस अब करले सबर मनमें ।
धरम ही सार है जग में इसी से पार होते हैं ।

२००

रैनमंजूषा का जवाब ॥
चाल—(गजल) यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

१ सबर कैसे करूं मंत्री सबर आता नहीं मन को ॥
नहीं काबू में मन क्योंकर दिलाऊं मैं यकीं मनको ।
२ करेगा कौन जाके राज चम्पापुर बताओ तो ।
है उजड़ा राज दूं धीरज कहो क्योंकर कहीं मनको ।
३ बरस बारा में मिलने की कही थी मैनासुन्दरी से ।
कहूँगी क्या उसे जाकर बतावो इस हर्जी मनको ॥

४ है देखे राह माह कुंदनप्रभा श्रीपाल आने की ।
वह मर जायगी सुनकर और न थामेगी कहीं मनको ॥
५ चल या पांव से मोहण वजरमयी पाट जा खोले ।
कहां वह वीर कोटिभट नजर आता नहीं मनको ।

२०१

सुमतप्रकाश मंत्री का वैराग उपदेश देना और तसल्ली करना ॥
चाल—(कवाली) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली (सारग)

१ प्यारी दुनियां है सागर दुखों से भरा ।
यामें सुख कहीं आता नजर ही नहीं ॥
यामें मोह का जाल पड़ा है सती ।
जामें जीव फंसे हो खबर ही नहीं ॥
२ कौन माता पिता कौन बंधू सुता ।
कैसे भाई बहन कैसे दारा पती ॥
इस दुनियां के नाते हैं झूठे सभी ।
सच पूछो तो रहने का घर ही नहीं ॥
३ नदी नाव संजोग से आके मिले ॥
जैसे पेड़ पर पच्छी बसेरा करे ।
जब भोर भई सब बिछड़ के चले ।
संग चलने का कोई जिकर ही नहीं ॥
४ रानी स्वारथ की है सारी दुनियां लखो ।
यामें भूल के कोई न नेह करो ॥
सूखे दरिया पे नर पशु पच्छी कोई ।

देखो करता है आके गुजर ही नहीं ।
५ चाहे फौज पयादे हजारों रहो ।
चाहे महल किले में जा बन्द करो ।
चाहे जंतर मंतर लाखों पढ़ो ।
मौत टारी किसी से भी टरी ही नहीं ।
६ धन दौलत राज खजाना सभी ।
कोई अन्त समय काम आवे नहीं
आ मुसीबत में कोई सहाई करे ।
ऐसा कोई भी सुर या असुर ही नहीं ।
७ ऐसा जान के प्यारी विचार करो ।
दुख शोक तजो समता को भजो ।
मोहमाया को मन सेती दूर करो ।
मोह करने का अच्छा समर ही नहीं ।
८ जिनराज भजो मन धीर धरो
तप संजम शील सिंगार करो ।
धर ध्यान निज आतम कर्म हरो ।
बिना धर्म के होगा गुज़र ही नहीं ।

२०२

रैनमंजूषा का सवर करना और धर्म में जी लगाना और भगवान की खुशी करना ॥

चाल – यह कैसे बाल बिखरे हैं ॥

१ तू ही तारन तरन जिनराज दुख हारी विपत हारी ॥
तू सारे विश्व का ज्ञाता तू ही शिव मग का नेतारी ॥

२ हितू तुमसा नहीं कोई हुवा निश्चय मेरे मनको ।
तुही उरझी का सुरझइया तुही जग जीव हितकारी ।
३ पवंजय को मिली अंजना लगाया ध्यान जब तेरा ।
मिली आ राम से सीता जला लंका का गढ़ भारी ।
४ पड़ी मझधार में नय्या सहारा है नहीं कोई ।
खिवैया मेरी कशती का तू ही है मैं तुझपै बलिहारी
५ तेरी शरना में लेती हूँ तुम्हारी देख कर महिमा ।
मिलेगा पी हमारा भी भरोसा है मुझे भारी ।

समुद्र के किनारे का परदा

२०३

नोट—जिस वक्त श्रीपाल समुद्र में गिरा [illegible] का जाप करता हुआ [illegible]
[illegible] ने [illegible] समुद्र में [illegible]

२०४

श्रीपाल का समुद्र को पार करके कुमकुम द्वीप में पहुँचना और भगवान का
धन्यवाद गाना और [illegible]

चाल—(नाटक) [illegible]

तेरा धन्यावाद गाऊँ-पद को झुकाऊँ आप मेरे भगवान ।
तू हितकारी-दुःख परिहारी है तुमसा ही जग में भगवान तेरा०

धोखे से मैं अफसोस गिरा। दरिया में बरंजे कमाल।
तूंने ही मुझको ला डाला है। सिंधु से पार निकाल।
रैनमंजूषा रोती है उसे जा धीर बंधाना-अय मेरे भगवान।

(को जाना)

२०५

नोट-यह बन जहां श्रीपाल सोया हुआ है कुमकुम द्वीप का बन है। वहां राजा भूमंडल राज करता था बनमाला पटरानी के एक लड़की गुणमाला अति रूपवती और शीलवती थी एक दिन राजा ने श्रीमुनि महाराज से पूछा कि गुणमाला का कौन वर होगा। श्रीमुनि महाराज ने फरमाया कि जो पुरुष समुद्र तैरकर आएगा वह गुण माला को ब्याहेगा। राजा ने समुद्र के किनारे पर सिपाही बैठा दिए और हुकम दिया कि जिस वक्त कोई पुरुष समुद्र तैरकर आए फौरन इत्तला दी जावे इन सिपाहियों ने जिस वक्त श्रीपाल को समुद्र से निकलते हुए और एक वृक्ष के नीचे सोते हुए देखा तो यह श्रीपाल के पास आकर आपस में बातें करने लगे।

२०६

सिपाहियों का आपस में बात करना (शेर)

१ सि०—लखो इस राज कन्या ने यह कैसा पुण्य कमाया है
जो इसके वास्ते यह नर समंदर तिरके आया है।
२ सि०—शरीर इस पुरुष का देखा तो सोनासा चमकता है
यह कोई इन्द्र है या कोई राजा देख पड़ता है।
३ सि०—महा पुन्यवान है मनमथ का इसने रूप धारा है
सूरत मन मोहनी मूरत बदन सांचे में ढारा है।

४ सि०—भुजाओं की तरफ देखो नहीं बलकी कोई सीमा
यह शायद भीम या महावीर ने अवतार धारा है ।

२०७

श्रीपाल का चौंककर उठना और सिपाहियों से हाल पूछना ॥
चाल – पटलू में मेरे यार है उसकी खबर नहीं ।

१ तुम कौन हो और किस लिए इस जापे आए हो ।
घबराए किस लिए हो कि मन में लजाए हो ॥
२ क्यों मेरी तरफ देखते हो क्या विचार है ।
भेजा किसी ने या किसी का इन्तजार है ॥
३ खौफो खतर का कुछ नहीं दिल में गुमां करो ।
जो बात है वह साफ मेरे से बयां करो ॥

२०८

सिपाहियों का हाल बताना और एक सिपाही का राजा को
खबर करने के लिए रवाना होना ॥
चाल—अपनी [illegible] ॥

कारण यहां आने का सुनिए सरकार ॥ टेक ॥
१ कुमकुम पट्टन भारी सब सुखी प्रजा नर नारी ।
जैन मारग परचार ॥
२ भूमंडल है भूपाला । पटनार नार [illegible] ।
३ ताके एक राज कुमारी । गुणमाला राज दुलारी ।
शील जोबन शृंगार ॥

४ जो पुरुष तैर दधी आवे । वह गुणमाला को व्या है ॥
कही मुनि अवधि विचार ॥

५ हम राज हुकम अनुसारे । रहते हैं यहां रखवारे ॥
सुनो तुम राजकंवार ॥

६ तुम महापुन्य अधिकारी । आए चीर समन्दर भारी ॥
चलो बरो राजदुलार ॥

२०६

राजा भूमंडल का आना और श्रीपाल से बात करना और
श्रीपाल का राजा के साथ जाना ।

चाल—(इन्द्र सभा) अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

१ सुनो वीर गम्भीर हे गुण विशाल ॥
किया देश को मेरे तुमने निहाल ।

२ है धनभाग आए मेरे दिन भले ॥
जो हैं आपके आज दर्शन मिले ॥

३ चलो घर पे मेरे करम कीजिये ॥
नहीं दिल में अपने शरम कीजिये ॥

४ मेरे मन की चिन्ता जो है सब हरो ॥
मेरी राज कन्या को चल कर बरो ॥

(सब का चला जाना)

———:❀:———

सीन २९

दरबार का परदा

२१०

श्रीपाल की गुणमाला से शादी होना और परियों का मुबारकबाद गाना ॥

चाल नाटक—(मुबारकबादी)

आजा प्यारी देखो गुलशन में आई बहार ॥टेक॥

१ आए समन्दर को तिर करके राजा ।
है कोई नागकुमार ॥ कुमारी प्यारी०

२ गुणमाला सुन्दर है राजदुलारी ।
हो चांद सूरज निसार ॥ निसार प्यारी० ॥

३ खुश रहो प्यारा प्यारी यह दोनों ॥
जग में हो महिमा अपार ॥ अपार प्यारी० ॥

सीन ३०

महल का परदा

२११

(ओर—श्रीपाल गुणमाला के पास [illegible] बैठे [illegible] गुणमाला का श्रीपाल से [illegible] पूछना और [illegible] करना।

चाल—उमराव थारी बोली प्यारी लागे महाराज (रागनी राजपूताना)

महाराज मेटो मेरे मन की चिन्ता महाराज ।
महाराज जी, जी महाराज ॥ टेक ॥
१ कहां तुम्हारा राज है कहां मात परिवार ।
कौन पिता किस वंश में लीना है अवतार ।
महाराज हो तुम किस नगरी के बासी महाराज । महाराज०
२ क्योंकर छोड़ा राज को क्यों आए इस देश ॥
किस कारण घरबार को छोड़ चले परदेश ॥
महाराज क्योंकर होगए बनके बासी महाराज । महाराज०
३ क्योंकर सिंधु में पड़े क्योंकर निकले आय ।
भेद बतावो बालमां मनका संशय जाय ॥
महाराज मैं तुमरे चर्णन की दासी महाराज । महाराज०

२१२

श्रीपाल का जवाब ॥ दोहा ॥

१ सुन सुन्दर टुक कान दे, तोसे कहूँ विचार ।
जल पितु पंकज मात है, सागर वंश अवतार ॥
२ वड़वानल प्रबल तरंग मम बन्धु परिवार ।
तिन सबको मैं छोड़ कर, आयो तोरे द्वार ।
३ कहूं अगर मैं और कुछ, सांच न जाने कोय ।
है ये ही मेरा पता, सुन सुन्दर जिय जाय ॥

२१३

गुणमाला का जवाब ॥

चाल—(नाटक) वहीं जावो मन भावो जिसपर हो प्यार वहीं जावो ॥

क्षमा कीजे जी कीजे—गुस्सा निवार क्षमा कीजे ।
क्यों छल वैन सुनाते हो—अल छल वात वनाते हो ॥
हंस हंस जान जलाते हो ॥ क्षमा० टेक ॥

१ मैंने तो आपको अपना ही समझ रक्खा है ।
तुमने लेकिन मुझे एक गैर समझ रक्खा है ।

२ राजे दिल मेरे से जो तुमने छुपा रक्खा है ।
आप खुल जायगा इस वात में क्या रक्खा है ॥

३ वात करना ही अगर दोष समझ रक्खा है ।
तो खैर मुआफ करो रंज में क्या रक्खा है ॥

२१४

श्रीपाल का हाल बहाना ॥

चाल—(कवाली)—चली सावन बहार आई झुलाय किसका जी चाहे ॥

१ सुनाऊं हाल दिल अपना तेरे दिल का शुबा निकले ।
जरा सुन ध्यान देकर के सुनाने में मजा निकले ॥

२ नगर चम्पा का राजा हूं मुझे श्रीपाल कहते हैं ।
करम वश राज को तजकर चले उज्जैन जा निकले ॥

३ वहां मैना सती सुन्दर सी है कन्या मिली मुझको ।
उसे भी छोड़कर आगे चले एक बन में जा निकले ॥

४ चले इक सेठ के साथ और फिर हंसद्वीप में पहुंचे ।
मिली थी रैनमंजूषा जो मंदिर से जरा निकले ॥

५ करम गर्दिशने फिर मुझको गिराया लाके सिंधु में ॥
भुजा से पार कर सागर तुम्हारे दर पे आ निकले ॥

२१५

श्रीपाल का हाल सुनकर गुणमाला का खुश होना और श्रीपाल को ले जाना ॥
चाल—(नाटक) अम्मा मुझे दिल्ली की टोपी मंगादे ॥

आज मेरे जी का संशय मिटाया ॥
संशय मिटाया संशय मिटाया ॥
हां जी मेरे मनकी कली को खिलाया ॥ टेक ।,

१ तुझसा न बलवान दुनियां में कोई ।
किस्मत से ऐसा पति मुझको पाया ॥
२ दिन रात सेवा करूंगी तुम्हारी ।
सर अपना चरणों में तेरे झुकाया ॥
३ उठ्ठो चलो राज सम्पत को भोगो ।
आनन्द चारों तरफ आज छाया ॥

(दोनों का चला जाना)

सीन ३१

जहाज का परदा

२१६

धवल सेठ का रैनमजूषा के बिरह में रोते हुए नजर आना (शेर)

१ रैनमंजूषा की फुरकत में निकली मेरी जान ॥

है कोई ऐसा यार हमारा वेग मिलावे आन ॥
२ अरे कहां है कहां गया है सुनो कुमत प्रकाश ॥
भूल गया क्या वात हमारी रही नहीं क्या ध्यान ॥

२१७

विदूषक का आना और गाना (शेर)

१ अय मूरख क्या वात विचारी काम नहीं आसान ।
हो जावो होशियार विदूषक भी है पहुंचा आन ॥
२ कितना तेरा डेरा डांडा लशकर और सामान ।
इस रास्ते में सब लुट जागा रोवेगा नादान ॥
३ पेड़े वरफी लड्डू जलेबी खाओ सेठ हर आन ॥
रैनमंजूषा से क्या लेगा खो वैठेगा जान ॥
४ कहते हैं हम तेरे भले की सुनले धर कर कान ।
जो तू मेरा कहा न माने होवेगा हैरान ॥

२१८

कुमतप्रकाश मंत्री का दो दूतियों को लेकर आना और सेठजी व विदूषक व कुमतप्रकाश की बातचीत करना (वार्तालाप)

कुमत०—सेठजी मैं हाजिर हूं गमन कीजिये जल्दी इन
दोनों दूतियां को रैनमंजूषा के पास भेजिये अपनी
दिली मुराद हासिल कीजिए ॥
विदू०—सेठजी हम भी हाजिर हैं जरा होश में आओ ऐसे
खुशामदी लोगों की बातों पे न आओ ॥ ऐसा न

हो कहीं दही के धोके कपास खा जाओ रैनमंजूषा महा सती है अगर आप उस पर बद ख्याल लायेंगे, तो लेने के देने पड़ जायेंगे ।

सेठ—अरे विदूषक यह कैसी बे महल कीलो काल है ॥

विदू--सेठजी यह काम मुहाल है मुझे तेरी बरबादी का ख्याल है

सेठ-(दूतियों की तरफ देखकर) अरी दूतियों तुम जल्दी रैनमंजूषा के पास जाओ अपना कमाल दिखलाओ ।

दूति--बहुत अच्छा हम अभी जाती हैं । उड़ती चिड़िया को जाल में फंसाती हैं । आपका गुंचये दिल खिलाती हैं ।

विदू०—अच्छा तो फिर हम भी जाते हैं देखो क्या नया गुल खिलाते हैं ।

(चला जाना)

सीन ३२

जहाज में रैनमंजूषा के महल का परदा

२१६

दूतियों का रैनमंजूषा के पास पहुंचना और बातें मिलाना ॥

चाल—(इन्द्रसभा) राजा हूँ मैं कौम का इन्दर मेरा नाम ॥

१ दूति--हे पुत्री यूंही जगत में होता सांझ सवेर ।
चाहे जतन सौ कीजिये मरा न आवे फेर ॥

२ दूति—होना था सो हो गया जाने दो बस खैर ॥
रहो सहो खावो पियो, करो बाग की सैर ॥
१ दूति—शील सो जब तक पालिया जब लग है सरदार।
तू अब निरअंकुश भई, देख करो भरतार ॥
२ दूति—बिछुड़े सब कोई मिलत हैं जोवन मिले न जाय।
पुत्री जोवन खोय मत फिर पाछे पछिताय ॥
१ दूति—धवल सेठ गुण खान है, है वह चतुर सुजान।
रूपवंत धनवंत है, सकल देश परधान ॥
२ दूति—श्रीपाल इस सेठ का था चाकर दरबान ॥
जो मानो तो सेठ को जाय वरो इन आन ॥

२२०

रैनमंजूषा का कोप करना और दूतियों को निकाल देना।
चाल—(नाटक) ऐसे ऐसे गुन दलाये हमने लाखों देखे भाले ॥

ऐसी तुमसी ऐरी गैरी मैंने लाखों देखी भाली।
दूती बनकर आने वाली-बातों में फुसलाने वाली ॥
नरकों में ले जाने वाली कुल के दाग लगाने वाली। तुम०
मेरे पति के धरम पिता कहलाते हैं कहलाते हैं ॥
क्या ससुरा बनकर मुझसे रमना चाहते हैं वह चाहते हैं।
जाओ जाओ यहां से जाओ। मतना अपना मुंह दिखलाओ
जीभ तुम्हारी यह जल जाओ। जो ऐसी बात निकालो।
देखे तुमरे ढंग मुझे क्या देती हो मुन ॥

मेरा क्षत्री का है कुल-मेरा शील है अटल।
हां जाओ जाओ देखी भाली आई शील डिगाने वाली।तुम०

सीन ३३

जहाज का परदा

२२१

दूतियों का वापिस धवल सेठ के पास आना और हाल सुनाना॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं०॥

१ वह है पूरी सती काबू में लाना सख्त मुशकिल है।
कि जैसे आग को पानी बनाना सख्त मुशकिल है॥
२ यह है ताकत सितारे आसमां के तोड़ लावें हम।
मगर उससे नजर जाकर मिलाना सख्त मुशकिल है।
३ हमारी बात सुनकर सख्त पत्थर मोम हो जावे।
मगर उस गुल को तो बातें सुनाना सख्त मुशकिल है।
४ निकालें बाल की हम खाल चलकर चाल चतुराई।
मगर यह चाल उस जापे चलाना सख्त मुशकिल है।
५ पड़े माथे पे बल और देखकर हमको बिगड़ बैठी।
चढ़े चितवन के बल उसके हटाना सख्त मुशकिल है।

२२२

विदूषक का आना और सेठ जी से बातचीत करना॥

विदू०-कहा था क्या नहीं हमने कि यह तो काम मुशकिल है।

कि ऐसी बेल का मांढे चढ़ाना सख्त मुशकिल है ।

सेठ—अच्छा मैं आप जाता हूँ । दस बीस सहेलियों को

संग ले जाता हूँ । उस गुलबदन को काबू में लाता हूँ ।

विदू०-देख मैं तुझे फिर समझाता हूँ । पहली बात याद

दिलाता हूँ कूवें में गिरने से बचाता हूँ नेकी का

रास्ता दिखाता हूँ ।

सेठ-बस २ हम किसी की बात को ख्याल में न लायेंगे ।

एक बार अपनी किस्मत को जरूर आजमायेंगे ।

विदू०-बेहया लगती है तुझको यह नसीहत उलटी ।

खैर मालूम हुआ, है किस्मत तेरी उलटी ।

सेठ-क्या खबर यह मेरी किस्मत चढ़ी या उलटी ।

अब तो लगती है नसीहत मुझे सबकी उलटी ।

लाऊंगा उसको पढ़ा करके मैं पट्टी उलटी ।

देखना फिर मेरी हो जायगी किस्मत सुलटी ।

विदू०-तेरी किस्मत ने पढ़ी सेठजी पट्टी उलटी ।

देखना होयगी किस्मत तेरी कभी सुलटी ।

उस सती ने जो तुझे कोप से वहां देख लिया ।

उसी दम होयगी किस्मत तेरी उलटी पुलटी ।

सेठ-क्या पड़ी तुमको अगर है मेरी किस्मत उलटी ।

हम नहीं सुनते तेरी बात पर उलटी सुलटी ॥

२२३

विदूषक का जवाब ॥

चाल—(नाटक) आली दरबार है महफिल सरकार है ।

१ देखो कामी को लाज नहीं । काहू से काज नहीं ॥
बोलन की साज नहीं । मूरख गंवार है ।
२ चाहे निज मात हो । बेटी की बात हो ॥
भगनी के साथ हो । करता बिकार है ॥
३ मुद्रा का पान करे । वैश्या का ध्यान करे ।
जूवे की बान धरे । चोरी विचार है ।
४ पर नारी से काम है । झूठा कलाम है ।
सब का गुलाम है । हरदम बेज़ार है ॥

२२४

सेठजी का जवाब (शेर)

१ बस विदूषक रहने दे तू अपने इस उपदेश को ।
चाहते हैं हम नहीं बस ऐसे खैर अन्देश को ।
२ मैं नहीं मानूंगा बस आज यह बातें तेरी ।
ऐसी बातों से बिगड़ती है तबीयत मेरी ॥

२२५

सुमतप्रकाश मंत्री का समझाना ।

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ सताता है जो सतियों को वह जग में ख्वार होता है ।
यहां होता है बेइज्जत वहां बेजार होता है ॥
२ जो कामी पुरुष होता है कभी नहीं चैन पाता है ॥

जो मरता है तो नरक में घरबार होता है ॥

३ बदिल बेज़ार होता है सुनो कामी से हर इनमां ॥

दुखी होता है वह बदनाम सब परिवार होता है ॥

४ वही नर देखता है बद निगाह से पाक सतियों को ॥

जिसे मर करके जाना नर्क दरकार होता है ।

५ शरारत सेठ जी छोड़ो हमारा मान लो कहना ॥

वगरना आज यह सारा तबाह घरबार होता है ॥

२२६

सेट जी का जवाब (शेर)

किसी की हम नहीं मानेंगे क्यों तकरार करते हो ।

नसीहत करके नाहक जी मेरा बेज़ार करते हो ॥

२२७

सुमतप्रकाश मंत्री का फिर समझाना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो नज़र से देखना ॥

१ पाप बुद्धि छोड़ दो साहिब धरम के वास्ते ।

पाप कुछ अच्छा नहीं है एक दम के वास्ते ।

२ पाप रावण ने किया सीता को हरके ले गया ।

आप दुश्मन बन गया सारे कुटुम्ब के वास्ते ।

३ मान ले कहना मेरा मत पाप पे बांधे कमर ।

क्यों डबोता है सभों को दुष्करम के वास्ते ।

४ उस सती का मत कोई हर्गिज़ डिगा सकता नहीं ।

क्यों कमर बांधी है तूने यह सितम के वास्ते ॥

५ पाप करने का समर अच्छा कभी मिलता नहीं ।
मैं तुझे कहता हूँ यह इज्जत शरम के वास्ते ।

२२८

सेठ जी का जवाब (शेर)

१ चाहे जो कुछ हो मगर एक बार वहां जाऊंगा मैं ।
लाख समझाओ मुझे खातिर में नहीं लाऊंगा मैं ॥
२ बस मैं अब जाता हूँ किस्मत आजमाने के लिए ।
उस परी को जाल में अपने फंसाने के लिए ॥

(रवाना होना)

२२९

विदूषक का जवाब देना । (शेर)

अच्छा हम भी जाते हैं कुछ गुल खिलाने के लिए ।
ऐसी बदकारी का फल तुझको दिखाने के लिए ॥

(रवाना होना)

सीन ३४

रैनमंजूषा के महल का परदा

२३०

सेठ जी का रैनमंजूषा के जहाज में पहुँचना और सहेलियों को रैनमंजूषा के पास भेजना । सहेलियों का रैनमंजूषा को बाग की सैर करने के लिए कहना ॥

चाल—(नाटक) चलो हिल मिल दिलवर ॥

चलो मिलकर दिलवर खुशतर हम सब यारियां ।

है वारियां । हम नारियां यह अजब गुलकारियां—
प्यारियां क्यारियां सारियां ।
बनो बांकी छबीली मतवारियाँ ।
हां बनो बांकी छबीली मतवारियां ।
नुकीली अलबेली सहेली दिलदारियां । चलो०
सब कलियां खिलियां बाग में क्या प्यारी ॥
जाई जूई चम्पा चम्बेली । ताल किनरियां गुलकारी है न्यारी ।
गावें बुलबुल बाग में री । आओ आओ महारानी सेठानी ।
हमारी हो प्यारी ॥ चलो०

२३१

रैनमंजूषा का सहेलियों को जवाब देना और उनका चला जाना ॥
चाल—(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ तुम्हें गुलशन की सूझे है यहां बेज़ार बैठी हूँ ।
न छेड़ो तुम मुझे जावो कि मैं बीमार बैठी हूँ ।
२ हंसी का है नहीं मौका नहीं यह छेड़ अच्छी है ।
करो मत दिल्लगी मुझसे कि मैं लाचार बैठी हूं ।
३ अभी मर जाऊंगी दरिया में गिरकर देख लेना तुम ।
पति के रंज में मरने को मैं तैयार बैठी हूं ।
४ अगर मैं आह खैंचूंगी लगेगी आग दरिया में ।
यह सब जल जायगा दरिया जली अंगार बैठी हूं ।

२३२

सेठ जी का खुद रैनमंजूषा के पास पहुँचना और कहना ॥

चाल—(क़वाली) इलाजे दर्द दिल० ॥

१ भुलादे रंजोगम प्यारी न कर इनकार जाने दे ।
मरा उल्टा नहीं आता तू यह इसरार जाने दे ।
२ सुनाऊं हाल मैं श्रीपाल का जिसपे तू मरती है ।
लिया था मोल मैंने वह खिदमतगार जाने दे ।
३ भुलादे रंग की बातें जवानी की हैं यह रातें ।
तू रानी मैं तेरा राजा न कर तक़रार जाने दे ।
४ पती मुझको समझ अपना तेरे बिन कल नहीं मुझको
चलो बस उठ चलो घर को मेरी दिलदार जाने दे ।

२३३

रैनमंजूषा का जवाब ॥

चाल—कहां ले जाऊं दिल० ॥

१ सता मत बेकसों को तू अरे बदकार जाने दे ।
न धर सर पोट पापों की तू बद अतवार जाने दे ।
२ धरम पितु मेरे बालम का हमारा भी पिता कहिए ।
न कर बेटी से यह बातें अरे मक्कार जाने दे ।
३ बुरी परनार दुनिया में सुना है जैन शासन में ।
गया है नर्क में रावण बुरा यह कार जाने दे ।
४ नरक में मार खाओगे महा दुख वहां पे पाओगे ।
न होगा उस जगह तेरा कोई गमख्वार जाने दे ।

५ सताना जी जलाना देख सतियों का नहीं अच्छा ।
कोई हो जायगा उतपाद बस तकरार जाने दे ॥
६ तू पापी निशाचर है पशु सम है कमीना है ।
न कर तकरार तू मुझसे अरे अय्यार जाने दे ।

२३४

रैनमंजूषा व सेठ की बातचीत ॥

सेठ—पानसौ मोहन मेरे सारे भरे हैं लाल से ।
भोगती सुख क्यों नहीं कमबख्त मेरे माल का ॥
रैन०—दोस्ती से ज़रके हो जाता है इनसां स्नियाह ।
देख होता है सियाह दीवारों दर टकसाल का ।
सेठ—अय प्यारी बार बार इंकार न कर मेरे दिल को बेजार
न कर, रजामंदी का जवाब दे तकरार न कर ॥

२३५

रैनमंजूषा व सेठ की बातचीत ॥

चाल—(नाटक) आली दरबार है मदफिन सरकार है ॥

वही एक जवाब है जो सब में नेक जवाब ।
१ नार हूँ पराई हूं—दुख दुख उठाई हूँ ।
कर्म की सताई हूँ—दुख में हूं आपने ।
२ मुसीबत में आई हूँ—राजा की जाई हूँ ।
सतगुण कहलाई हूँ—बचती हूँ पाप से ॥
३ तेरे बेटे की नार हूँ—मैं मैं बेजार हूँ ।
सतियों में सार हूं—डरती हूँ श्राप से ॥

४ शील का शृंगार हूँ शुभ गुण का हार हूँ ।
असि[1] कैसी धार हूँ देखे जो पाप से ॥

२३६

रैनमंजूषा व सेठ की बातचीत करना ॥

सेठ-दुख पाएगी मर जायगी आखिर को पछताना होगा ।
रैन०-एक दिन है सबको मरना इस दुनियां से जाना होगा ।

२३७

सेठ जी का जवाब ॥ चाल (नाटक) मैं प्यारी कुरबान ॥

अय प्यारी कहा मान ।
मतवारी-हे बारी मनहारी कहा मान ॥ टेक ॥
१ होवे-ख्वारी-बेजारी-तोहे भारी हर आन ।
पछतावे-दुख पावे कलपावे-परेशान ॥ अय०
२ छब न्यारी ढब सारी-तू प्यारी-प्यारियां ॥
हित करके चित्त करके-बोलना हंसियां ॥ अय ॥

२३८

रैनमंजूषा का जवाब ॥ चाल—(नाटक)

तू है बदकार रे तोहे नहीं लाज तोहे नहीं शरम रे ॥टेक॥
१ पुत्र वधू मैं लगूं हूँ तुम्हारी ।
तू मोहे समझे है नार ॥ रे तोहे०

१—तलवार

२ पाप बोल मत बोल रे पापी ।

फट जागी धरती पहार । रे तोहे० ।

३ रावण सिया लखी खोटी नजर से ।

हो गई लंक उजार । तोहे० ।

४ सारे कर्मों में पाप बुरा है ।

पापों में बुरी पर नार । रे तोहे० ॥

५ अनुज वधू भगनी सुत नारी ।

कन्या बराबर चार । रे तोहे० ॥

२३६

सेठ जी और रैनमंजूषा के सवाल व जवाब ॥ (गौर)

सेठ—समझ देखले प्यारी मन में तू अपने ।

मेरे हाथ से अब रिहाई न होगी ॥

रैन०-जो देगा अजीयत तो पाएगा जिल्लत ।

बुराई में हरगिज भलाई न होगी ॥

सेठ—यह तो बतला फायदा क्या ऐसी नादानी में है ।

रैन—पेश आती है वही जो कुछ कि पेशानी में है ।

सेठ—अभी क्यों हाथ से अपने न नाहक जान खोती है ।

रैन०—तो क्या चारा है मैं मजबूर हूं नाचार रोती हूं ।

सेठ—अय प्यारी जब मुसीबत जान पर तेरे बन आएगी ।

बता तो किस तरह न जानें फिर अस्मत बचाएगी ।

२४०

रैनमंजूषा का जवाब

चाल—कोई चातुर सखी ऐसी ना मिली ॥

१ अरे पापी तू मुझको डराता है क्या ।
मुझे मरने का कोई खतर ही नहीं ॥
कर ना खोटी नजर इस बदी से गुजर ।
बदी करने का अच्छा समर ही नहीं ॥
२ तेरे घर में सिठानी महा गुणवती ।
हाय उसपे भी तुझको सबर ही नहीं ॥
खुतनार पे तूने जो पाप धरा ।
क्या वह घोर नरक का खतर ही नहीं ॥
३ मैं सती हूं देख हाथ लाना नहीं ।
ऐसी धमकी सती को दिखाना नहीं ॥
इस दरिया में आग न लगजा कहीं ।
मेरे शील पे करना नजर ही नहीं ।
४ देख रावण ने सीता पे जुल्म किया ।
क्या नतीजा हुआ सोच मनमें जरा ॥
राज पाट गया बदनाम हुआ ।
मर नर्क गया क्या खबर हीं नहीं ॥
५ आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिलके सभी ।
क्या मजाल जो शील को मेरे हतें ॥
तेरी हस्ती है क्या श्रीपाल सिवा ।
मेरी नजरों में कोई बशर ही नहीं

६ चाहे यह भेद साम और दाम दिखा ।
चाहे एक अनेक तू बात बना ॥
७ मेरे मन का सुमेरु हिलेगा नहीं ।
मेरे मन में किसी का भी डर ही नहीं ॥

२४१

सेठ जी और रैनमंजूषा का गुस्से में सवाल व जवाब करना ॥ ([illegible])

सेठ—अय कमबख्त हट न कर इंकार छोड़ ।
रैन०—अय बदबख्त ज़िद न कर तकरार छोड़ ॥
सेठ—मान ले ।
रैन०—जान ले ।
सेठ—आस न तोड़ ।
रैन०—बदकारी छोड़ ॥
सेठ—मैं तुझे अभी मना लूंगा पकड़ कर ।
रैन०—मैं अभी मर जाऊंगी दरिया में पड़कर ॥
सेठ—(हाथ बढ़ाकर और रैनमंजूषा के पकड़ने का इरादा करके) देखूं तू
कहां तक अपना शील बचाएगी ।

२४२

रैनमंजूषा का [illegible]
[illegible]

हाए मैं अनाथ नाथ किससे जा कहूं ।
पापी है भारी यह निपट अनार्य [illegible]
बचे नहीं जो मेरा शील मैं [illegible]

२४३

नोट—रैनमंजूषा की पुकार सुनकर चक्रेश्वरी, पद्मावती, काली ज्वाला, अम्बा मालनी, पहुमतो, सात देवियों का आना और अंधकार करना सरूत हवा चलना दरिया में तूफान करना और तमाम जहाजों का डिगमगाना देवताओं का दौड़कर आना और एक देवता का आग जला कर सेठ के मुंह में देना और काला मुंह करना सब महाजनों का घबराना और सेठ को देखना। मानभद्र का आना और गदा से सेठ को मारना। सेठ का जमीन पर गिर जाना।

२४४

मानभद्र का सेठ की छाती पर पांव धरकर धमकाना (चाल नाटक)

१ ओ बेगैरत पापी सूरत कामी मूरत जा गिर गिर जा।
अपने मुंहपे खाक को मलकर नरक में चलकर जलजल मरजा
२ आन सताया तूने सती को हाथ बढ़ाया वह हाथ भी जलजा
पापकी बात कही जिसमूंहसे मूंहभी वह जलजा जीभभी जलजा
ओ नाकाम-ओ बदानाम-ओ बदशऊर-बद अंजाम ॥

२४५

देवियों का सेठको लानत देना और बारी बारी सेठ के सिर में जूती मारना (शेर)

चक्र०-अरे कम्बख्त बेगैरत तेरी औकात पर लानत (जूती मारना)
अम्बा-तेरी औकात पर लानत तेरी इस बात पर लानत।
पदमा०-कमीने बेहया कमअक्ल तेरी जात पर लानत ॥
काली-तेरे अफ़ाल पर लानत तेरी आदात पर लानत।
ज्वाला-तेरे ज़र माल पर लानत तेरे इस कार पर लानत ॥

मालनी-तेरे व्यापार पर लानत है साहूकार पर लानत ।
पहुमती-तेरे परधान पर लानत तेरे दरबार पर लानत ।
मानभद्र-तेरे मां बाप पर लानत तेरे घरबार पर लानत ।

२४६

सेठजी का अफसोस करना ॥ (चाल गजल)

१ गया पाप से सारा ही काम बिगड़ ।
  ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
  सही जूतो की मार जमीं की रगड़ ।
  ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
२ बुरा दुनियां में बिगड़ा है मेरा जनम ।
  ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
  ना धरम ही मिला ना विसाले सनम ।
  ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥

२४७

विदूषक का आना और गाना ॥ [illegible]

१ अच्छा खूब हुआ तेरी थी यह [illegible] ।
  जो इधर का रहा न उधर का रहा ॥
  जब न माना कहा अब पुकारे है क्यों ।
  हां, इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
२ हुई कैसी गति देखलो तुम [illegible] ।
  ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥

कोई भूल से करना न ऐसा कभी ।
यह इधर का रहा न उधर का रहा ॥

२४८

सब महाजनों का रैनमजूषा के पावों में गिरना और अर्दास करना ॥

चाल—(गजल) बजारा नामा ॥

१ अय रैनमंजूषा महासती, अब एक हमारी अर्ज सुनो।
है शरण तुम्हारी ली हमने टुक कोप तजो मन शांत करो
२ तू जिनशासन व्रतलीन सही तूने ही शील का भार धरो।
पापी न लखो महिमा तेरी जैसे था किया वैसा ही भरो।
३ या पापी के संग डूबे घर और वार हमारे जाते हैं।
सब बन्धु भाई देख सती बिन कारण मारे जाते हैं।
४ अब करुणा धारो रोस निवारो, सब मिल अर्ज सुनाते हैं।
डूबत नइया को पार लगादो, चर्णन सीस निवाते हैं।
५ तू दयावती है महासती यश जैन धर्म का विस्तारा ।
अब निश्चय हो गया जैन धर्म है दुखहारा सुखकर्तारा।
६ अब कर कृपया धर कर करुणा, हमारा भी कीजे निस्तारा
तेरा गुण गावें हाथ जोड़ अर्दास करें बारम बारा ।

२४९

रैनमंजूषा का दया करना और देवताओं से उपसर्ग दूर करने के लिए और सेठ जी को छोड़ने के लिए प्रार्थना करना॥

चाल—(कवाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ सुनो अय देवगण तुमने करी मेरी सहाई है ॥

तुम्हें धन्य है सती की आनकर असमत बचाई है ॥

२ रखा संजम धरम मेरा बढ़ाई शील की महिमा ।
सती की लाज रख निज धर्म की अतिशय दिखाई है ।

३ कही थी पाप की बातें मुझे पापी ने कुछ जैसी ।
सो तुमने आनकर वैसी गती इसकी बनाई है ।

४ क्षमा अब कीजिए मन में निवारो कष्ट को जल्दी ॥
विचारे दीन-दुखियों पर दया अब मुझको आई है ।

५ इसे भी छोड़दो अब तो धरम का बाप है मेरा ।
सजा इसने बहुत अपने किए की अब तो पाई है ॥

२५०

अब देवी देवताओं का उपसर्ग दूर करना और रैनमंजूषा को तसल्ली देकर चला जाना ॥

चाल नाटक (भैरवी) दिन रजियां न रैंदी सैंयां होंदी रैना ॥

सत सखियों का—देखो सखियां—खोलो अखियां ।
जिनमत रखियां-हो रही खुशियां हां ।
दूर लागें सारी पइयां-तोरी लेवेंरी बलइयां ॥ सत०
रैनमंजूषा सुन तू प्यारी-पति मिले तेरा बलधारी ।
राज करेगी तू सुखकारी-सुख में बीते रैन सारी ।
गर अब आ-कोई विपता हम सब आ देवेंगे मिटा ।
हां हां हां हां हां हां हां हां सत० ॥

२६६

सब महाजनों का किसमत और शील निश्चय करना और मिलकर गाना ॥

चाल नाटक—किस्मत सब पर लाती आफत ॥

जैसी करनी वैसी भरनी निश्चय नहीं तो कर कर देख ॥
सुरगत भी है दुरगत भी है, सुख दुख भी है मरकर देख।
एक दिन टूटे आप ही फूटे जाम गुनाह का भरकर देख।
है तू बशर परमेश्वर होजा, दूर हिए से शर कर देख।
सतियों को बद निगाह है देखना बुरा ॥
माता बहिन सुता। सम जानियो सदा ॥
जिसने खुदी करी। मन में बदी धरी ॥
आखिर विपत भरी। आफत में जा पड़ी ॥ कर कर देख०

(ड्राप सीन)

——:०:——

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी
नाटक का चौथा ऐक्ट समाप्तम् शुभम् ॥

❀ सती ❀

卐 मैनासुन्दरी नाटक 卐

-:o:-

पांचवां ऐक्ट

—:oooo:—
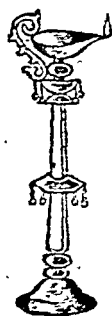
रैनमंजूषा और धवल सेठ का कुमकुमद्वीप में पहुँचना और वहां के राजा और श्रीपाल से मिलना सेठ का भांडों से श्रीपाल को बदनाम करवाना और शूली का हुक्म दिलवाना, गुणमाला का रैनमंजूषा से श्रीपाल का असली हाल पूछना और अपने पिता को बताना, राजा का श्रीपाल से क्षमा मांगना, धवल सेठ का मरना, श्रीपाल का मैनासुन्दरी को याद करना और उज्जैन को रवाना होना ।

श्री जिनेन्द्रायनमः

सीन ३५

कुमकुमद्वीप के दरबार का परदा

२५२

नोट—धवल सेठ और रैनमंजूषा के सब जहाजों का रवाना होकर कुमकुमद्वीप में पहुंचना और धवल सेठ का भेंट लेकर कुमकुमद्वीप के राजा से मिलने को दरबार में आना ॥

सेठ—महाराज को जुहार ॥

राजा—आइये सेठ जी बिराजिए (सेठ का भेंट देकर आसन पर बैठना) सेठ जी कहां से आए और इस देश में क्योंकर आना हुआ ।

सेठ-महाराज हम वाणिज्य हैं अनेक द्वीप समूहों में बणज करने को फिरते हैं । हंसद्वीप से आपका नाम सुनकर आए हैं । आपके दर्शन करके परम आनन्द मिला ॥

राजा—सेठजी हम भी आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए कोई कार्य हो तो कहिए ॥

श्रीपाल----(राजा के अभिप्राय को पाकर) सेठजी लीजिए पान लीजिए ॥

सेठ—(श्रीपाल को गौर से देखकर पहचानना और विदा मांगना) महाराज की कृपा से सब प्रकार से आनन्द है अब जाने की आज्ञा दीजिए ॥

राजा—अच्छा सेठजी आज्ञा है।

[सेठ का चला जाना]

सीन ३६

जहाजों का परदा

२५३

धवल सेठ का अपने जहाजों में आना और मंत्रियों से बात चीत करना

चाल—इन्दर सभा—मारे आलईया इस तरफ नजर का

१ सुनो मंत्री ध्यान करके जरा।
यकायक यह क्या माजरा हो गया ॥

२ मेरी अक्ल हैरान है इस जगह।
विचारा था क्या और क्या हो गया ॥

३ श्रीपाल डाला समन्दर के बीच।
न मालूम कैसे रिहा हो गया ॥

४ रसाई हुई कैसे दरबार में।
किया क्या जो राजा फिदा हो गया ॥

५ कोई हाल जल्दी बताए मुझे।
मेरा तीर कैसे खता हो गया।

२५४

एक मंत्री का हाल बताना ॥ चाल नम्बर २५३

१ करूं सेठजी हाल इसका बयां ।
यह आया समुद्र को तिरके यहां ॥
२ दी गुणमाला राजा ने लड़की इसे ।
बना रक्खा है घर जमाई इसे ॥
३ श्रीपाल सेठजी याका नाम ।
महा पुन्यवान और बड़ा नेकनाम ॥

२५५

सेठजी—(वार्तालाप) अय मंत्रियो यह श्रीपाल बड़ा पुन्यवान और बलवान पुरुष है मैंने इसको समुद्र में डाला और इसकी रानी को सताया अब इसके हाथ से बचना कठिन है मेरा चित्त बेचैन है जल्दी कोई उपाय करो जो इसके हाथों से जान बचे ।

२५६

सुमतप्रकाश मंत्री की राय ।

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं ॥

१ तुम्हें श्रीपाल के अब पास जाना ही मुनासिब है ।
उसी के पाओं में सरको झुकाना ही मुनासिब है ॥
२ वह है गम्भीर गुणसागर क्षमा सागर दया धारी ।
क्षमा श्रीपाल पे जाकर कराना ही मुनासिब है ॥
३ यकीं यह सेठजी करलो करेगा मान वह तेरा ।
तुम्हें संदेह को दिल से हटाना ही मुनासिब है ॥

२५७

कुमतप्रकाश मन्त्री की राय ॥ चाल नम्बर २४६

१ हमारी राय में श्रीपाल पे जाना नहीं अच्छा ।
किसी दुश्मन के धोके जाल में आना नहीं अच्छा ॥
२ सुमतप्रकाश नादां है भला यह मंत्र क्या जाने ।
कभी चरणों में वैरी के शरण जाना नहीं अच्छा ॥
३ जो अपराधी हो तुम उसके तो वह बख्शेगा क्यों तुमको ।
ख्याल ऐसा कभी दिल में जरा लाना नहीं अच्छा ॥
४ करो तदवीर कुछ ऐसी वह मारा जाय जल्दी से ।
निशां दुश्मन का बाकी कोई रह जाना नहीं अच्छा ॥
५ यह हो सकता है भांडों से उन्हें जल्दी बुला लीजे ।
यह है तदवीर लासानी शुबा लाना नहीं अच्छा ॥

२५८

सेठ का जवाब ॥ (वार्तालाप)

अय कुमतप्रकाश आपकी राय बहुत ठीक है हम आपसे बहुत प्रसन्न हैं, लो यह दस हजार रुपया इनाम देते हैं । अय महाजनों तुम चुप क्यों हो तुम भी अपनी राय जाहिर करो ।

२५९

महाजनों की राय ॥ चाल — [illegible]

सेठ हमारा कहना अब लीजे मान ॥टेक॥
१ मत मन में बदी विचारो । कुछ सुमति हिये में धारो ।
सबों का हो कल्याण ॥सेठ०॥

२ वह श्रीपाल सुखकारी। है समझो धरम अवतारी ॥
दया सागर गुणखान ॥ सेठ०
३ खता साफ करवाओ। नहीं मन में शंका लाओ।
रखेगा तुमरा मान ॥ सेठ०
४ नहीं सुना जो बात हमारी। पड़ जायगी विपता भारी ॥
तुम्हारी होगी हानि ॥ सेठ०

२६०

कुमतप्रकाश और सेठ जी की बातचीत

सेठ—अय कुमतप्रकाश इन महाजनों ने जो कुछ कहा है इसमें क्या राय है।

कुमत०—हे सेठ जी आपसे बढ़कर हमारी बुद्धि नहीं आप ही अपने मन में विचार करलें।

सेट-अरे जो सेठजी आपही मंत्र करेंगे तो मंत्रियों को कौन पूछेगा तुम अपनी साफ २ राय दो कोई शंका मत करो

कुमत०-(दोहा) १ सुनो सेठजी कान दे बात कहूँ एक सार।
तुम उन सागर डारियो और सताई नार ॥
२ वह तेरा वैरी भया, देखो सोच विचार ॥
बदला तुमसे लेयगा, टरे नहीं जिनहार ॥
३ ताते वैरी मारना, जब लग पार बसाय।
साम, दाम और दंड दे करके भेद अपार ॥

सेठ-(वार्तालाप) बस अब हम और किसी की बात नहीं सुनेंगे कुमतप्रकाश ने ज़ो कुछ भी कहा है वह ही तदबीर

करेंगे । कुमतप्रकाश जाओ भांडों को जल्दी बुला लाओ ।

कुमत०—बहुत अच्छा सेठजी अभी बुलाकर लाता हूं ।

(चला जाना)

२६१

कुमत प्रकाश का भांडों के सरदार को बुलाकर लाना और बातचीत करना ॥

कुमत०—सेठजी यह भांडों का सरदार हाजिर है ।

सेठ-अय भांडों के सरदार देखो श्रीपाल जो राजा के सरदार में है तुम उसको अपना बेटा होना जाहिर कर लो तुमको (टके देकर) दो लाख टके दे देते हैं अगर तुमने यह काम पूरा किया तो हम और भी इनाम देंगे ॥

सरदार—बहुत अच्छा सेठजी हम अभी जाते हैं अपना कमाल दिखाते हैं और आपका काम बनाते हैं ॥

(चला जाना)

सीन ३७

राजा के दरबार का पर्दा

२६२

भांडों का राजा के दरबार में [illegible]

आहाहा आहाहा आहाहा !!!

१ आली दरबार है—सबकी सरकार है ॥
फूला गुलजार है—हरदम बहार है ॥
२ राजा दिलशाद हो—साहिब औलाद हो ।
दुश्मन बरबाद हो घर घर पुकार है ॥
३ लालों के लाल हैं—साहिब जमाल हैं ।
रखते कमाल हैं—दुनियां निसार है ॥
४ भांडों का रंग देखो—सारे हैं दंग देखो ।
गाने का ढंग देखो महफिल तैयार है ॥

२६३

एक भांड—(वार्तालाप) अबे भांडों तुमने क्या तार पार लगाई है कोई ठुमरी ठप्पा भैरवी टैरवी गावो महाराज का दिल खुश करो ॥

२६४

भांडों का नाचना और गाना ॥

चाल—इस झाड़ी के बेर मत तोड़ो सनम काँटा लग जाना ॥

परनारी का ध्यान मत लावे धरम सारा नशजागा ॥ टेक

१ पर धन कंचन महलन पर ॥
जिया को मत ललचावे पाप में फंसजागा । परनारी०
२ झूठ कपट चोरी और हिंसा ॥
जुवा खेलन मत जावे नरक में बसजागा ॥ परनारी०
३ सुलफा गांजा भाँग और मदरा ॥
जरदा अफीम मत खावे ज्ञान तेरा नशजागा ॥ परनारी०

४ वेश्या काला नाग समझियो ॥

प्यारे उधर मत जावे जिया तेरा डस जागा ॥ पर०

५ न्यामत बीबी फूल धरम का ॥

पाप बबूल मत बोवे किसी दिन फंस जागा ॥ पर०

राजा (वार्तालाप) वाह वाह कंवर श्रीपालजी इनको हमारी तरफ से इनाम दो ।

२६५

श्रीपाल—(इनाम देकर) यह लो राजा साहिब इनाम देते हैं

२६६

भांडों का श्रीपाल को देख कर अपना बेटा जाहिर करना ॥ (वार्तालाप)

१ बूढ़ी स्त्री-(गले में हाथ डालकर) अरे मेरा बेटा तैं कहां !

२ स्त्री-(सिरपर हाथ रखकर) अरे मेरा लाल तैं कहां गया था !

१ लड़की- (हाथ पकड़ कर) रे मेरा बीरन !

१ भांड-(छाती से लगाकर) रे भाई श्रीपाल !

२ भांड-(सिरपर हाथ रख कर) रे बेटा श्रीपाल तू समुद्र में कैसे निकला ।

२ लड़की- (लिपट कर) रे मेरी मां का जाया ।

३ स्त्री-(कमर पर हाथ लगाकर) रे मेरी कोंखों का जाया ।

४ स्त्री-(छाती से लगाकर) रे मेरे अंधेरे घर का चांदना ।

२६७

चाल—(नाटक) मन हर लीनों सांवरिया कि जबसे दर्शन दीनो ॥
सब भांडों का श्रीपाल को पकड़ कर खुश होना और गाना ॥

तन मन वारें सांवरिया कि तूने दर्शन दीना ।
सागरया से कैसे निकस आयो प्यारे ॥तन०॥ टेक
१ प्यारा प्यारा प्यारा है प्यारा है यह दिन ॥
भटक भटक मिले तेरे दर्शन ॥सागरया०
२ शुभ घड़ी शुभ दिन शुभ यह मिलन ॥
धन कंचन करें तोपे अर्पण ॥ सागरया०
३ थई थई थई थई नाचें हो मगन ॥
हरष हरष गाएं राजा के गुण ॥ सागरया०

२६८

राजा के यह हाल देखकर हैरान होना और भाँडों से कहना ॥

अरे गुस्ताख भांडों यह क्या माजरा है हम से साफ साफ बयान करो ॥

२६९

एक स्त्री का श्रीपाल के भांड बगोशा करना (इसकी टेक सब भाँड गावें)
चाल—सुनो तुम भंग के लच्छन सुनो तुम भंग के लच्छन ॥

सुनो इस पूत के लच्छन सुनो इस पूत के लच्छन ॥ टेक
(दोहा)-१ मेरे दो लड़के भये दोनों पूत कपूत ॥
गोबरधन श्रीपाल सो, बारा मुट्ठी ऊत ॥ सुनो०
२ एक दिन आपस में लड़े दोनों ऐसे नीच ।
श्रीपाल गुस्सा किया, पड़ा समन्दर बीच ॥ सुनो०

३ गोवरधन भी मर गया, मरा हमारा कंत ।
मैं दुखियारी रह गई काह कहुं विरतंत ॥ सुनो०

४ धन अवसर धन यह घड़ी, धन तेरा दरबार ।
सूरत वेटे की लखी वारूं सब घर वार ॥ सुनो०

५ ना धन दौलत चाहिए, ना चाहिये भंडार ।
वेटा हम को दीजिए, पाए लाख हजार । सुनो०

२७०

राजा का माजरा देखकर हैरान होना और श्रीपाल से पूछना ॥ (तर्ज)

१ क्यों रे श्रीपाल कहो क्या यह बात है ।
हैरां है अक्ल मेरी तअज्जुब की बात है ॥

२ तूने तो अपने आपको राजा बताया था ।
क्या झूटा था वह सारा जो तूने सुनाया था ॥

३ अब ठीक हाल कुल का तुम अपने बयां करो ।
क्या माजरा है साफ मेरे से अयां करो ।

२७१

नोट—यह हाल देखकर श्रीपाल मन में विचार करने लगा कि देखो कर्मों की कैसी विचित्र गति है कर्म बड़े बलवान हैं [illegible] जैसे कर्म नचावे वैसे नाचना पड़ता है [illegible] अब भी यदि मैं अपना [illegible] [illegible] परन्तु ऐसा तो नहीं [illegible] करूं राजा को जवाब देना ॥

[illegible]—यह [illegible]

१ सुनो तुम गौर से राजा [illegible] न्यारा है ।
नहीं होता है वह हर्गिज [illegible] मन में विचारा है ॥

२ जमाने में कहीं साया किसी जा पर उजारा है।
कहीं रोना, खुशी का फिर कहीं बजता नकारा है।
३ धरे रहते हैं कुल दलबल कि जब तकदीर फिरती है।
अटल है कर्म की रेखा यही निश्चय हमारा है॥
४ यह चाचा ताऊ हैं मेरे यह माता बन्धु भाई हैं।
समझ लीजे यकीं कीजे यह सब कुनबा हमारा है॥
५ ब्राह्मण हूँ न क्षत्री हूँ न साहूकार राजा हूं।
जनम भांडों में अय राजा समझ लीजे हमारा है।

२७२

राजा का कोप करना और श्रीपाल को शूली का हुक्म देना। (वार्तालाप)

अरे कम्बख्त पापी श्रीपाल तूने धोका देकर मेरी राजकन्या को ब्याहा मेरी इज्जत को खाक में मिलाया मुनासिब है कि तुमको शूली की सजा दी जाय, हरगिज तेरी मुआफी न कि जाए। फोरन जल्लादों को हाजिर किया जाय।

२७३

जल्लादों का आना और मन्त्री का राय पेश करना (शैर)

न जल्दी कीजिये राजा सबर करना मुनासिब है।
बड़ी है बात गौर इस हाल पर करना मुनासिब है।

२७४

राजा—(वार्तालाप) अय मंत्री जब श्रीपाल खुद इकरारी है तो फिर इसमें विचार करने की क्या जरूरत है। अय जल्लादो इस पापी श्रीपाल को फौरन गिरफ्तार करो, शूली पर धरो तन से सर जुदा करो।

(गिरफ्तार करके लाना)

सीन ३८

रास्ते का परदा

२७५

श्रीपाल का रास्ते में अफसोस करना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

१ अब तो यारो शूली चढ़ने के लिए जाते हैं हम ॥
देखिये कर्मों का फल इस वक्त क्या पाते हैं हम ॥
२ जान का दुश्मन मेरा सारा जमाना हो गया ।
ढंग यही पाते हैं हम हां जिस जगह जाते हैं हम ।
३ रंग किस्मत ने मेरी क्या २ दिखाए देखिए ।
भेद यह क्या है नहीं कोई खबर पाते हैं हम ॥
४ होश है जब से संभाला सुख कभी पाया नहीं ॥
रंजोगम क्या २ उठाते देखलो आते हैं हम ॥
५ गम पिता मां की जुदाई कुछ की बिपता नहीं ।
वह ज़माना याद करके दिल को तड़पाते हैं हम ॥
६ आया जब जंगल में मैं पिता मां को छोड़कर ॥
देखा तो एक सेठ [illegible] को लिए जाते हैं हम ॥
७ जंग चोरों से हुआ और फिर समुंदर में गिरा ।
आज नाटक देखिये फांसी लिए जाते हैं हम ॥

८ चलिए अब के और किस्मत आजमाई कीजिए।
रंजोगम मरने का कुछ दिल में नहीं लाते हैं हम।

(रवाना होना)

सीन ३९

गुणमाला के महल का परदा

२७६

बांदी का गुणमाला के पास जाना और हाल सुनाना ॥
चाल—सखी सावन की बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ तज अब शृंगार को रानी जरा सुन हौसला करके।
तेरा भरतार मरता है खबर ले उसकी जा करके ॥
२ नजर दरबार में श्रीपाल पर भांडों ने जब डाली।
कहा बेटा लगे रोने गले अपने लगा करके।
३ हुए सुन करके खफा राजा दिया झट हुक्म शूली का।
गए जल्लाद ले श्रीपाल को कैदी बना करके ॥

२७७

गुणमाला का जवाब ॥ चाल—नम्बर-२७५

१ अरी बांदी सुनाई क्या खबर तूने आ करके।
मुझे बे मौत मारा तूने यह बातें सुना करके ॥
२ मेरा बालम है कोटीभट मुकट धारी महाराजा।

हो कैसे भांड का बेटा तू क्या बकती है आ करके ।
३ नहीं ताकत किसी की है उसे शूली चढ़ाने की ।
यकीं आता नहीं मुझको दिखा मौके पे जा करके ॥
५ मैं खुद चलती हूँ झूठी बात गर तेरी मैं पाऊंगी ।
तुझे मरवा दूंगी बांदी बदन में भुस भरा करके ॥

सीन ४०

शूली का परदा

२७८

जल्लादों का श्रीपाल को शूली के पास ले आकर खड़ा करना
श्रीपाल का कर्मों की निन्दा करना और अफसोस करना ॥
चाल—(नाटक) हाय मुझे दर्दे जिगर ने सताया ॥

हाय मुझे कर्मों ने कैसा सताया ।
कोई प्यारा नहीं कोई चारा नहीं-न सहारा किसी ने दिखाया ।
किया मुझको अकेला बाप को सर से हटा करके ।
निकाला घर से मुझको कुटम्ब को गम में सता करके ॥
कहां माता, कहां गुणमाला, मैना, [illegible] ।
खबर आया नहीं क्या मुझको दरिया में गिरा करके ॥
राजा जल्लाद, [illegible]
[illegible] बेदार मिला ॥

न कोई आदिलो मुनसिफ न यगाना देखा।
ग़ौर कर देखा तो मतलब का जमाना देखा।
हाय कर्मों ने रहम न खाया ॥ कोई प्यारा०

२७६

गुणमाला का बांदी के साथ शूली के पास पहुँचना और श्रीपाल से हाल पूछना ॥

चाल—(सोरठवा) प्यारी बोली रे मरने है बलम रे ॥

गुणमाला अरजी करती जी सुन लीजे भरतार ॥टेक॥

१ तुम कोटीभट बलधारी—यह कैसी बात विचारी।
किम निन्दा हुई तुम्हारी जी—राजा के दरबार ॥

२ तुम किसके सुत कहलावो—मेरा यह संदेह मिटाओ ॥
मोहे सांची बात बताओ जी टुक दया सुमन में धार

२८०

श्रीपाल का जवाब ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ बताएं क्या तुम्हें प्यारी पता अपना निशां अपना।
बस अब तो है नहीं कोई निशां अपना मकां अपना।

२ न भाई बंधु है कोई न कोई आशना अपना।
बिगाने देश में प्यारी कौन है महरबां अपना ॥

३ जमीं वैरन मुख़ालिफ़ लोग दुश्मन आसमां अपना ॥
ठिकाना अब कहो तुम ही बताएं तो कहां अपना ॥

४ सदा यूं ही बगुले की तरह फिरते हैं हम मारे।
नहीं मालूम क्यों वैरी हुआ सारा जहां अपना ॥

५ यह सारे भांड हैं मेरे पिता माता बहन भाई ।
समझले प्यारी भांडों का है खानदां अपना ॥

६ समझते थे कि देखेंगे यहां आराम दुनियां का ।
मगर अब हो गया मालूम था झूठा गुमां अपना ।

२८१

गुणमाला का जवाब ॥ चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो नज़र से देखना ॥

१ कौन कहता है तुझे तू भाँड बदकारों में है ।
तू तो सरदारों में है बलके मुकुटधारों में है ।

२ भांड का कोई निशां तुझ में नजर आता नहीं ।
तू कोई राजा महाराजा शहस्वारों में है ॥

३ किस तरह मानूं तुम्हारी बात मन लगती नहीं ।
तेज शाही है तुम्हारा कब सियाहकारों में है ॥

४ तू महागुणवन्त कोटीभट तुम्हारा नाम है ।
कौन कह देगा कि तू बदकार मक्कारों में है ॥

५ खूबसूरत राज वंशी तेरे चेहरे से अयां ।
कौन गुण तुझ में नहीं जो शाह सरदारों में है ॥

६ भांड का लड़का भला कैसे [illegible] ।
तू कलाधारी [illegible] धर्म [illegible] में है ।

७ सांच बतलादो अगरचे आप [illegible] ।
मैं मरी हूं मन मेरे रग रग के हर तारों में है ।

२८२

श्रीपाल का जबाव ॥

चाल—पहलू में मेरे यार है इसकी खबर नहीं ॥

१ गुणमाला प्यारी रंज को मन से निवार दे ।
टुक थाम दिल को अपने तू सब्रो करार दे ॥
२ गर हाल मेरा सुनने का तेरा विचार है ।
तो सुनले अपनी जान क्यों करती निसार है ।
३ आए हैं कुछ जहाज समन्द्र में दूर के ।
ठहरे हुए हैं कल से वतन में हजूर के ॥
४ शहजादी इक है रैनमंजूषा जहाज में ।
तू उससे जाके पूछ छुपा क्या है राज में ॥
५ वह हाल साफ साफ बता देगी सर बसर ।
एक दम में शुबा दिल का मिटा देगी सर बसर ।

२८३

गुणमाला का चंडाल को क़त्ल न करने का हुक्म सुनाना और बांदी को साथ लेकर रैनमंजूषा से मिलने को रवाना होना ॥

चाल—इन्दर सभा—अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

१ जरा सुन तू कातिल इधर देके कान ।
मैं जाती हूँ दरिया पे लेने बयान ॥
२ न दूं हुक्म जब तक कोई आन के ।
नहीं कत्ल तू करना हरगिज इसे ॥

(चला आना)

सीन ४१

रैनमंजूषा के जहाज का परदा

२८४

गुणमाला का रैनमंजूषा को पुकारना ॥ (वार्तालाप)

अरी श्रीमती रैनमंजूषा-अरी सती रैनमंजूषा-हे प्यारी रैनमंजूषा-कहीं हो तो बोल अरी बहन रैनमंजूषा जो कहीं सुनती हो तो बोल ।

२८५

रैनमंजूषा का पता न लगने पर गुणमाला का अफसोस करना ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ कहां जाऊं किधर ढूंढूं न सूरत देख पड़ती है ।
समझले दिल में गुणमाला तेरी किस्मत बिगड़ती है ।
२ जवाब आया नहीं अब तक सदा दे दे के मैं हारी ।
नहीं जमती है जब बुन्याद किस्मत की उखड़ती है ॥
३ हुई गर देर तो गाफिल करेगा कहर सागर में ।
करूं क्या अकल मेरी कुछ नहीं यां काम करती है ।
४ कहीं गर हो तो बोलो तो बहन तुम रैनमंजूषा ।
खड़ी गुणमाला तेरी याद में भी आह भरती है ।

२८६

गुणमाला की आवाज सुनकर रैनमंजूषा का जहाज पर खड़ी
देखना और पूछना (शेर)

१ बहन तू कौन है और किस लिये हैरां परीशां है।
मुसीबत क्यों पड़ी तुझ पर जो यूं फरियाद करती है।
२ मैं खुद बेचैन हूँ दुखिया हूँ कर्मों को सताई हूँ ॥
मैं जो कुछ हूं सो हाजिर हूँ मुझे क्यों याद करती है।

२८७

गुणमाला (शेर)

बताओ खानदां श्रीपाल का मतलब अदा करके ॥
मेरा दुःख दर्द है यह मिटा दीजे दयां करके ॥

२८८

रैनमजूषा (शेर)

१ सती तू कौन है क्या दुख तुझे पहले बता मुझको।
तू क्यों पूछे है मुझसे हाल पहले यह सुना मुझको।
२ तू क्यों श्रीपाल को जाने जरा यह तो जिता मुझको।
असल जो बात है कह दे न दे धोका जरा मुझको।

२८९

गुणमाला का हाल बताना ॥
चाल—(नाटक हरिश्चन्द्र) दिये दुख यह फलक ने मारे॥
चले छोड़के राज विचारे॥

अरी मैं अबला दुखियारी-क्या पूछेगी बात हमारी ॥टेक
१ सुन पिता मेरा भूपाल-है नाम मेरा गुणमाला जी।

मन लाला की राजदुलारी ॥क्या०

२ श्रीपाल एक सुन्दर काया-वह सागर तिरकर आया जी।
भयो नगर में अचरज भारी ॥ क्या०

३ सो वो ही पिता मन भायो-ममता संग व्याह रचायो जी।
भई वह ही जो मुनी उचारी ॥क्या०

४ भोगे सुख दिन दो चारे—अब फिर गये भाग हमारे जी।
नहीं मुख से जाए उचारी ॥०

५ एक भांड अखाड़ा आया—श्रीपाल को पुत्र बताया जी
कहा है संतान हमारी ॥ क्या०

६ सुन राजा कोप उपायो-झट कत्ल का हुक्म सुनायो जी।
हुई शूली की तइयारी ॥ क्या०

७ अब सांच बात कह दीजे-मोहे भीक नाथ की दीजे जी।
मैं आई हूँ शरण तिहारी ॥ क्या०

२६०

रैनमंजूषा का जवाब देना और शूली का [illegible]

चाल—[illegible]

१ जात क्या श्रीपाल की है तुमको जितला दूँगी मैं।
चल पिता के सामने सब हाल बतला दूँगी मैं ॥

२ [illegible] क्या २ दिखाई हैं [illegible] के [illegible] मैं।
खैंच कर नकशा सभी [illegible] दिखला दूँगी मैं ॥

३ करने सुनने से [illegible] नहीं।
[illegible] ॥

४ झूंठ सच जो कुछ कि है मालूम वहां हो जायगा।
खोलकर अच्छा बुरा सब हाल दिखला दूंगी मैं ॥
५ ध्यान धर जिनराज का और धर्म पे निश्चय करो।
सांच को नहीं आंच यह चल करके बतला दूंगी मैं ॥
६ छोड़ दे सब रंजोगम दिल को तसल्ली दीजिये !
तेरे बालम की रिहाई जाके दिलवादूंगी मैं ॥

(दोनों का चला जाना)

सीन ४२
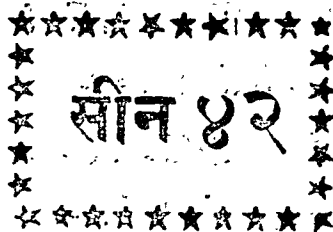
कुमकुमद्वीप के राजा के दरबार का परदा

२६१

रैनमंजूषा और गुणमाला का दरबार में पहुँचना और वार्तालाप करना ॥

गुण०—पिताजी हमारे नगर में सागर के तीर जो जहाज आए हैं उनमें यह एक सूरत की प्यारी सुन्दर नारी है जो आपको श्रीपाल का असली हाल बतलावेगी।

राजा—(रैनमजूषा से) हे देवी अपने हृदय में सत भाव को धारण करो और श्रीपाल का सारा चरित्र मेरे से वर्णन करो ॥

२९२

रैनमंजूषा का जवाब ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो नज़र से देखना ॥

१ क्या कहूँ यह माजरा क्योंकर हुआ क्या हो गया ।
बस समझ लो जैसा कुछ होना था वैसा हो गया ।

२ हाल इस श्रीपाल का मेरे से क्या पूछो हो तुम ।
हो गया बस जैसा किस्मत में लिखा था हो गया ।

३ था विचारा कुछ, नतीजा और ही कुछ हो गया ।
यार दुश्मन बन गया अपना पराया हो गया ॥

४ कौन लाएगा यकीं कहने पर मेरे इस जगह ।
आप ही कह देंगे सुनकर कैसे ऐसा हो गया ।

५ मेरे ही कपड़े बदन के मेरे दुश्मन हो रहे ।
फिर शहादत कौन देवेगा कि ऐसा हो गया ॥

२९३

राजा का जवाब ॥ (शेर)

१ बेटी तू इस तरह का न दिल में ख्याल कर ॥
सब दूर अपने दिल से यह रंजो मलाल कर ॥

२ जो बात असल है वह तू मुझसे बयान कर ।
मुझको यकीं है बात का तेरी [illegible] कर ।

३ तुम एक दम [illegible] गुनाह [illegible] ।
पानी को दूर [illegible] से [illegible] छिपाइये [illegible] ॥

२८४

रैनमंजूषा का हाल बताना ॥

चाल—(इन्दरसभा) मामूर हूँ शोखी से शरारत से भरी हूँ ॥

१ सुनिए पिताजी हाल श्रीपाल का सुनाऊं ।
जो माजरा है साफ तुम्हें सारा बताऊं ॥
२ अंगदेश में इक शहर है चम्पापुरी है नाम ॥
राजा वहां का अरिदमन था सा नेक नाम
३ उसका यह श्रीपाल पियारा कुमार है ।
कहते हैं कोटीभट इसे राजों में सार है ॥
४ उज्जैन के राजा का जमाई है जानियो ।
मैना सती का कंथ है सच बात मानियो ॥
५ है कनककेतु राजा हंसद्वीप है भारी ।
मैं उसकी सुता और श्रीपाल की नारी ॥
६ हम दोनों चले लेके धवल सेठ सहारा ।
पापी ने मोहे देख पाप मन में विचारा ।
७ छल करके श्रीपाल को दरिया में बहाया ।
और पास मेरे दुष्ट बचन बोलने आया ॥
८ तब आके जैन देवी करी मेरी सहाई ।
उस पापी को दीनी सजा की सब की तबाही ॥
९ कहने से मेरे देवी ने उपसर्ग निवारा ।
मुझको बता दिया कि मिले कंथ हमारा ॥
१० अब तक इसी उमीद में जीती रही हूं मैं ।
लाखों तरह की आफतें सहती रही हूँ मैं ॥

११ कर आपके दर्शन सुखी मन हो गया मेरा ।
दसवां विभाग शील का गरचे गया मेरा ॥

१२ सम तात जान आपको दरबार में आई ।
जो बात असल थी वह सारी आके सुनाई ॥

१३ चाहे जो करो आपको अख्तियार है ।
इसमें न कोई मेरी तरफ से विचार है ॥

२६५

राजा का अफसोस करना और श्रीपाल के पास जाना (शेर)

१ है अफसोस कैसा जुलम हो गया ।
गजब होगया है सितम हो गया ।

२ मेरे सर में कैसा जनूं हो गया ।
जो इन्साफ का आज खूं हो गया ।

३ मरे बेगुनाह यूं मेरे राज में ।
सती पाए दुख क्यों मेरे राज में ।

४ विलाशक श्रीपाल है बे गुनाह ।
सरासर धवल सेठ है रूसियाह ॥

५ सती रैनमंजूषा सतियों में सार ।
रखा शील को तूने अपने संभार ॥

६ है शाबास बेटी महा गुण भरी ।
साफ सब गई अब मुसीबत तेरी ॥

७ धवल सेठ बच कर कहां जाएगा ।
किये की वह अपने सजा पाएगा ॥

५ श्रीपाल के पास जाता हूं मैं ।
अभी तख्त पर ला बिठाता हूं मैं ॥

(सब का चला जाना)

सीन ४३

शूली का परदा

२९६

राजा व गुणमाला व रैनमंजूषा और सब दरबारियों का शूली के पास पहुँचना और राजा का श्रीपाल से मुआफी मांगना (शेर)

१ सुना कोटीभट अय शहे नेक नाम ।
खतावार हूँ मैं तेरा लाकलाम ।
२ विना बात मैंने दिया दुख तुझे ।
पशेमान हूँ मैं तेरे सामने ॥
३ बनावट का था सारा यह माजरा ।
बड़ा मुझ को भांडों ने धोका दिया ॥
४ जो कुछ बात थी साफ़ वह खुल गई ।
जो थी असलियत मुझको सब मिल गई ॥
५ बिलाशक मैं तेरा खतावार हूँ ।
जो चाहो सो कहिये गुनहगार हूँ ॥

६ दयामय तू गम्भीर है।
क्षमा कीजे मेरी जो तकसीर है ॥

२९७

श्रीपाल का जवाब ॥ चाल कत्ल मत करना मुझे तेगों नज़र से देखना ॥

१ कौन करता है गुमां राजा तेरी तकसीर का।
दोष जो कुछ है सरासर है मेरी तक़दीर का ॥
२ कर्म जो मैंने किये उनका नतीजा मिल गया।
टल नहीं सकता कभी हरगिज़ लिखा तक़दीर का ॥
३ रंज गर है तो मुझे राजा तेरे इन्साफ़ पे।
नाम भी तुम में नहीं है अक्ल की तक़दीर का ॥
४ गर नहीं तुझको तमीज़ एक भांड और शाह में।
क्या करेगा न्याय फिर कमज़ोर का और वीर का ॥
५ जुर्म मैंने क्या किया था यह ज़रा पहले बता।
हुक्म शूली का सुनाया कौनसा तक़सीर का ॥
६ सख्त है अफ़सोस तूने गुण मेरा जाना नहीं।
बल कभी देखा नहीं मेरे कमान और तीर का ॥
७ कौन दे सकता है शूली मुझको तेरी क्या मजाल।
देवता हैं कांपते सुन नाम कोटीवीर का ॥
८ ला ज़रा जाकर तेरी सेना को मेरे सामने।
देखलूं बल मैं भी तेरी फौज का शमशीर का ॥
९ पुत्र कोटीभट का हूं और आप कोटीभट हूं।
मत समझियो मुझको बेटा भांड का [illegible] का ॥

१० मैं अगर चाहूँ उलट दूं सारे तेरे राज को।
तब तुझे मालूम होगा पुत्र हूँ किस वीर का।

२६८

राजा का शरमिन्दा होना और श्रीपाल की स्तुति करना ॥ (वार्तालाप)

अय महाराज श्रीपाल! बेशक मैं गुनहगार हूँ आपका खतावार हूँ ॥ बदकार भांडोंने सरे दरबार मुझको धोका दिया आपसे बदगुमान कराया-दुनियां में मुझको बदनाम किया आपके सामने पशेमान बनाया ॥

शैर १ अय शहा कर महरबानी बख्श दो मेरी खता।
मेरी गलती मुआफ़ कीजे हूँ मैं बन्दा आपका ॥
२ चाल में आकर हर इक इन्सान धोका खाता है।
भांड नक्क़ालों के कहने में बशर आ जाता है ॥
३ आप कोटीभट दयामय हैं समंदर ज्ञान के।
बख्श दो मेरी खता दिल में दया तुम ठान के ॥

२६९

श्रीपाल का जवाब देना ॥

चाल—(गज़ल कवाली) पहलू में मेरे यार है उसकी खबर नहीं ॥

१ दुश्मन हमारी जान के सब यार बन गए ॥
हम आज बेखता ही गुनहगार बन गए ॥
२ हमने जरूर सेठ की कोई खता करी।
जो मेरे लिए वह दिल आज़ार बन गए ॥
३ इसमें खता नहीं है महाराज की जरा।

करमों के खेल हक में मेरे खार बन गए ।
४ दिलजान से मैं आपका तो ताबेदार हूँ ।
मेरे ही हैं करम जो सितमगार बन गए ।

३००

राजा का दरबार में चलने के लिये श्रीपाल से प्रार्थना करना (वार्तालाप)

(सिर झुका कर और हाथ जोड़ कर) अय कुंवर श्रीपाल धन्य है आपका बल और परिवार-धन्य है आपका साहस और विचार । अब हम पर क्षमा कीजे अपने चित को शान्त कीजे । अपने मनसे चिन्ता निवारिये-राजदरबार को पधारिये ।

(सब का रवाना होना)

****

सीन ४४

****

दरबार का पर्दा

३०१

राजा व श्रीपाल व गुणमाला व [illegible] का दरबार में पहुँचना और राजा का सिंहासन पर बैठ कर हुक्म करना (वार्तालाप)

राजा-(गुस्से से) कोतवाल ! दुष्ट भांडों के घरों की दरो दीवार को उखाड़ दे एक दम सबको उजाड़ दे । सब मर्दों व उनको तौक व जंजीर पहनाओ और फौरन हमारे सामने लाओ ।

कोत०-अभी हजूर का हुक्म बजा लाता हूँ (चला जाना)

राजा-अय सेनापति समुद्र पर जो जहाज आए हैं सबको जब्त करो और दाखिल सरकार करो पापी धवल और उसके सब आदमियों को गरिफ्तार करो हाजिर दरबार करो।

सेना०-बहुत अच्छा महाराज अभी तामीले हुक्म करता हूँ।

राजा-अय मंत्री क्या पापी धवल ने कम जुल्म किया है जो उसको मौत की सजा न दी जाय॥

मंत्री-१ महाराज बेशक धवल सख्त मुजरिम है इसको जरूर मौत की सजा दीजिए हरगिज रिहाई न की जाए।

कोत०-(भांडों को पेश करके) हजूर इन बदकिरदार भांडों के घरबार को बरबाद किया सबको पा बजंजीर हाजिर दरबार किया॥

सेना०-महाराज सब जहाज जब्त होकर दाखिल सरकार हैं मुजरिम गिरफ्तार हाजिर दरबार हैं॥

राजा-(हुक्म सुनाना) अय पापी धवल तूने अपनी धर्म की बेटी सती रैनमंजूषा के शील पर हाथ निकाला और श्रीपाल को नाहक समुद्र में डाला हमको सरे दरबार धोका दिया कंवर श्रीपाल की नजरों में शरमिन्दा किया। तुझको तेरे पापों के बदले मौत की सजा दी

जाती है। तेरे सब साथियों की उम्र कैद की जाती है। अय कोतवाल इन बदमाश भाँडों को तीरों से हलाक करो। बदमाशों से मेरे राज को पाक करो। तामीले हुक्म की हरगिज रिहाई न होगी।

३०२

श्रीपाल का सिफारिश करना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

१ तात को मेरे शहा कर महरबानी छोड़ दो ॥
छोड़ दो मेरे लिए यह बदगुमानी छोड़ दो ॥
२ यह धवल शाह सेठ है और धर्म का मेरा पिता।
इनके बदफेलों पे जो आई गिलानी छोड़ दो ॥
३ यह अगर वहां पे नहीं दरिया में मुझको डालता।
किस तरह मिलती मुझे गुणमाला रानी छोड़ दो
४ क्यों लगाते हो मेरे मुंह पे सियाही अय हजूर।
होना था सो हो चुका अब यह कहानी छोड़ दो ॥
५ सर झुका कर दस्तावस्ता अर्ज यह करता हूँ मैं।
जितने मुलजिम हैं इन्हें कर महरबानी छोड़ दो ॥

३०३

राजा और श्रीपाल की बातचीत (शेर)

राजा-अय कंवर कहते हो क्या सोचो विचारो तो जरा।
रहम करने का नहीं मौका निहारो तो जरा ॥

श्री०-है दया ही धर्म का लक्षण विचारो तो जरा ।
हर जगह लाज़िम दया करनी निहारो तो जरा ॥
३ राजा-हुक्म तेरा मानने को मैं सदा तैयार हूँ ।
कैसे पर छोड़ूं इन्हें कानून से लाचार हूँ ॥
४ श्री-आप सच फ़रमाते हैं फ़रमां का ताबेदार हूँ ।
पर कहो मैं क्या करूं आदात से लाचार हूँ ॥
५ राजा-पाप के बदले सजा पापी को देनी चाहिये ।
अपने फ़ेलों की सजा हर इक को लेनी चाहिये ।
६ श्री०-है यही लाज़िम दया हर इक पे करनी चाहिये ।
आंख बदफ़ेली पे औरों की न धरनी चाहिये ।
७ राज़ा-खून यूं इन्साफ़ का करना मुनासिब है नहीं ।
मुजरिमों को यूं रिहा करना मुनासिब है नहीं ॥
८ श्री०-खूं किसी का यूं बहा देना मुनासिब है नहीं ।
रहम को दिल से हटा देना मुनासिब है नहीं ॥
९ राजा-अपने पापों की सजा गर यह नहीं यहां पाएगा ।
कौनसी फिर है जगह जो वह सजा वहां पाएगा ॥
१० श्री०-आप क्यों कातिल बनें हाथ आपके क्या आएगा
जैसा जो करता है उसके आगे वैसा आएगा ॥
११ कर्म का कानून है ऐसा अटल दुनियां के बीच ।
हर बशर खुद अपनी करनी का नतीजा पाएगा ॥
१२ राजा-गर यही मनशा तुम्हारी है तो इनको छोड़ दूं ।
मुझको यह ताकत कहां जो हुक्म तेरा मोड़ दूं ।

१३ श्री—हुक्म हो तो इनको बंधन से अभी मैं छोड़दूं ।
हाथ पांव खोल दूं जंजीर सबकी तोड़दूं ॥
१४ राजा—अय कंवरजी आपका कहना मुझे मंजूर है ।
चाहे जो कुछ कीजिए अच्छा मुझे मंजूर है ॥

(श्रीपाल का अपने हाथों से सबके बंधन खोलना)

३०४

सब का श्रीपाल की स्तुति करना ॥

चाल—(कवाली हुआ सुत राम दशरथ के बहादुर हो तो ऐसा हो ॥

१ अहो श्रीपाल रहमत का समंदर हो तो ऐसा हो ॥
जहां में नेक नीयत और दिलावर हो तो ऐसा हो ॥
२ हटा दी हाथ से अपने तौक़ जंजीर सारों की ।
खतायें बख्श दी सबकी दयाकर हो तो ऐसा हो ॥
३ दया का धर्म का गुण का दिवाकर हो तो ऐसा हो ।
प्रजारक्षक धरमपालक कोई गर हो तो ऐसा हो ।

३०५

श्रीपाल का धवल सेठ की स्तुति करना ॥

चाल—(गजल) इस इश्क ने मारो मुझे दुनियां से बहाना दीवाना बनाके

१ इस कर्म ने देखो मुझे दरया में गिराया-बहाना बनाके ।
लहरों ने समन्दर को परेशान बनाया-दीवाना बनाके ।
२ अय बाप रास्ते में न सेवा करी तेरी अफसोस है बाके ।
तूफान भंवर ने मुझे लाचार बनाया-निशाना बनाके ।

३०६

धवल सेठ का शरमिन्दा होकर पछताना और छाती फटकर मर जाना

चाल—(कवाली) घर से यहां कौन खुदा के लिए लाया मुझको ॥

१ आज दुनिया से मैं बदनाम हुए जाता हूँ ।
पाप का भार मैं सर अपने लिए जाता हूँ ।

२ मुझसा पापी भी तो दुनियां में न होगा कोई ।
पाप की खाक मैं चेहरे पे मले जाता हूँ ॥

३ हां श्रीपाल तुझे मैंने सताया बेटा ।
सामने तेरे नजर नीची किए जाता हूँ ।

(जमीन पर गिरना और मर जाना)

३०७

श्रीपाल का अफसोस करना ॥

चाल—(कवाली) सखी सावन वहारआई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ नजर कर देखलो साहिब कि दुनियां चंद रोजा है ।
वफ़ा इसमें किसी को भी नहीं है चन्द रोजा है ॥

२ यह जीते जी के झगड़े हैं जो मेरी मेरी करते हैं ।
वगरना सारी दुनियां का तमाशा चन्द रोजा है ।

३ कहां वह भीम और अर्जुन कहां रावण राम लछमन ।
सभी यूं कह गये आखिर कि दुनियां चन्द रोजा है ।

४ धवल शाह धर्म का मेरा पिता भी आज दुनियां से ।
गए अफसोस खाली हाथ दुनियां चन्द रोजा है ।

(रवाना होना)

सीन ४५

सेठानी के जहाज और महल का परदा

३०८

श्रीपाल का अपनी धर्म की माता सेठानी से मिलना और अर्ज करना ॥

चाल—प्रभु भक्ति में प्रेम लगारे मना ।

प्रभु भक्ति में मात लगा री जिया ।
लगा री जिया—लगा री जिया ॥ प्रभु० ॥

१ तन मन धन जोवन झूठे सारे ।
ना कोई भी सार जिया ॥ प्रभु० ॥

२ होना था सोही हो गया माता ।
रंज को मन से दूर हटा ॥ प्रभु० ॥

३ विषय भोग का ध्यान हटाले ।
जैन धर्म से प्रेम लगा ॥ प्रभु० ॥

४ आज्ञा दीजे मात कुंवर को ।
सर आंखों से मैं लाऊं बजा ॥ प्रभु० ॥

३०९

सेठानी जी का जवाब देना ॥

चाल—(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे ॥

१ कुंवर श्रीपाल गुण तेरा सदा दिन रात गाऊं मैं ॥
जगत शृंगार धरम अवतार आ हृदय लगाऊं मैं ॥

२ हुआ अच्छा अगर वह मर गया बदकार परपंचा।
मुझे आज्ञा करो बेटा कि अपने घर को जाऊं मैं॥

३१०

श्रीपाल का जवाब ॥ चाल नम्बर ३०६

१ विपत आराम जश अपजश है सब कर्मों के हाथों में।
तू माता धर्म की मेरी चरण में सर झुकाऊं मैं।
२ मेरी निज मात से भी तू अधिक मुझको प्यारी है।
चलो माता नगर चम्पा सिंहासन पर बिठाऊं मैं।

३११

सेठानी का जवाब ॥ चाल नम्बर ३०६

बढ़े लक्ष्मी तेरी बेटा तेरा इकबाल दूना हो।
चिरन्जीवो सदा जग में यही आशा मनाऊं मैं।
२ तू माता कुन्दप्रभा से मेरा प्रणाम कह दीजो।
मुझे आज्ञा सुना दीजे कि जल्दी घर को जाऊं मैं।

३१२

श्रीपाल का आज्ञा देना, चाल नम्बर ३०६

१ मुझे मंजूर है माता जो कुछ मन में विचारी है।
वही मरजी हमारी है जो कुछ मरजी तुम्हारी है।
२ धरम का पुत्र हूँ तेरा मुझे मत भूलना माता।
मेरी निज मात से भी तू अधिक मुझको प्यारी है।
३ पड़े कुछ भीड़ तुम पर तो मेरे को याद कर लेना।
बजा लाऊंगा सर आंखों से जो आज्ञा तुम्हारी है।

४ चलो माता तुम्हारे देश में मैं चलके पहुँचा दूं ।
चलूं खुद संग में और संग सब सेना हमारी है ।

(सब का रवाना होना)

सीन ४६

श्रीपाल के महल का परदा

३१३

नोट—राजा श्रीपाल सेठानी जी को पहुँचा कर वापिस कुमकुमद्वीप में आए और गुणमाला और रैनमंजूषा के साथ सुखसे रहते हुए ॥ कुछ दिन बाद कुन्दनपुर के राजा मकरकेतु (राणी कपूरतिलका) की लड़की चित्ररेखा को ब्याहा और कंचनपुर के राजा वज्रसेन रानी कंचनमाला की बेटी विलासवती से शादी की और कुमकुम पट्टन के राजा यशसेन की लड़की शृंगारगौरी को ब्याहा और अनेक राजाओं को जीतकर उनकी कन्याओं को ब्याहा और सुख से कुमकुमद्वीप में राज करते रहे ॥

३१४

एक रात श्रीपाल का मैनासुन्दरी को याद करना और गमगीन होना ।
रैनमंजूषा व गुणमाला का हाल पूछना ॥

चाल—मैं रही हूँ प्यारी शकुन्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो ।

१ प्यारे क्यों यह हालते जार है कैसा जी को तेरे मलाल है ।
पिया साफ बतलादो हमें यह आपका क्या हाल है ।

२ कहो कौन सोचो विचार है क्यों न दिल को आज क़रार है
नहीं नींद आती है आपको क्या बवाल है क्या ख्याल है

३१५

श्रीपाल का जवाब देना ॥
चाल—(कवाली) कत्ल न करना मुझे तेगो तवर से देखना ॥

१ दिल ही पहलू में नहीं है नींद किसको आएगी ॥
हाल मत पूछो तबियत आपकी घबराएगी ।
२ आज मुझको याद उस मैना सती की आ गई ।
क्या खबर यह बात मुझ पर क्या मुसीबत लाएगी ।
३ बात तो कुछ भी नहीं पर मुझको इतना खौफ है ।
उसकी जिद बाइस हमारी मौत का हो जाएगी ।
४ वक्ते रुखसत वर्ष बारा का परण मैंने किया ।
इसमें गर फर्क आ गया वह बदगुमां हो जाएगी ।
५ अष्टमी के दिन अगर उस पास मैं पहुँचा नहीं ।
छोड़कर घरबार सब वह अर्जकां हो जाएगी ।
६ अर्जकां गर वह हुई दुनियां मेरे किस काम की ।
मेरी सब उम्मीद प्यारी खाक में मिल जाएगी ।
७ दिन हमारे कौल का नजदीक प्यारी आगया ।
क्या खबर अब वह सती क्या २ सितम दिखलाएगी ।
८ जान से दिल से सती मैना का मैं ममनून हूँ ।
गर वचन झूठा हुआ एकदम कयामत आएगी ।

३१६

सब रानियों का खुश होकर मंजूर करना और रवाना होना ॥

चाल—[नाटक] महाराज गांए अब हम फिर नाचें खूब छम छम ॥

महाराज चलिए इस दम-संग जावें आज सब हम ॥महा०
वीरों की फौज़ एकदम—तैयार करलो एकदम ॥
यह गुणमाला बरनारी—यह रैनमंजूषा प्यारी ॥
चलने को खुश है हरदम ॥ महाराज ॥

(सबका रवाना होना)

—— ❀ ——
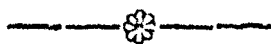
इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी
नाटक का पांचवां ऐक्ट समाप्तम् शुभम् ॥

❀ सती ❀

卐 मैनासुन्दरी नाटक 卐

-:०:-

छठा ऐक्ट

—:००००:—

मैनासुन्दरी का श्रीपाल के आने की आशा छोड़कर अपनी सास से अर्जिकां होने के लिए आज्ञा मांगना, श्रीपाल का मैनासुन्दरी के पास पहुँचना और उसको रोकना, अपनी माता और मैनासुन्दरी को अपनी सेना में लाना और मैनासुन्दरी को पटरानी बनाना। मैनासुन्दरी का पिता को अपने कर्म का जलवा दिखाना, श्रीपाल का चम्पापुर पहुंचना और अपने चाचा वीरदमन से युद्ध करना और चचा को जीतना और चम्पापुर के तख्त पर बैठना और सबका मुबारिकबाद गाना।

श्री जिनेन्द्रायनमः

सीन ४७

मैनासुन्दरी के महल का परदा

मैनासुन्दरी का सप्तमी की रात को श्रीपाल को याद करना और उसके वियोग में विलाप करना और व्याकुल होकर अपनी सास के पास जाना ॥

चाल—हा अच्छे पिया वहीं देश बुलालो हिन्द में जी घबरावत है ॥

हाय अच्छे पिया मोहे दर्श दिखावो रैन में जी घबरावत है। टेक

१ प्रभु के वास्ते अब तो तुम आओ जल्दी से।
सती को आनके सूरत दिखावो जल्दी से ॥
जरा तुम आके मेरे जी की बेकली देखो ॥
हैं प्राण जाते सती के बचाओ जल्दी से ॥
हाय जीना भयो अब पल भारी नींद न दम भर आवत है।

२ न मैंने तप ही किया और न कुछ भी सुख देखा।
उमर संभाली है जब से सदा ही दुख देखा।
किसी के कौल का ना एतबार दुनियां में।
है क्षत्रियों के बचन को भी मैं परख देखा।
हाय जनमकी दुखियां दरशकी प्यासी काहेको जी तड़पावत है

३ तड़प रही हूँ पड़ी बेकरार जंगल में ॥
मेरा प्रभु को है मालूम हाल जंगल में।

जरा तुम आके मुझे यह बताओ तो कब तक ॥
करूंगी आने की मैं इन्तजार जंगल में ॥
हाय रैन अंधेरी जगत को बैरन मछली सी तड़पावत है ॥
४ किए हैं बारा बरस पूरे दुख यह सह करके ।
जरा बताओ तो तुम क्या गए थे कह करके ।
न आए आज का वादा किया था क्यों तुमने ।
इसी भरोसे वचन तुम गए थे दे करके ॥
हाय उमड़ उमड़ पिया नैन हमारे निशदिन मेंह बरसावत हैं ।

(चला जाना)

सीन ४८

मैनासुन्दरी की सास के महल का परदा

२१८

नोट—राजा श्रीपाल अपने श्वसुर की आज्ञा लेकर सब रानियों और तमाम लशकर को साथ लेकर उज्जैन नगर की तरफ रवाना हुआ और [illegible] दिन उज्जैन के वन में पहुँचा ॥ सब रानियों को और लशकर को [illegible] ताल पर छोड़कर अकेला बीन कोट [illegible] रैन में [illegible] मैनासुन्दरी के महल के पास गया ॥ उस समय मैनासुन्दरी श्रीपाल के वियोग में व्याकुल होकर अपनी सास से [illegible] होने के लिए आज्ञा मांग रही थी जो श्रीपाल एक तरफ [illegible] दोनों की बात सुनने लगा ॥

३१६

मैनासुन्दरी का अपनी सास से कहना ॥

चाल—(नाटक) पिया आए न अरी हमसे सहा दुख जाए ना ॥

पिआ आए ना अरी हमसे सहा दुख जाए ना ॥
ना वह आए जराए सताए जिया ॥ पिया० ॥
मुझको मालूम न था धोका दिये जाते हैं ।
क्षत्रियों के भी वचन झूठ निकल आते हैं ।
न तो कुछ धर्म किया और न कुछ सुख ही मिला ।
उम्र के दिन यूं ही बरबाद हुए जाते हैं ।
अन भाए ना रह्यो जाए ना ॥ अरी हमसे सहा दुख जाये ना
ना वह आए जराये सताये जिया ॥ पिया० ॥

३२०

सास का जवाब (दोहा)

१ हे पुत्री धीरज धरो. मन मत करो उदास ।
निश्चय करके आएगा, कोटीभट रख आस ।
२ क्या जाने परदेश में, क्या कारण भयो आय ।
जो अब लग आयो नहीं, श्रीपाल वर राय ॥
३ वह क्षत्री का पुत्र है, महाबली सुखकन्द ।
झूठ वचन बोले नहीं चाहे टरें रविचन्द ॥

३२१

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल—वारी जाऊं रे सांवरिया तुम पर वारना रे ॥

मैं ना मानूंगी तिहारी जग दुख कारणा री ॥टेक॥

१ अब मैं सारे दुख परहारूं ॥ तोड़ मुकट धरती में डारूं ।
भेष अर्जकां सारूं ॥ सब सुख कारणा री ॥
२ अब लग आस विषय तरु बोये । बारा बरस अकारथ खोये
अब ना खोऊं एक पल माता । जनम सुधारना री ।
३ मत मेरे जी को भरमाओ । मतना सूते करम जगावो ।
माता वेगी हुक्म सुनादो । कर इन्कार ना री ।

३२२

सास का जवाब । चाल—घर से यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥
१ बेटी दो दिन मेरे कहने से ठैर जाओ तुम ।
ऐसा कायर न बनो जी को न कलपावो तुम ।
२ इतने कहने की मेरे और भी करला परीक्षा ।
जो नहीं आया तो फिर ले लेंगी दोनों दीक्षा ।

३२३

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल—परदेशी सैंयां नेहा लगाए दुख दे गयो ॥
कोटीभट माता बात बनाके दुख दे गयो-सुख ले गयो ।टेक।
१ क्या तो भरमाये नारी । हमको बिसराये डारी ।
क्या वह मार्ग बिसारी । क्या वह मार्ग बिसारी ।
दुख दे गयो—सुख ले गयो । कोटी० ।
२ पाती न आई पीकी । कभु न पूछी जी की ।
झूठी सब बातें देखी । एक न सांची देखी ।
जो कह गयो—चर दे गयो ॥ कोटी० ॥
३ मन को ठैराये राखो, अब लग समझाये राखो ।

वन के बिरहन विष चाखो । बन बिरहन विष चाखो ॥
अब ना रहूँ पल ना रहूँ ॥ कोटी० ॥

३२४

सास और मैनासुन्दरी के सवाल और जवाब ॥
चाल—(कवाली) सखी सावन बहार आई झुलाये जिसका जी चाहे ॥

१ सास-अरी तू मानले श्रीपाल कल या आज आएगा ।
वह निश्चय करके आएगा बचन अपना निभाएगा ।
२ मैना-बरस बारा में नहीं आया वह कैसे आज आएगा ।
तुझे होगा यकीं उसका बचन अपना निभाएगा ॥
३ सास-बहुत सी फौज और लश्कर वह अपनेसाथ लाएगा
जो तू होगी नहीं घर में तो वह किसको दिखाएगा ॥
४ मैना-मेरे जैसी हजारों राजकन्या व्याह के लाएगा ।
तू माता वह तेरा बेटा अरी तुझको दिखाएगा ॥
५ सास-तुम्हारे बिन अगर सूना वह घर को देख पाएगा ।
यकीं समझो वह दुख पाएगा उल्टा लौट जाएगा ।
६ मैना-मेरे से भी अधिक सुन्दर वह बांदी घर में लाएगा
भला मुझ मंद भागन को वह कब खातिर में लाएगा ।
७ सास-हजारों राणियां बाँदी अगर वह संग लाएगा ।
तो सब रणवास में तुझको वह पटरानी बनाएगा ।
८ मैना-दिखा लालच मुझे मत रोक वह दिन फिर न आएगा ।
फंसा मोह जाल में मुझको तेरे क्या हाथ आएगा ॥

९ सास-तू दो दिन ठेर जा श्रीपाल गर भी न आवेगा।
तो दिक्षा मैं भी ले लूंगी तेरा मतलब वर आयेगा।
१० मैना-है जीना बूंद शबनमको भरोसा है नहीं पलका।
खबर क्या है मेरी माता कि कल क्या पेश आएगा।
११ सास-तूमालिक घरकी क्या तुझकोख्याल इतना न आएगा
तेरे बिन राज और यह पाट सब किस काम आयेगा।

३२५

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (रागनी)

हम न किसी के न कोई हमारा झूठा सब व्यवहारा।
तन मन धन सब है छिन भंगुर जैसे धुन्ध पसारा ॥टेक॥
१ (दोहा) राजा राणी छत्रपति हथियन के असवार।
मरना सबको एक दिन अपनी अपनी वार।
दल बल देही देवता मात पिता परिवार।
मरती बिरियां जीवको कोई न राख नहार॥
अजी क्या सुत क्या भरतारा॥ हम०॥
२ दाम बिना निर्धन दुखी तृष्णा वश धनवान।
कहीं न सुख संसार में सब जग देखा छान।
आप अकेला अवतरे मरे अकेला होय।
यूं कबहीं इस जीव को साथी संग न होय॥
अजी झूठा है घरबार। हम०।
३ एक तुच्छ सुख की आस में खो दिए सारा माल।
आतम हित कुछ ना कियो पड़ी मोह के जाल॥

अब मन की आसा मिटी मोह करम गयो सोय ।
जो अब भी चेतूं नहीं मो सम मूरख कोय ।
अजी देखो सोच विचारा । हम० ।

३२६

साम का जवाब ॥
चाल—गए दोनों जहान नजर से गुजर तेरी शान का कोई बसर ना मिला ॥

१ क्यों बिगाड़े है तू सारी बात बनी ।
घनी बीत गई और थोड़ी रही ।
एक दो दिन की बात रही है सती ।
अब तलक तो सही जो सही सो सही ।
२ जो वह तेरा पति है तो मेरा भी सुत ।
दस मास रखा उर पीर सही ।
मेरा तेरे से ज़्यादा जरे है जिया ।
जरा जी में विचार करो तो सही ।
३ अब और अगर हठ तुमने करी ।
और दोनों ने चल करके दिक्षा धरी ।
सारे लोग हंसेगे कहेंगे यही ।
देखो दोनों ने कैसी अयोग करी ।

३२७

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर (३२६)

१ नहीं लोग हंसाई का डर है मुझे ।
इस बात का एक फिकर है मुझे ॥

न तो तप ही किया न पिया मिला ।
ना इधर की रही ना उधर की रही ।
२ अब छोड़ दई मैंने पी की लगन ।
मैंने लेली है बस श्रीजी की शरण ।
गए बारा बरस याद करते सजन ।
ना इधर की रही ना उधर की रही ।
३ अब जल्दी से आज्ञा सुनादो मुझे ।
कहीं चल करके दिक्षा दिलादो मुझे ।
कहीं मुक्ति के मारग लगादो मुझे ॥
ना इधर की रही ना उधर की रही ।

३२८

सास का जवाब ॥ (चाल नम्बर २६)

१ तप करने का बेटी यह वक्त नहीं ।
तेरी बाल अवस्था समझ तो सही ।
कुछ दिन तो करो राज पाट सभी ।
हठ छोड़ जरा मेरी मान कही ।
२ एक दो दिन तो टुक मन धीर धरो ।
फिर हर्ष के सोलह शृंगार करो ।
कोटी की जरा पटनार बनो ।
सारी चम्पा में आन फिरेगी तेरी ।

३२६

मैनासुन्दरी का जवाब देना और वैराग्य में आना ॥
चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना ॥

१ है जगत दुख रूप तेरा राज क्या करना मुझे।
यहां सदा रहना नहीं इक रोज है मरना मुझे।
२ रंक हो चाहे राव हो यहां सब में हलचल हो रही।
सार जब कुछ भी नहीं शृंगार क्या करना मुझे।
३ फिरते फिरते चार गत में एक जमाना हो गया।
अब तो लाज़िम है यही तप सार का धरना मुझे।
४ मात सुत भरतार दारा सब जुदा हो जायेंगे।
ऐसी नातेदारी का फिर दम है क्या भरना मुझे।
५ सब जहां मतलब का है मतलब बिना कोई नहीं।
अपना जब कोई नहीं संसार क्या करना मुझे।
६ सब के सब हम और तुम मेहमान हैं दो चार दिन।
अपनी अपनी करके सर भार क्यों धरना मुझे।
७ कौन रख सकता मुझको यह तो बतला दे मुझे।
इस जहां फ़ानी से होगा कूंच जब करना मुझे।
८ आग में कोई जला देगा दबा देगा कोई।
किसके काबू में है फिर जो दे कोई शरना मुझे।
९ चान्द सूरज की चले ना देव की इन्सान की।
यह अमर है तैशुदा है एकदिन मरना मुझे।

१० सारे जंतर और मंतर वैद्य भी बेकार हैं।
और फिर किसके भरोसे पर है दिल धरना मुझे ॥

११ अब तो जी में है यही मेरे कि जिन दिक्षा धरूं।
राज चम्पा चीर पटराणी का क्या करना मुझे ॥

३३०

साम का जवाब ॥ (शेर)

१ हट छोड़ दे छोड़ूं नहीं मैं यों कहूँ तू यूं कहे।
अब ठैरजा ठैरूं नहीं मैं यों कहूँ तू यूं कहे।

२ कर राज तू मैं यूं कहूँ और तू कहे दिक्षा धरूं।
तू मानजा मानूं नहीं मैं यूं कहूँ तू यूं कहे।

३ दो दिन अगर ठैरे नहीं तो आज के दिन ठैर जा।
फिर मैं तेरे साथ हूँ वह ही करूं जो तू कहे ॥

३३१

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल—(नाटक) तुम्हें दूंगा मैं बाकी मुदरिया जाना ॥

मैने छोड़ी रे तेरे कंवर की आस।
झूठा झूठा री माता जगत का वास ॥ भारी कलकल—
मची है सारी हलचल—अरी झूठा सारा दल ब ल—
न कयाम का नाम लो ॥ मैंने ॥
वन में ध्यान धरूंगी....तम अज्ञान हरूंगी ॥
यहां कुछ काम नहीं है—सुख का धाम नहीं है।
एक दिन सब को जाना—क्या राजा क्या राणा ॥

क्या सूरज चन्दर—नौकर अफसर—जलचर—नभचर—इन्दर सुरनर । छोड़ री ।

३३२

सास का जवाब (दोहा)

१ प्यारी दुर्लभ मिलत है राज भोग संजोग ।
सुख भोगो संसार का पीछे लीजो जोग ॥
२ तू प्यारी नादान है करती नहीं विचार ।
राज सम्पदा राज सुख मिले न बारमबार ॥

३३३

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ।

१ फंसे दुनियां में जो मूरख सदा नाशाद होता है ।
इसे जो छोड़ देता है वही दिल शाद होता है ॥
२ कहीं मरने का डर दिल में कहीं बीमारियां तन में ।
कहीं रंजो अमल देखा कोई बेजार होता है ।
३ पशुगत नर्कगत नरगत किसी गत में न सुख देखा ॥
अगर सुरगत में भी पहोंचा तो माला देख रोता है ॥
४ किसी का भाई वैरी है किसी की नार कलिहारी ।
कोई बिन नार व्याकुल है कोई मन मार रोता है ।
५ कोई निर्धन दुखी देखा नहीं कोई सुखी देखा ।
किसी को कुछ किसी को कुछ कोई आजार होता है ।
६ कोई बिन पुत्र दुख पावे मगर कुछ हाथ न आवे ।

अगर सुत हो भी जाता है तो मर जाने पे रोता है।
७ कोई गर आज सज धज के है बैठा तख्त शाही पे।
वही कल को अकेला खाक में जाकर के सोता है।
८ अगर दुनियां में सुख होता तो तीर्थंकर नहीं तजते।
बिना संसार के त्यागे नहीं आराम होता है।
९ सुनो माता किसी की भी सदा लक्ष्मी नहीं होती।
सदा रहती है चंचल ज्यों चलन बिजली का होता है।
१० जमाना छान कर देखा कहीं भी सुख नहीं देखा।
बिना वैराग्य के न्यामत नहीं आराम होता है॥

३३४

सास का जवाब॥ चाल—अरे काल देख इस तरफ जल्द आ॥

१ जरा कीजे इधर को निगाह।
अकेली मैं कैसे रहूँगी बता।
२ तेरा इस तरह जाना अच्छा नहीं।
सताना मेरे जी को अच्छा नहीं।
३ गया था श्रीपाल तो छोड़कर।
चली तू भी मेरे से मुंह मोड़कर।

३३५

मैनासुन्दरी का आभूषण उतार कर फैंकना और अपनी सास को परिवार सौंपकर वन को जाना।

चाल नाटक—(भैरवी) पनिया भरन को मैं कैसे जाऊं॥

दिक्षा धरन को मैं माता बन जाऊं॥ टेक॥

१ काहे करत हो हमसे झगड़या।
पाप हरन को मैं माता बन जाऊं॥

२. ले माता आभूषण तेरे ।
ध्यान धरन को मैं माता बन जाऊं ।
३ छोड़ दिया घरबार तिहारे ।
जोग धरन को मैं माता बन जाऊं ।
४ है झूठा यह सब संसारा ।
भर्म हरन को मैं माता बन जाऊं ॥

३३६

मैनासुन्दरी का अर्जिकां होने के लिये जाना और श्रीपाल का प्रगट
होना और मैनासुन्दरी को पकड़ना और समझाना
चाल—(नाटक) तुम कौन तुम कौन हो साहिब
आप कहां से किस लिये हो परेशान ॥

टुक ठैर टुक ठैर हो प्यारी जाती कहां को—
किस लिये हो परेशान ॥ यह सूरत—
ये सूरत कैसी बनाई है-तुमने कर दिया है हैरान ॥टुक०॥ टेक
१ शैर-मैं हाजिर हूँ मेरी प्यारी तेरे वादे से आ पहले ।
अभी दिन भी नहीं निकला है जाती हो कहां पहले
मुझे अफसोस है तूने न इतनी इन्तजारी की ॥
कि पूरब से वह सूरज की निकल आती किरण पहले
हां हां जो अमृत वाली-ओहो हो भोली भाली ॥
तुम तो हो जिनव्रत वाली ॥ कैसा हठ तुमने किया
इस आन ओ मतिवान ॥ टुक० ॥
२ शैर-राज हठ बाल हठ तिरिया की हठ मशहूर दुनिया में ।
मगर तेरी सी हठ प्यारी कहीं हमने नहीं देखी ॥

छोड़ घरबार को एकदम चली संजम के लेने को ।
यों हालत क्या मेरी होगी जरा यह बात नहीं देखी ॥
क्यों ऐसी बात विचारी—क्यों दिक्षा मन में धारी ॥
क्यों हो गई हो मतवारी—मेरा नहीं तुमने किया कुछ ध्यान
ओ नादान ॥टुक०॥

३३७

मैनासुन्दरी का हाथ जोड़कर जवाब देना ॥
चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

१ दिल ही काबू में नहीं ऐसा करूं तो क्या करूं ।
बेकली में गर न लूं दिक्षा करूं तो क्या करूं ॥
२ कर दिया मजबूर जब तेरी जुदाई ने मुझे ।
हो गया जी बेजार मेरा करूं तो क्या करूं ॥
३ सुख तजा तेरे लिए घरबार सारा तज दिया ।
छोड़ तुम भी चल दिए तनहा करूं तो क्या करूं ॥
४ वर्ष बारा तक तो की मैं इन्तजारी आपकी ।
कुछ न था इस दर्द का चारा करूं तो क्या करूं ॥

३३८

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को महल में चलने के लिए कहना ॥
चाल—इंद्रसभा (संकीर्ण भैरवी) पर ने यहां कौन [illegible] के लिए [illegible] ॥

१ सर पे आंखों पे कलेजे पे बिठाऊं तुझको ।
आ मेरी प्यारी गले से मैं लगाऊं तुझको ॥

छोड़ वैराग चलो महल में श्रृंगार करो ।
सारे रणवास में पटरानी बनाऊं तुझको ।

३३९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३३८)

१ विषय भोगों की नहीं बात सुनाओ मुझको ।
राज पाट का लालच न दिखाओ मुझको ॥
२ जाल दुनियां से मैं निकली हूँ बड़ी मुश्किल से ।
अय मेरे प्यारे न फिर इसमें फंसाओ मुझको ।

३४०

श्रीपाल का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३३८)

१ दिन बुरे दूर हुए पुण्य सितारा चमका ।
देख करमों का तमाशा मैं दिखाऊं तुझको ।
२ चलके दरबार में बैठो जरा सिंहासन पे ।
चीर पटरानी का एक बार बंधाऊं तुझको ॥

३४१

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर ३३८)

१ खूब करमों का तमाशा मैं पिया देख लिया ।
रहने दो और तमाशा न दिखाओ मुझको ॥
२ है यही दिल में कि जा बन कहीं ध्यान करूं ।
चीर पटरानी का रक्खो न बंधाओ मुझको ॥

३४२

श्रीपाल का जवाब (चाल नम्बर ३४८)

१ अब तलक तो हुवा सो हुवा माफ करो ॥
और आगे को नहीं प्यारी सताऊं तुझको ।
मेरी भुजबल का जरा कुछ तो नजारा देखो ।
तेरी किसमत का सती जलवा दिखाऊं तुझको ।

३४३

मैनासुन्दरी का जवाब देना और जाने को तैयार होना (चाल नम्बर ३३८)

१ बाप का प्यार तेरा राज सभी कुछ देखा ।
ख्वाब है दुनियां की बातें न भुलाओ मुझको ।
जो खता आज तलक मुझसे हुई माफ करो ।
जिद मेरे से न करो बस न सताओ मुझको ।

३४४

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को पकड़ना और रोकना ॥
चाल—कतल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

१ बेसबब क्यों हो खफा मुझसे खता कुछ भी नहीं ।
आगया वादे पे मैं जाए गिला कुछ भी नहीं ।
२ तुझ बिना घरबार लशकर है मेरे किस काम का ।
तू गई तो राज करने का मजा कुछ भी नहीं ।
३ मान ले मैना सती कहना मेरा मंजूर कर ।
याद रख प्यारी सताने में नफा कुछ भी नहीं ।

४ किस तरह जाने दूं मेरे तन की तू ही प्राण है।
मेरी नज़रों में सती तेरे सिवा कुछ भी नहीं।

३४५

मैनासुन्दरी का जवाब देना और छुड़ाना ॥
चाल—नाटक (भैरवी)-दिन रतियां ना छोड़ो संय्यां

कर हटयां ना रोको सय्यां-छोड़ो बय्यां।
हम सब तजियां साजन सखियां हां।
मैं लागूं तोरे पय्यां-छोड़ो जी कलय्यां ॥ कर० ॥
मतना सूते करम जगावे-मत मेरे जी को भरमावे।
कुछ ना हाथ आवे-हाथ ना लगा बात ना बना ॥
लोभ ना दिखा-जिया ना लुभा, हां हां हां हां हां हां हां क०

३४६

श्रीपाल का जवाब ॥
चाल - अरी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ हजारों आरजू दिल में हमारे, इक तो पूरी हो।
सती तू मान ले कहना कि मेरा हौंसला निकले ॥
२ जनम से आज तक हमने यूं ही सदमें उठाए हैं।
कभी एक दिन नहीं देखा कि दिल का मुद्दआ निकले।

३४७

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३४६)

१ नहीं होती कभी पूरी किसी की आरजू दिल की।
यह हरगिज हो नहीं सकता कि दिलका मुद्दआ निकले।

१ फंसे जो जाल दुनियां में नहीं निकले वह आखिर को ।
वही निकले मगर दुनियां से जो दामन बचा निकले ।

३४८

श्रीपाल का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३४६)

१ यह माना जोग अच्छा है बुरे हैं भोग दुनियां के ।
मगर दिल का अगर अरमां निकल जाय तो अच्छा है
२ अगरचे सार है वैराग्य दुनियां में सभी लेकिन ।
मेरे कहने से कुछ दिन को ठैर जाए तो अच्छा है ।

३४९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३४६)

१ कुमत की चाल से कोई संभल जाए तो अच्छा है ।
लगे जब दाव उस दम ही निकल जाए तो अच्छा है ।
२ हविस अरमान इन्सां के कभी पूरे नहीं होते ।
अगर दिल से खयाल इसका निकल जाय तो अच्छा है

३५०

श्रीपाल का जवाब (चाल नम्बर ३४६)

१ सुना था वज्र होता है निहायत सख्त पत्थर से ।
मगर उससे भी बढ़कर गर कोई निकले तो तुम निकले ।
२ हजारों मिन्नतें करलीं मगर तुमने नहीं माना ।
तुम्हें मैं बावफ़ा समझा था तुम तो बेवफ़ा निकले ॥

३५१

मैनासुन्दरी का जबाब (चाल नम्बर (३४६)

१ मुझे पत्थर बताओ बेवफा कह लो जो जी चाहे ।
मैं हूँ तैयार सुनने को तुम्हारा मुद्दआ निकले ॥
२ मेरी किस्मत ही टेढ़ी है किसी को दोष क्या दीजे ।
आप जैसे महरबां भी की मुझसे बदगुमां निकले ॥
३ बुरा है हाए इस दुनियां तिरिया का जनम देखो ।
कि जिसका हौंसला निकले तो इस बेकस पे आ निकले
४ मुरादें दिल की वर आवें तुम्हारा हौंसला निकले ।
कोई पहले वफा ढूंढो अगर हम बेवफा निकले ।

३५२

श्रीपाल का क्षमा मांगना ॥

चाल नाटक-(भैरवी) हाय अनाथ नाथ किससे जा कहूँ ॥

हाय मैं अबार भूल बेवफा कहा ॥टेक॥
१ प्राणों से प्यारी अय राज दुलारी-क्षमा कीजे मेरा कहा ।
किया सती जो तेरा ध्यान-मैं सिंध से पार तिरा ॥हाए०
२ दुख मेरा टारा-कुष्ट निवारा न बदला जाएगा दिया ।
कहा यह और भी मेरा मान-चल महलों में जोग हटा ॥हाए०

३५३

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल नाटक—(संकीरन भैरवी) देखूंगी मेरे अब्बा का मुखड़ा ॥

छोड़ूंगी सारी दुनियां का झगड़ा सारा सारा सारा सारा ॥
सारा जी सारी दुनियां का झगड़ा ॥ टेक ॥

१ जोग धरूंगी-ध्यान करूंगी ।
काटूंगी सारे कर्म का रगड़ा ॥छोड़ूंगी०॥
२ महल तजूंगी सेज तजूंगी ।
लेऊंगी बन पहाड़ों का बसरा ॥छोड़ूंगी०॥

३५४

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को समझाना कि तू बन में किस तरह दुख सह सकेगी
चाल—(कव्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ फकीरी का तू कामन भार यह कैसे उठाएगी ।
यह है तलवार की धारा सही तुझ से न जाएगी ॥
२ तेरा तन फूलसा कोमल सेज फूलों की सोती है ।
कठिन धरती में प्यारी नींद कैसे तुझको आएगी ॥

३५५

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३५४)

१ फकीरी का मैं सब भार अय मेरे बालम उठालूंगी ।
अगर खांडे की धारा है तो समता से बचालूंगी ।
२ महल की कुछ नहीं ख्वाइश जमीं शय्या बनालूंगी ।
विषय और भोग की बातों से दिल अपना हटालूंगी ॥

३५६

श्रीपाल का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३५४)

१ सुनो अय गुलबदन नाजुक तुम्हारा चांद सा मुखड़ा ।
तपिश से रंग उड़ जाएगा सरदी भी सताएगी ।
२ बिगड़ जाएगी सूरत आप की गरमी की लूवों से ।
छुरी ऐसी चलेगी साफ तनके पार जाएगी ॥

३५७

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर (३४५)

१ बदन मट्टी का पुतला है खयाल इसके बिगड़ने का।
न कीजे आप मैं इसकी मोहब्बत को घटा लूंगी।
अरूपी आतमा मेरी घटेगा रंग क्या इसका।
तमन्ना रूप की रंग की दूर दिल से निकालूंगी॥

३५८

श्रीपाल का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३५४)

१ कहो चमकेगी बिजली नीर मूसलधार बरसेगा।
अंधेरी रैन में प्यारी कहो तू क्या बनाएगी।
२ ध्यान घर में धरो प्यारी भूल जंगल में मत जाओ।
धर्म कामार्थ शिव गृहस्थाश्रम से क्या न पाएगी।

३५९

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर ३५४)

१ गरज बिजली पवन और नीर का भी डर नहीं मुझको
अंधेरी रैन में मैं ध्यान आपे लगा लूंगी।
२ जो मुक्ति घर में हो जाती बनों में क्यों ऋषि जाते।
यह बहकाने की बातें हैं कि सब घर ही में पालूंगी।

श्रीपाल का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३५४)

१ वनों में सांप और बिच्छू डांस मच्छर सताएंगे।
शेर चीते डरायेंगे धीर कैसे बंधाएगी॥

२ भूक और प्यास की बाधा तुझे हरदम सताएगी ।
कठिन संजम बदन कोमल कहो कैसे निभाएगी ॥

३६१

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३५४)

१ शेर चीते का क्या डर है अमर है आतमा मेरी ।
मैं भूक और प्यास को सहकर बदन अपना सधालूंगी ।
२ आप संजम के धरने का मुझे क्या डर दिखाते हैं ।
द्वादस भावना धर धीर मैं अपनी बंधालूंगी ॥

३६२

श्रीपाल ने मैनासुन्दरी का हाथ पकड़ना और समझाना ॥
चाल—नाटक मेरी मानो जी मानो क्या डर है ॥

मेरी मानो अय प्यारी सुन्दरया काहे करत हो मुझसे झगड़िया
क्या पत्थर का तेरा जिगर है नहीं होता जो कोई असर है
कहा मान हठ न ठान कर न प्यारी बन हैरान ।
मानो अय राजदुलरिया ॥ काहे करती हो० ॥

३६३

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर १६०)

छोडो २ जी मेरी अंगुरिया । मत रोको हमारी डगरिया ।
आग पत्थर जो चाहे बनालो-और जी में हो जो कुछ सुनालो
जाने दो-जाने दो—वन जाने की आज्ञा दो ।
मानो जी मानो संवरिया ॥मत रोको०॥

३६४

श्रीपाल का फिर समझाना ॥ (चाल नम्बर ३६२)

मेरी मानो अय प्यारी सुन्दरिया काहे करती हो मुझसे झगड़या
रनवास बिगड़ जावेगा-भंग राज में पड़ जावेगा।
बात बना लोभ दिखा मत मेरे जी को भरमा ॥
कीजे महर की नजरिया ॥ मत रोको० ॥

३६५

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर ३६२)

छोड़ो २ जी मेरी अंगुरिया। तम रोको हमारी डगरिया
एक मैना अगर हट जागी क्या रौनक तेरी घट जागी।
बात बना लोभ दिखा मत मेरे जी को भरमा।
तेरे हजारों सुन्दरियां ॥ मत रोको० ॥

३६६

श्रीपाल का नाराज होकर हाथ छोड़ना और राजपाट छोड़ कर उलटा जाने को तय्यार होना ॥ (चाल नम्बर ३६२)

नहीं मानों जो मेरी सुन्दरिया ॥ चलो छोड़ूं तुम्हारी नगरिया
सब राज छोड़ जाता हूँ। रनवास छोड़ जाता हूँ ॥
तुझे सब कुछ दिये जाता हूँ अरमान लिये जाता हूँ ॥
मेरे दिल को जो कलपावेगी सुख तू भी नहीं पावेगी ॥
मेरी माता जो सुन पावेगी वो सुनते ही मर जावेगी।

गुणमाला-चित्ररेखा-और प्यारी मंजूषा ।
त्यागेंगी प्राण सुन्दरिया । पड़े तेरे ते सबका सबरया । नहीं

(लौट चलना)

३६७

मैनासुन्दरी का घबराना व श्रीपाल को रोकना । राज बिगड़ने की बात को सोचकर बैराग का ख्याल छोड़ना व चरणों में गिरना और रोते हुवे क्षमा मांगना ॥

ठैरो ठैरो जी कोटीभट तुम पर वारना जी ॥टेक॥

१ तन मन धन सब तुमपर वारूं । सीस तेरे चरणों में डारूं
प्राणपति सुन ऐसी चित नहीं धारना जी ॥ठैरो०॥

२ बस अब मैं नहीं बनको जाऊं ॥ पति सेवामें ध्यान लगाऊं
सती धरम दरसा के जनम सुधारना जी ॥ठैरो०॥

३ बालम मेरी ओर निहारो । मतना मन में रोष विचारो ।
लाखों बिपत उठाई तेरे कारणा जी ॥ठैरो०॥

४ बिरहन कर्मों की मारी ॥ बारा बरस सहे दुख भारी ॥
दुखियारी कह बैठी, दोष निवारना जी ॥

३६८

चाल—(देश तान कहरवा) वारी जाऊं जी सांवरियां तुमपर वारना जी ॥
श्रीपाल का खुश होना और मैनासुन्दरी को चरणों पर से उठाना और सीने से लगाना और खुश करना और दोनों का महल में [illegible] ॥
चाल—(इन्द्रसभा) घरसे यहां कौन खुदा के लिए लाया [illegible] ॥

१ सर पे आंखों पे कलेजे बिठाऊं तुमको ।
अय मेरी प्यारी गले से मैं लगाऊं तुमको ॥

२ तू तो क्षत्राणी है फिर दुखों से क्या डरती है ।

ऐसी कायर न बनो धीर बंधाऊं तुझको ।

१ रंज को छोड़, चलो महल में शृंगार करो ।

सारे रणवास में पटरानी बनाऊं तुझको ॥

(दोनों का चला जाना और परदा गिरना)

सीन ४९
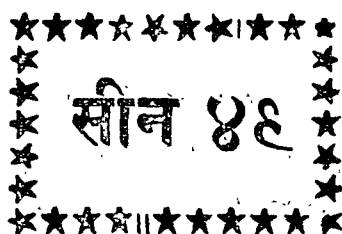
मैनासुन्दरी के महल का परदा

मैनासुन्दरी शृंगार किये हुए रंगमहल में नजर आना और श्रीपाल व मैनासुन्दरी का बातचीत करना (चाल नम्बर ३१८)

१ श्री—(हाथ पकड़ कर) होगई क्यों ऐसी कमजोर कलाई तेरी

क्या हुवा किसने यह क्या शक्ल बनाई तेरी ॥

२ मैना—महरबानी है पिया आपकी सारी यह तो ।

दे गई मुझको निशानी यह जुदाई तेरी ।

३ श्री—हो खफा किसलिए और मन में कदूरत क्यों है ।

प्यारी क्या बात है गमकी तेरी सूरत क्यों है ॥

४ मैना—पूछते क्या हो पिया हाल मेरा मेरे से ।

पूछलो दिल से मेरे दिल में कदूरत क्या है ॥

३७०

श्रीपाल और मैनासुन्दरी की बातचीत ॥

चाल—(एमन कल्याण) पढ़ादे आज की राघ और चरखे पीर थोड़ी सी ॥

१ श्री०—मैं आया हूँ सती तेरे वादे से भी पहले ।
शिकायत फिर भी गर कुछ है तो तू जी खोलकर कहले
२ मैना०—शिकायत कर नहीं सकती पिया तेरी जबां मेरी
आप सरताज हैं मेरे मैं चरणों की तेरी चेरी ॥

३७१

श्रीपाल का मैनासुन्दरी से हाल पूछना ॥

चाल—(इन्द्रसभा) अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

१ सती तू जरा मुझको यह तो बता ।
मेरे बाद क्या हाल तेरा रहा ॥
२ रही खुशी या गम में कटे रात दिन ।
सुना मुझको सब हाल अय गुलबदन ॥

३७२

मैनासुन्दरी का हाल बताना ॥

चाल—(ठुमरी सिंध भैरवी) कटत नहीं सजनी पिया बिन सगरी रैन ॥

गिनत तारे कटती पिया बिना सगरी रैन ।
देखो पिया सच मानो मोरे बैन ॥गिनत०॥ टेक ॥
१ काहु न मेरी धीर बंधाई-हम बिपत उठाई ॥
निश दिन सावन जिम दोनों झरत नैन ॥गिनत०॥
२ हार शृंगार तन मन से हटाओ-चन जल न सुहायो ॥
हमरे बालम बिन नहीं पड़त चैन ॥गिनत०॥

३७३

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को तसल्ली देना और दोनों का दरबार को जाना।

चाल—(यमन कल्याण) बढ़ादे आज की शब और चर्खे पीर थोड़ी सी ॥

१ हंसो बोलो जरा रंजो गम दिल से हटा करके।
गई बातों को जाने दो जरा धीरज बंधा करके।
२ मैं था लाचार अय प्यारी खता मेरी क्षमा कीजे।
नहीं कुछ मैं भी सुख पाया तुझे बिरहन बना करके ॥
३ मुसीबत जो सही मैंने सती परदेश में जाकर।
सुनाऊंगा तुझे सारी सरे दरबार जा करके।
४ मेरी माता को लेकर अब सती दरबार को चलिये।
नजारा अपनी किस्मत का जरा देखा तो आकर के।

दरबार को जाना और परदा गिरना

सीन ५०

श्रीपाल के लशकर व दरबार का परदा

३७४

श्रीपाल के लशकर में दरबार का नजर आना और परियों का मैनासुन्दरी के आने की मुबारकबाद गाना ॥

चाल—(नाटक) बादे बहारी धाके पुकारी गुल की सवारी आती है ॥

१ आज सियानी मैना रानी धर्म निशानी आती है।
सुन्दर सूरत मोहनी मूरत सब मन मानी आती है ॥
२ सुन जिनवानी निश्चय ठानी सब विधि जानी, आती है

पर सियानी है लासानी अमृत बानी आती है।

३ कोटीभट की है महाराणी वन इन्द्राणी आती है।

तन मन धन सब करदो अर्पण सब सुखदानी आती है

३७५

श्रीपाल का मैनासुन्दरी व माता के साथ दरबार में पहुँचना और सब दरबारियों का खड़ा होकर विनय करना और तीनों का सिंहासन पर बैठना (माता का दांई तरफ और मैनासुन्दरी का बांई तरफ व श्रीपाल का बीच में) और श्रीपाल का सब रानियों को बुलाना (वार्तालाप)

श्री०—अरे दरबार जाओ हमारी सब राणियों को सुनादो कि दरबार में आवें और हमारी माता और मैना-सुन्दरी को प्रणाम करें।

दर०—बहुत अच्छा महाराज।

(दरबार का जाना)

श्री०-अय माता देखिये दांई तरफ हमारे मंत्री साहिब हैं और बांई तरफ सेनापति साहिब हैं और यह सब दर-बारी लोग हैं।

३७६

नोट--दरबार और सब रानियों का बारी बारी आना और श्रीपाल का अपनी माता व मैनासुन्दरी को प्रणाम [illegible] सुनाना और सब रानियों का [illegible] और मैनासुन्दरी को प्रणाम करके सिंहासन के नीचे कुर्सी पर बैठ जाना ॥

३७७

दरबान का आना और कहने लगना (वार्तालाप)

महाराज राणी जी तशरीफ लाती हैं ॥

३७८

रैनमंजूषा का आना और श्रीपाल का हाल बताना (वार्तालाप)

हे माता मैं आपसे रुखसत होकर एक बन में पहुँचा जहां एक पुरुष का मंत्र सिद्ध करके आगे चला। रास्ते में अपने पावों से मैंने धवल सेठ का जहाज चलाया उसने मुझको अपना धर्म का बेटा बनाया जहाज पर सवार होकर धवल सेठ के साथ आगे बढ़ा समुद्र में एक लाख चारों को बांधा हंसद्वीप पहुँचकर सहस्त्रकुट चैत्यालय को खोलकर दिखाया और इस सती रैनमंजूषा को ब्याहा ॥

(रैनमंजूषा का सास और मैनासुन्दरी को प्रणाम करके बैठ जाना)

३७९

गुणमाला का आना और श्रीपाल का हाल बताना

रैनमंजूषा को साथ ले आगे चला रास्ते में एक दिन धवल सेठ रैनमंजूषा से आसक्त हुआ उसने धोका देकर मुझको समुद्र में गिराया। चक्रेश्वरी जैनदेवी ने आकर रैनमंजूषा के शील को बचाया। हे माता मैं आपके चरणों की कृपा और अपनी भुजाओं के बल से समुद्र चीर कर कुमकुम द्वीप में आया और इस राजकुमारी गुणमाला को ब्याहा ॥

(गुणमाला का प्रणाम करके बैठ जाना)

एक दिन धवल सेठ और रैनमंजूषा का जहाज कुम कुम द्वीप में आया और धवल सेठने मुझको भांड का लड़का कहकर राजा से शूली का हुक्म दिलाया गुणमाला उस

मुसीबत में मेरे पास आई रैनमंजूषा ने मेरी असलियत बताई । राजा खुद दिल में शरमिन्दा हुआ और बजाए मेरे धवल सेठ को शूली का हुक्म दिया मैंने सिफारिश करके धवल सेठ को रिहा कराया मगर वह आप अपनी करनी पर पश्चाताप करता हुआ मर गया ॥

३८०

(चित्ररेखा का आना और श्रीपाल का हाल बताना

हे माता यह राणी चित्ररेखा कुन्दनपुर के राजा की राजदुलारी है और मेरी प्राण प्यारी है ।

(चित्ररेखा का प्रणाम करके बैठ जाना)

३८१

विलासमती का आना और श्रीपाल का हाल बताना ॥

यह कंचनपुर के राजा वज्रसेन की विलासमती राजकुमारी है जो सबको आनन्दकारी है । हे माता इस तरह से कुछ दिन कुमकुमद्वीप में राज किया और आपकी कृपा से सब प्रकार सुख भोगा ॥

(विलासमती का प्रणाम करके बैठ जाना)

३८२

श्रीपाल का सब रानियों को मैनासुन्दरी का हाल बताना और इसको पटरानी बनाने की इच्छा जाहिर करना ॥ ([illegible])

अब मेरी प्यारी राणियो यह वही सती मैनासुन्दरी है जिसने मेरे कुष्टको हटाया मुझको मरने से बचाया । पिता का जुल्म सहती हुई घर बार से मुंह मोड़ा मगर अपने

सम्यक्त्व और कर्म के निश्चय को न छोड़ा। मुसीबत में पती का साथ देकर पतिव्रता धर्म को दिखाया जैन धर्म का क्शमा दिखाकर सतियों में नाम पाया ॥

शैर-१ गर इसी सती का मेरी तरफ ध्यान न होता।
तो आज इस दरबार का निशान न होता।
२ अहसान का इसका हमारे सर पे भार है।
इसपे हमारा जानोमाल सब निसार है।

मैं चाहता हूँ आज इस सती को महाराणी का ताज पहनाऊं और सारे रनवास में इसको अपनो पटरानो बनाऊं।

३८३

सब राणियों का मैनासुन्दरी को पटराणी मानना और नमस्कार करना और फूल बरसाना ॥

चाल—(नाटक) गावोरी सब मिलके बधय्याँ ॥

आवोरी सब मिलके सजनियां।
मैनासती को सीस नवाओ। हंस हंस के फूल बरसाओ री हरषाओरी-जस गावोरी। सब मिलके० ॥टेक॥

१ सतियों में सार है-महिमा अपार है ॥
सबका विचार है-मैना पटनार है ॥
२ सबकी सरताज है-सतियों की लाज है।
शुभ दिन यह आज है-सबको सुखकार है ॥
३ जोवन नवीन है जिन धर्म लीन है।
विद्या प्रवीन है—जय जय जयकार हो ॥आवो०॥

३८४

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना

१ कौन कहता है मुझे मैं पटके लायक नार हूँ ॥
मैं तुम्हारी खाके पा और सबकी तावेदार हूँ ॥
२ यह महाराजों की कन्या इस जगह मौजूद हैं ।
मैं तो एक छोटे से राजा की सुता नाकार हूँ ।
३ मैं जो कुछ होती तो रुसवाई मेरी होती नहीं ।
मत मुझे नादिम करो किसमत से मैं लाचार हूँ ।
४ याद करलो बाप ने कैसी मेरी इज्जत करी ।
ताज के लायक नहीं ना राज की हकदार हूं ।

३८५

श्रीपाल का जवाब देना मैनासुन्दरी को पटरानी का मुकुट पहनाना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ।

१ प्राण प्यारी और हमारी महरबाँ तू ही तो है ।
बानी इस इजलास की हां बेगुमां तू ही तो है ॥
२ कुष्ट मेरा दूर करता कौन था किस की मजाल ।
कुष्ट हरता जैन यज्ञ की मंत्रकर्त्ता तू ही तो है ।
३ तू सती जिन धर्म की महिमा दिखाई आपने ।
इस हमारे राज का नामो निशां तू ही तो है ॥
४ ताज पहनाता हूँ तुझको आज पटरानी का मैं (ताज पहनाता है)
मेरे सब रनवास की मालकिनी तू ही तो है ।

३८६

परियों का मुबारकबाद गाना ॥

चाल—(नाटक) मुबारकबादी गावो शादी शहजादे की ।

बोलो प्यारी जय जयकारी अब पटरानी की ।
यह मैनारानी की है ॥ क्या प्यारी प्यारी राजदुलारी—
धर्म निशानी की ॥बोलो०॥
राजधरा में-आज़ सभा में-चीर बंधा पटरानी का ।
कोटीभट की है मनमानी ॥ कलियां-खिलियां ॥
खुशियाँ मचियां ॥ सब सुखदानी की ॥बोलो०

३८७

मैनासुन्दरी का अरदास करना (शेर)

अय महाराज एक और अरमान बाकी रह गया ।
हो अगर मंजूर तो खोलूं जबान अपनी जरा ॥

३८८

श्रीपाल का जवाब (शेर)

आपकी खातिर मुझे मंजूर है फरमाइये ।
कौनसा अरमान बाकी रह गया बतलाइये ॥

३८९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

१ एक दफा मेरे पिता को यहां बुलाना चाहिये ।
और उन्हें जिन धर्म का निश्चय कराना चाहिए ॥
२ था घमंड उनको बहुत अपना बड़ी तदबीर का ।
उनके झूठे मान को सर से गिराना चाहिए ॥

३ वह जो कहते थे कि देखेंगे तेरी तक़दीर को।
अब मेरी तक़दीर का जलवा दिखाना चाहिए।

३६०

श्रीपाल का मंजूर करना ॥ (शेर)

आप जो चाहें वही करना मुझे मंजूर है।
हर तरह प्यारी तेरी खातिर मुझे मंजूर है।

३६१

श्रीपाल का दूत भेजना ॥ (वार्तालाप)

श्री—अय दूत जाओ ! राजा पहुपाल को हमारी तरफ़ से दरबार में आने के लिए आज्ञा दो।

दूत—बहुत अच्छा महाराज की जो आज्ञा हो।

(प्रणाम करके रवाना होना)

३६२

श्रीपाल और मैनासुन्दरी का बातचीत करना ॥ (वार्तालाप)

श्री—हे सती मैनासुन्दरी देखो पहुपाल आपके पिता और हमारे धर्म के पिता हैं हमको उनसे विनय पूर्वक मिलना उचित है।

मैना-महाराज जैसी आपकी आज्ञा होगी वैसा ही होगा।

३६३

दूत का आना और श्रीपाल से अर्ज करना ॥ (वार्तालाप)

(प्रणाम करके) हे महाराज राजा पहुपाल तशरीफ़ लाते हैं।

३६४

राज पहुपाल का तशरीफ लाना और श्रीपाल व मैनासुन्दरी का खड़े होकर विनय पूर्वक मिलना। राजा पहुपाल का दोनों को न पहिचानना और हैरत से देखना और मैनासुन्दरी का पूछना॥

चाल—क़त्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना॥

१ आंख उठाकर देखिए यह कौन है मैं कौन हूँ।
सोचकर फरमाइये यह कौन है मैं कौन हूँ॥
२ हाल क्या है आपका और किस लिए हैरत में हो।
होश कर बतलाइये यह कौन है मैं कौन हूँ॥
३ कौन से राजा हैं यह और किसका यह दरबार है।
गौर कर जितलाइये यह कौन है मैं कौन हूँ॥
४ हुक्म किसका तुमने माना शर्ण किसके आए तुम।
कुछ भी देखा आपने यह कौन है मैं कौन हूँ।

३६५

राजा पहुपाल का जवाब॥ चाल—अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ॥

१ कहूँ क्या कि हैरत में आया हूँ मैं।
मुसीबत का इस दम सताया हूँ मैं॥
२ परेशानी दिल पर मेरे छा गई।
मेरी अक्ल एक दम से चकरा गई।
३ चकित हो गया देख परताप को।
नहीं मैंने पहचाना है आपको॥
४ नहीं बात मुझको जो कुछ भी कहूँ।
ना ताकत कि सर अपना ऊपर करूं॥

३६२

मैनासुन्दरी का अपने पिता के चरणों में गिरना और कहना।

चाल—मैं वही हूँ प्यारी शकुन्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

१ मैं वही हूँ मैना सितमज़दा तुम्हें याद हो कि न याद हो।
जिसे तुमने घरसे जुदा किया याद हो कि न याद हो ॥

२ मेरा मान तुमने गिरा दिया मुझे जाके कुष्टीसे ब्याह दिया
नहीं रहम दिल में जरा किया तुम्हें याद हो कि न यादहो

३ मेरी मात ने भी अरज करी पर एक तुमने नहीं सुनी
वह तो रो रही थी न चैन थी तुम्हें याद हो कि न याद हो

४ नहीं माना कर्म को आपने नहीं जाना धर्म को आपने
किया मान अपने यत्न का तुम्हें याद हो कि न याद हो

५ मेरे गुरुको तुमने बुरा कहा मैंने सुनके मनमें वह दुख सहा
जो जुबां से जाय नहीं कहा तुम्हें याद हो कि न याद हो

६ अजी तुमने मेरे से वह किया जो कभी किसी ने नहीं सुना
कि ख्याल मेरा नहीं किया तुम्हें याद हो कि न याद हो

७ मुझे मांग जिसको गए थे तुम यह वही है देखो तो पुण्य नग
जिसे कुष्ट जारी था जो बजा तुम्हें याद हो कि न याद हो

८ कहो अब भी आया तुम्हें यकीं कभी कर्म टारे टरें नहीं
कहो आपने था यही कहा तुम्हें याद हो कि न याद हो

९ जरा जैन धर्म की लो शरण कभी बोलो मुंह से न वह सखुन
मुझे दुर्वचन जो सुनाया था तुम्हें याद हो कि न याद हो

३ नहीं करते जो तुम मनमानी ॥ किम होती मैं पटरानी ॥
इस कोटीभट की रानी जी ॥ बेटी की०॥

३९९

राजा पहुपाल का मैनासुन्दरी से उज्जैन आने के लिये कहना ॥

चाल—(इन्द्रसभा) अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ

१ सुनो बेटी मुझको नहीं कुछ ख्याल ॥
मैं हूँ अपनी करनी पे नादिम कमाल ।
२ जो कुछ रंग है दिल से तू दूर कर ।
मेरा एक कहना तू मंजूर कर ।
३ गमन यहां से उज्जैन को कीजिये ।
दरश अपनी माता को भी दीजिये ।
४ वह गम में तेरे बेटी बीमार है ।
तेरी याद में सारा दरबार है ।

४००

मैनासुन्दरी का उज्जैन जाना मंजूर करना ॥

चाल—(कवाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ दिलो जां से पिताजी का हुक्म मंजूर है मुझको ॥
नहीं जी मानता गरचे वले मंजूर है मुझको ।
२ पिता हैं आप मेरे आपकी नाकार बेटी हूं ।
मुझे जो चाहो सो कहलो वही मंजूर है मुझको ।
३ मैं हूँ नादिम मेरे कारण हुवा चरचा तेरा जग में ।
जो जी चाहे सो ही कीजे बदिल मंजूर है मुझको ॥

४ सजावारे सज़ागर हूँ तो दे दीजे सज़ा मुझको ।
सरे तसलीम खम है हर सजा मंजूर है मुझको ॥
५ पती श्रीपाल को लेकर तेरे दरबार आऊंगी ।
हुक्म कुछ और हो फरमाईये मंजूर है मुझको ।

(परदा गिरना)

सीन ५१

उज्जैन के राजा पहुपाल के दरबार का परदा

४०१

नोट—राजा पहुपाल ने मैनासुन्दरी से प्रसन्न होकर उज्जैन में आकर श्रीपाल व मैनासुन्दरी की आमद में दरबार दिया ॥

४०२

राजा पहुपाल व रानी निपुण सुन्दरी व सुरसुन्दरी व सब दरबारियों का दरबार में बैठे हुवे नजर आना और दरबान का आकर खबर देना ॥

(दरबान)

महाराज के चरणों में प्रणाम आज महाराज कोटीभट श्रीपाल मए महासती मैनासुन्दरी के दरबार में तशरीफ लाते हैं ।

४०३

परियों का मुबारकबाद गाना ॥ चाल – (नाटक) [illegible]

मैनासुन्दरी का धन्यवाद गाना ॥

सर को झुका झुका झुका ॥ मैना० ॥ टेक ॥

१ आती है वह सती शिरोमण। जिसको दिया-कुष्टी से व्याह
जिसके दुख का नहीं था ठिकाना ॥सरको०॥
२ यज्ञ रचाकर ध्यान लगाकर ॥ छिन में दिया कुष्ट मिटा ॥
बना जैसे कि इन्द्र समाना ॥सरको०॥
३ उसके लिए दरबार लगा है ॥ माता पिता-छोटा बड़ा
सारे गाते हैं गुण उसके नाना ॥सरको०॥

४०४

श्रीपाल व मैनासुन्दरी का मय गुणमाला व रैनमंजूषा व सैनापती के दरबार में आना। सब दरबारियों का जय जयकार करना व फूल बरसाना॥ श्रीपाल मैनासुन्दरी व रानियों का निपूणा सुन्दरी को प्रणाम करना निपूणासुन्दरी का सबको गले लगाना। सुरसुन्दरी (मैनासुन्दरी की बड़ी बहन) का मैनासुन्दरी को गले लगाना। राजा का श्रीपाल व सुरसुन्दरी को व निपूणासुन्दरी को सिंहासन पर बिठाना और सब रानियों का सुरसुन्दरी का नीचे कुरसियों पर बैठना और परियों का धर्म की और मैनासुन्दरी की महिमा वर्णन करना॥

चाल—(गजल) कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना॥

१ सत धरम जिनराज का है इसकी महिमा देखलो।
देखलो करमों की है यह कैसी महिमा देखलो॥
२ देखलो श्रीपाल को जो कुष्ट से लाचार था।
जिन धर्म सिद्ध चक्र की है प्यारी महिमा देखलो।
३ मैनासुन्दरी है वही कुष्टी से जिसको व्याह दिया।
शील की महिमा सती की भारी महिमा देखलो॥
४ सेठ जी ने रैनमंजूषा को देखा बद नजर।
वह पड़ा है नर्क में कर्मों की महिमा देखलो॥

४ धर्म ही है सार जग में धर्म का निश्चय करो ।
धर्म के प्रताप की है सारी महिमा देखलो ।

४०५

राजा श्रीपाल का मैनासुन्दरी से धर्म उपदेश के लिये प्रार्थना
करना ॥ (वार्तालाप)

हे मेरी मैनासुन्दरी सती शिरोमणी मैंने झूठा तदबीर का दावा किया और तुझको दुख दिया । अब मैं अपनी मिथ्या बात पर पछताता हूँ और तेरी श्रीमानता पर निश्चय लाता हूँ । हे मेरी आँखों की पुतली और मेरे कुल को उज्ज्वल करने वाली कुछ धर्म का उपदेश सुनाओ और मुझको धर्म मार्ग में लगाओ ।

४०६

मैनासुन्दरी का धर्म उपदेश देना और सब को जैन धर्म का और
कर्मों का निश्चय करना ॥

दोहा-सकल ज्ञेय ज्ञायक सदा हित उपदेशक सार ।
वीतराग जिनराज को नमों सो बारम्बार ॥

चौपाई १६ मात्रा (रामायण)

१ जगत विषे यह जीव अपारा । दुख से डरें चहें सुख सारा
पर नहीं काम करें सुख कारा । कर विषय भोग लहें दुख भारा
२ पी मद मोह भ्रमे जग माहीं । निज सरूप कभू चेतत नाहीं
और तत्त्व सत्य मन नाहीं । कर मिथ्यात कुगत गत जाहीं
३ जैन धरम जगमें सुखकारी । अन्य सभी जानो दुखकारी ।

मो अब सुनलो सभी नरनारी। हो भव भव सुख करतारी।
४ सात तत्व जीवादिक जानो। यह ही प्रयोजन भूत बखानो।
इनही को निश्चय मन आनो। और सकल मिथ्या कर मानो।
५ दर्शन ज्ञान चरण चित लाओ। रागद्वेष सब दूर हटाओ।
छोड़ अशुभ सब भावना भावो। फिर दोऊ छोड़ शुद्ध पदपावो
६ स्याद्वाद मुद्रित जिनवाणी यह बाणी तिरभुवनमें मानी।
सत्यरूप और धर्म निशानी। ध्यावें सब सुरनर मुनि ज्ञानी॥
७ हैं दस लक्षण धर्म बताए। सोही जिन शासन में गाए
जब यह धर्म जीव चितलाय। तब ही वह सुर शिवपद पाए।
८ आकिंचन मत धर्म सुनीजे। संजम शौच सरल मन कीजे
ब्रह्मचर्य्य तप त्याग करीजे। मार्दव भाव क्षमा धर लीजे।
९ धर्म मात पितु बंधू भाई। धर्म बिना नहीं कोई सहाई।
धर्म देत सम्पत प्रभुताई। योग पुत्र नारी सुखदाई।
१० धर्म तजे सो सदा दुखपावे। बैरी सम भाई हो जावे।
नारी धन सुत हीन कहावे। दुख से मर दुर्गत में जावे।
११ पाप और पुन्य करे जो कोई। जग में कर्म कहावे सोई।
करता हरता और न कोई। कर्म गति जो हो सोई होई।
१२ ताते धर्म करो नरनारी। संकट मोचन सुख करतारी।
तन धन लाज राज सुखकारी। एक धर्म पर दो सबवारी।

४०७

परियों का जैन धर्म की महिमा वर्णन करना और परदा गिरना

चाल—(नाटक) जैसी करनी वैसी मरनी निश्चय नहीं तो कर कर देख।

हैं जिनवानी-सब सुखदानी-निश्चय नहीं तो पढ़कर देख।

है हितकारी-दुख परिहारी-है सुखकारी सुनकर देख ।
संकट मोचन-निर्भय लोचन-रहित विदूषन-हितकर देख ।
है न बखान-पार-संसार होजा-नेक हिय में धर कर देख ॥
हिरदे में जो धरे-जग से सुगम तिरे ।
सब दुख को परहरे—पशु नर्क गत टरे ।
पद मन में सार है—महिमा अपार है ॥
जय जय जयकार है-तनमन निसार है ॥ पढ़कर देख०॥

सीन ५२

श्रीपाल के दरबार का परदा

४०८

श्रीपाल व मैनासुन्दरी उज्जैन से विदा होकर अपने दरबार में आए ॥

एक दिन श्रीपाल का अपने देश चम्पापुर को याद करना और मैनासुन्दरी से चलने का इरादा जाहिर करना ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

१ मेरा चम्पा नगर प्यारा मुझे अब याद आता है ।
जनम भूमि मेरी परजा मेरा घर याद आता है ।
अगरचे मिल गई हशमत बना राजों का मैं राजा ।
मगर मुझको वतन मेरा अभी तक याद आता है ।
२ भला किस काम का वह सुत जो चक्री भी हुआ तो क्या
नहीं भोगा पिता का राज सो वह याद आता है ।

४ प्रभू कीजो मदद मेरी हरो चिन्ता मेरे दिल की।
हमें हर दम वतन चम्पा हमारा याद आता है।
५ वतन के सामने है हेच राज और पाट दुनियां का।
ये सच है कि वतन अपना सभी को याद आता है।
६ मेरी प्यारी सती मैना कहो क्या आपकी मंशा।
मेरा लगता नहीं है जी यहां घर याद आता है।

४०६

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (शेर)

मुनासिब और मुबारक बात यह तुमने विचारी है।
वही मंशा हमारी है जो कुछ मंशा तुम्हारी है।

४१०

श्रीपाल का कूच करने का हुक्म देना ॥ (वार्तालाप)

श्री०-मंत्री साहिब हमारी चम्पापुर जाने की मंशा है ॥
फौरन चलने का इन्तजाम किया जाय।
मंत्री-बहुत अच्छा महाराज फौरन हुक्म की तामील होगी।
दरबान-(प्रणाम करके) महाराज सेनापति साहिब तशरीफ लाते हैं।
सेनापति—(तलवार की सलामी देना)
श्री०-सेनापति साहिब हमारा चम्पापुर जाने का इरादा है फौरन तमाम लशकर तय्यार हो जाए और चम्पापुर की तरफ रवाना किया जाय।
सेना०-बहुत अच्छा सरकार आज ही कूच का हुक्म देता हूँ

सीन ५३

श्रीपाल की सैना का परदा

३६५

श्रीपाल का सैना सहित चम्पापुर के करीब पहुँचना और मंत्री से बातचीत करना ॥

श्री १-अय मंत्री चम्पापुर नगर करीब है तमाम सेना को तैयार करो और नगर में प्रवेश करो ।

मंत्री—हे महाराज जरा गौर फरमाइए कि महाराज कोटीभट श्री वीरदमन आपके चाचा अभी तक आपको लेने को नहीं आए हैं इससे मालूम होता है कि उन को कुछ गरूर है और आपको उलटा राज देने में उजर है मुनासिब है कि पहिले एक दूत को भेजा जाए ताकि जो असलियत है वह खुल जाए ।

श्री०-बेशक आपकी राय माकूल है (दूत की तरफ देखकर) अय दूत फौरन महाराज वीरदमन के पास जाओ और हमारी तरफ से निवेदन करो कि वे हमसे आकर मिलें और हमारा राज हमको दें ।

दूत—बहुत अच्छा महाराज जो महाराज की आज्ञा हो ॥

(दूत का जाना सैना)
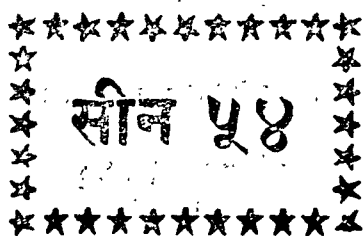
सीन ५४

बीरदमन के दरबार का परदा

४१२

दूत का बीरदमन के दरबार में पहुँचना ॥ (वार्तालाप)

अय महाराज बीरदमन ताजवर-अय बहादुर कोटीभट नामवर, अय महाराज अरीदमन की दाहिनी भुजा, अय महाराज श्रीपाल के बहादुर चचा, आज महाराजा अधिपति कोटीभट श्रीपाल समान चक्रवर्ती अपने दलबल के साथ तशरीफ लाए हैं चम्पापुर के क़रीब पड़ाव किया है और आपके लिए संदेशा दिया है।

४१३

बीरदमन का जवाब (वार्तालाप)

अय दूत कहिये श्रीपाल का क्या हाल है और क्या ख्याल है। किसलिए इधर का इरादा किया है और क्या संदेशा दिया है।

४१४

दूत का जवाब ॥

हे नाथ महाराज श्रीपाल इस तमाम भूमंडल के शहंशाह की शान हैं दुष्ट और मगरूर राजाओं के लिए मानो काल के समान हैं ॥ पहले जो उनके तन में रोग था वह सब दूर हुआ तमाम बदन जलवाए पुरनूर हुआ ॥ हजारों राजाओं को जीत

उनकी राजकुमारियों को व्याह कर लाए हैं, चतुरंग सेना को साथ लेकर अपने देश में आए हैं।

शेर-१ कुमकुम नगर राव को भी जेर किया है।
कब्जे में हंसद्वीप और लंका को लिया है॥
२ सोरठ का देश मरहठ और गुजरात को लिया।
पाटन ईरान चीन को है जेरे पा किया॥
३ जीता है जा उज्जैन को काबुल कंधार को।
फतह किया है उसने सारी मारवाड़ को।
४ नरपार देश पांडु में कदम अपना जमाया।
कुछ तुर्क और जापान को अधीन बनाया॥
५ सब रूम शाम रूस भी कब्जे में आगये।
इकबाल है कि आपसे आ सर झुका गए।

हे राजन उस वरवीर कोटीभट श्रीपाल ने अनेक राजाओं को अपने चरणों में गिराया है और उनकी राज कन्याओं को अपनी राणी बनाया है॥

शेर-१ गरचे वह श्रीपाल चक्रवर्त है नहीं।
पर बल में दल में आज वह चक्री से कम नहीं॥
२ अय नाथ श्रीपाल ने यह बात कही है।
खिदमत में दस्तावस्ता यही अर्ज करी है।
३ आ प्यार मोहब्बत से मुलाकात कीजिये।
कुछ और ख्याल अपने नहीं दिल में कीजिये।
४ तुम बाप के समान हो मैं पुत्र तुम्हारा।
लाजिम है तुम्हें दे दो हमें राज हमारा॥

४१५

वीरदमन का जवाब ॥

अय दूत तू बड़ा गुस्ताख है जो हमारे सामने ऐसे सख्त कलाम कहता है ॥ तेरा राजा अभी तक बच्चा अक्ल का कच्चा है जो राज के लिए हमसे दरख्वास्त करता है।

शेर-१ अरे मूर्ख कहीं ये राज भी मांगे से मिलता है।
बिना शमशीर चमकाए नहीं हरगिज यह मिलता है।
२ हकूमत के लिए गुरु को पिता को मार देते हैं।
सजन को नार को सुत को सभी को वार देते हैं।
३ गवां देता है जान अपनी भी इन्सां राज की खातिर।
बता मैं किस तरह देदूं फकत उसकी अर्ज सुनकर।

अरे दूत तू भी बड़ा मूर्ख है जो ऐसे नादान राजा की दरख्वास्त को लेकर हमारे सामने आया। देखो यह राज और सलतनत का मामला बड़ा टेढ़ा होता है इसमें बाप बेटे का भी भरोसा नहीं होता।

शेर-१ किया नहीं भर्तचक्री ने भी टाला।
राज के वास्ते भाई निकाला ॥
२ विभीषण ने राम की तरफ आके।
कत्ल करवा दिया रावण को जाके ॥
३ कोरूं पांडू भिरे इसी ही की खातिर।
लड़े आपस में वह इसी ही की खातिर ॥

जाओ २ उस श्रीपाल से कहदो कि अगर कुछ जान है तो मैदान में आए-भुजाओं का बल दिखलाए-

सामने आकर शमशीर चमकाए-अपने राज का दावा जीत-लाए। जब तक दोनों तरफ से संग्राम न होगा-हरगिज राज का फैसला न होगा।

४१६

दूत का जवाब ॥ (चाल—उधवगा)

१ चाल न जान अरे नृप को, प्रचंड अखंड प्रचंड बड़े हैं।
फौज प्यादे इते संगमें, जैसे टिड्डीके दल कहीं आन पड़े हैं।
२ या सम और न राजा कोई, महिमंडल के नृप पाए पड़े हैं।
देश नगर सब उजाड़ दिये, वाके जो नर मूरख आन अड़े हैं।
दोहा-याते राजा छोड़ कर निज दलबल का मान।
जल्दी यहां से चालिए, धरा सीस पर आन।
शेर-राज श्रीपाल को दीजे कि यह उसकी अमानत है।
तेरा इंकार करना यह अमानत में खयानत है॥

४१७

वीरदमन का कोप करना और जवाब देना ॥

अरे गंवार दूत कहां वह श्रीपाल कलका लड़का नातजरबेकार
बुद्धिहीन और कहां मैं कोटीभट युद्ध विद्या में प्रवीण।
शेर-१ हमारे देव बल को इन्द्र भी कांप जाते हैं।
हजारों देवता आकर चरण में सर झुकाते हैं।
२ मैं जिस दम म्यान से तलवार अपनी को निकालूंगा।
तो इकही वार में मार उसको मैं धरनी में डालूंगा।
३ हमारे सामने श्रीपाल हरगिज टिक नहीं सकता।
अकेला मैं दल में और बल में बराबर हो नहीं सकता।

४१८

दूत का जवाब (शैर)

१—सब राज पाट छोड़दे मत कर गुमान तू ।
यह मुफ्त की लड़ाई न बस हमसे ठान तू ॥
२—कब तक लड़ेगा देख तू फौजे अजीम से ।
यह जुरअतें बईद हैं मर्दे फहीम से ॥
३—गर तू है कोटीभट तो हां वह भी है कोटीभट ।
बल्के है वह तो देख कोटीभट का कोटीभट ॥
४—यह बात जो सुन पाए तेरा सर कलम करे ।
हस्ती तेरी रवानए मुल्के अदम करे ॥
५—लाजिम है तुझको जल्दी से चल करके प्यार कर ।
तकरार छोड़ और सुलह अखतियार कर ॥

४१९

बीरदमन का जवाब ॥

अय नाबकार नाहंजार—

शेर-१ चाहता हूँ काट सर तेरा जमीं में डार दूं ।
क्या करूं मैं राजनीति से मगर लाचार हूँ ॥
२ मेरे दरबार में श्रीपाल की तारीफ करता है ।
हमारे शान शौकत की तू यों तोहीन करता है ॥
३ मरा जब बाप उसको मैंने ही हाथों से पाला था ।
हुवा जब कुष्ट तब मैंने उसे घर से निकाला था ॥
४ आज क्या हमसे वह यों हमसरी करने को आता है ।
जा कहदे क्यों हमारे हाथ से मरने को आता है ॥

४२०

दूत का जवाब ॥

हे नाथ मान न कीजे—

शेर-१ मान करना चाहिये हरगिज नहीं इन्सान को ।
तीर को देखा है हमने सर के बल गिरता हुवा ॥
२ मान सूरज करता आकाश में चलते हुए ।
शाम को देखा उसी को आड़ में छुपते हुए ॥
३ बात जो मानी नहीं रावण ने अपने मान से ।
देखलो मारा गया यह एक लखन के बाण से ॥
४ जब जरासिंधराय को कुछ मान दिल में आगया ।
करदिया श्रीकृष्ण ने एकदम से सर उसका जुदा ।
५ इसलिये तुमको न इतना मान करना चाहिये ।
सब हुक्म श्रीपाल का माथे पे धरना चाहिये ।

४२१

वीरदमन का जवाब ॥ (शेर)

१ हासिल है हमको आज जमाने में सरवरी ।
चारों तरफ से पृथ्वी हमने फतेह करी ॥
२ आवाज आ रही है शहे वीरदमन की ।
और धाक पड़ रही है शहे वीरदमन की ॥
३ जा कहदे श्रीपाल से गर जां में जान है ।
सीने में अगर दिल है और तरकश में बाण है ॥
४ तो आके सामने लड़े रण कार जार में ।
वरना न मुंह दिखाए कभी इस दयार में ॥

४२२

दूत का जवाब (शैर)

१—जो तू तजरबेकार है और होशियार है।
बल भी है, तेग हाथ में भी आबदार है।
२—पर आपके इकबाल का अब इख्तताम है।
बस आवो ताब आपकी सारी तमाम है॥
३—श्रीपाल के इकबाल को यह पहली रात है।
इस वास्ते समझले फतेह उसके हाथ है॥
४—यूं खाने जंगी करना जहालत का काम है॥
मालिक से सर फिराना हिमाकत का काम है॥
५—करनी बहादुरों को जलालत न चाहिये।
हरगिज भी अमानत में खयानत न चाहिये॥
६—कोई भी इस में आपका हामी न बनेगा।
यह काम तेरा बाइसे बदनामी बनेगा।

४२३

बीरदमन का कोप करना और दूत को निकाल देना (वार्तालाप)

शेर-बस बस जुबान बन्द कर यह बात छोड़ दे।
वरना अय दूत जाने की अब आस छोड़ दे॥

अय दुष्ट बदकार ढीठ नाबकार क्या तुमको मोत का डर नहीं जो ऐसा बेखौफ होकर सरे दरबार हमारी निन्दा करता है। जावो दूर हो जावो हमारी नजर से और निकल जाओ हमारे दरबार से और कहदो उस श्रीपाल से कि अगर राज की खुवाहिश है तो मैदान में आए फिर जिसकी किसमत में हो राज पाए॥ (दूत का चला जाना)

श्रीपाल के लशकर का परदा

दूत का वापिस आकर श्रीपाल को हाल सुनाना ([illegible])

हे महाराज राजा वीरदमन को आपका संदेश दिया और अनेक प्रकार ऊंच नीच दिखाया उसको समझाया। साम दाम भय भेद को काम में लाया मगर उस मूरख ने आप से आकर मिलना और राज देना मंजूर नहीं किया बल्कि आमदे जंग हुआ। वह अपने दल बल का इस कदर घमंड करता है कि अपने बराबर किसी को कुछ नहीं समझता।

८२५

श्रीपाल का क्रोध करना और तलवार सूतना और लड़ाई का इरादा करना (सेनापति आदि का सामने खड़े हुए नज़र आना) ॥ [illegible])

हा ! जालसाज दगाबाज वीरदमन तूने धोका देकर मुझको चम्पापुर से निकाला और मेरे बाप के तख्त का मालिक बना। क्या अमानत में खयानत करना नामर्दों का काम है क्या धोका देना बहादुरों का काम है ॥ तूने [illegible] को बट्टा लगाया हमारे खान दान के नाम पर धब्बा लगाया ॥ अब जरा मेरे सामने मैदान में आ और अपना बल दिखा ॥

४२६

श्रीपाल का सेनापति को लड़ाई का हुक्म देना और सबका लड़ाई के लिए रवाना होना ॥ चाल—(नाटक)

(तलवार सूत कर)

१—बहादुर जंगी एक दम नंगी म्यान करो शमशीर।
बीरदमन को चलकर मारो करो नहीं ताखीर ॥
२—सब फौजें तय्यार करावो राज पूत बरबीर।
अरमन जरमन तुर्क पठान और रूस चीन कशमीर ॥
३—एकदम मिलकर चलकर घेरो नगरी और जागीर।
देव बशर जिन भूत असुर का डारो दम में चीर ॥

(सब का रवाना होना)

सीन ५६

परदा मैदान जंग

४२७

(१) श्रीलाप की फौजों का सेनापति के साथ गुजरते हुए नजर आना (२) बीरदमन की फौजों का सेनापति के साथ गुजरते हुए नजर आना ॥ (३) लड़ाई का बाजा बजाते हुए और दोनो फौजों का लड़ते हुए नजर आना (४) बीरदमन का फौज के साथ गुजरते हुए नजर आना (५) श्रीपाल का सात सौ बीरों के साथ गुजरते हुए नजर आना (६) दोनों तरफ के मंत्रियों का आपस में विचार करते हुए नजर आना और फैसला करना कि चूंकि मुआमुला घर का है इसलिये लड़ाई बन्द की जाय और श्रीपाल और बीरदमन दोनों आपस में लड़ें जो जीत जाए वही चम्पापुर का राज पाए ॥ (७) श्रीपाल और बीरदा दोनों का मैदाने जंग में आना और श्रीपाल का बीरदमन से कहना ॥

श्री०—(शान्ति से) अय चचा वीरदमन मैंने आपको अपना राज बतौर अमानत दिया था अब आप मेरा राज मुझको दें॥ अमानत में ख़यानत करना क्षत्री का कर्म नहीं है। आप मेरे पिता के बराबर हैं आप पर हाथ उठाना मेरा धर्म नहीं है।

४२८

वीर०—(गुस्से से) अरे नादान श्रीपाल तू राजनीति को नहीं जानता जब हम तुम दोनों रणभूमि में आगए तो फिर चचा और भतीजा कैसा। तूने पहले ही मेरा कहना क्यों न माना अब डरने से क्या फ़ायदा अब तू मेरे हाथ से जान बचाकर नहीं जा सकता।

४२९

श्री०—(गुस्से से) अय दग़ाबाज़ वीरदमन तूने बहादुरों के नाम को डबोया और इक्ष्वाकु वंश की शान को खोया। अब (तलवार उठाकर) यह मेरी तलवार होगी और तेरा सर होगा-अब मेरे आगे तेरा गुनाह का अपील करना लाहासिल होगा। देख कोई दम में तू मेरे हाथ से मारा जायगा और अपने किए की सज़ा पायगा। तेरी मौत का फ़ैसला अब मेरी तलवार के इशारे पर है। यह क्षत्री की तलवार है इसमें इनसाफ़

और खुशामद की आदत गई नहीं ॥ मेरे इरादों के फैसले को बदलने की हाजत नहीं ॥ लीजे वार संभालिये ॥

(वार करना)

४३०

श्रीपाल और वीरदमन दोनों का बहुत देर तक युद्ध होना ॥ आखिरकार श्रीपाल का वीरदमन के दोनों पावों पकड़ कर उठा लेना और जमीन में दे मारना ॥ देवताओं का आना जय जयकार करना, फूल बरसाना श्रीपाल के गले में फूल माला डालना, श्रीपाल की स्तुति करना और श्रीपाल से वीरदमन को छोड़ने की अर्दास करना ॥

चाल—(नाटक गुलरू जरीना) मानो पिया मोरा यह कहा ॥

छोड़ो छोड़ो शहा मूरख यह महा-तुमसे जो अड़ा ॥
जानी नहीं महिमा तेरी तूरी तू शिवगामी चर्म शरीरी ॥
तुमसे लड़ने को आना था नहीं जेबा ॥ छोड़ो० ॥
छब-मान से दूनो तेरी होवे सदा ॥
हो सदा-हो सदा-हो सदा हो-सदा हो-सदा ॥
अय जीशान-तू बलवान-तू गुणवान-यह अनजान ॥
है नादान अभय दान-दीजे दान ॥
तू लासानी, यह अभिमानी, की नादानी, तुझ से ठानी, बदगुमानी क्या ॥छोड़ो०॥

(श्रीपाल का वीरदमन को छोड़ना)

४३१

वीरदमन का जवाब ॥ (शैर)

१ मैं ताक़त आज़माई में करू था इमतिहाँ तेरा ।
सरासर हो गया झूठा वह था जो कुछ गुमां मेरा ॥

२ तू बेशक है महा जोधा दिलावर हो तो ऐसा हो ।
तेरे बल की नहीं सीमा बलीगर हो तो ऐसा हो ॥

३—तू ले अब राज अपने बाप का मुझको उज़र क्या है ।
सुरासुर होंगे सब ताबे तेरे आगे बशर क्या है ॥

४३२

श्रीपाल का जवाब ॥ (शेर)

१—बड़ा अफ़सोस है मुझको तुम्हारी होशियारी पे ॥
जवां मरदी इमांदारी तुम्हारी शहरयारी पे ॥

२—यह क्यों शरमिन्दगी बदनामी अपने सरपे ली तुमने ।
बताओ तो यह कैसी अक्लमन्दी आज की तुमने ।

३—तुम्हें लाज़िम है अब घर छोड़ धर वैराग को मन में ।
धरो जिन दिक्षा जा करके अभी एकदम किसी बनमें ।

४३३

[illegible]

१ मुझे मंजूर है जो की नसीहत आपने मुझको ।
दिखादी जाले दुनियां से छोड़न आपने मुझको ।

२ चलो पहले तुम्हारे सरपे रक्खूं ताज शाही का ।
बाद में जाके लूं दिक्षा मान तज बादशाही का ॥

[illegible]

सीन ५७

चम्पापुर के राज दरबार का परदा

४३४

चम्पापुर का राजदरबार नजर आना और श्रीपाल का मए रानियों व मन्त्री व सेनापति के दरबार में आना और परियों का महाराज श्रीपाल की आमद में मुबारकबाद गाना ॥

चाल—(नाटक) आज प्यारी देखो गुलशन में आई बहार ॥

आज प्यारी कैसी गुलशन में आई बहार ॥ टेक ॥

१ कर दिगविजय आए श्रीपाल राजा ।
रानी है सतियों में सार ॥ सार प्यारी ॥

२ रैनमंजूषा व गुणमाला प्यारी ।
मैना की महिमा अपार ॥ अपार प्यारी० ॥

३ नाचो नचय्या व गावो बधय्या ।
कर करके सोलह सिंगार ॥ सिंगार प्यारी० ॥

४ राजा को चम्पा का राज्य मुबारक ।
बोलो जय सारे पुकार ॥ पुकार प्यारी० ॥

४३५

वीरदमन का श्रीपाल के सर पर ताज रखना और आप बन में जाने को तय्यार होना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

१ कौन कहता है कि दुनियां में बड़ा आराम है ।

गौर कर देखा सरासर यह दुखों का धाम है ॥

२ जग में सुख होता तो तीर्थंकर इसे क्यों छोड़ते ।
चारों गत में देख लो सुख का कहीं नहीं नाम है ॥

३ अय मेरे श्रीपाल बेटा अय मेरे लखते जिगर ।
ताज धरता हूँ तेरे सरपे तू नेक अंजाम है ।

४ जैन दिक्षा लेने को मैं वन में जाता हूँ कहीं ।
अब मेरा इस राज से क्या वास्ता क्या काम है ॥

४३६

श्रीपाल का वीरदमन को प्रणाम करना और वीरदमन का दीक्षा लेने को वन में चला जाना ॥

चाल—(यमन कल्याण) बहादे आज की शब और चर्खे पीर थोड़ी सी

१ तुम्हें धन्यवाद है स्वामी बड़ी महिमा तुम्हारी है ।
तुम्हें धन्य है पिताजी जो वन में जाने की विचारी है ॥

२ मुझे अपना समझ करके खता मेरी क्षमा करना ।
हकूमत सब तुम्हारी है यह परजा सब तुम्हारी है ॥

३ मुबारक हो तुम्हें स्वामी परम वैराग जिन दिक्षा ।
तुम्हारे सार चरणों में धोक हरदम हमारी है ।

(वीरदमन का चला जाना)

४३७

परियों का जैनधर्म की महिमा वर्णन करना और तमाशा समाप्त होना ॥

चाल—(नाटक) ला ला ला ला कर जाम लिया गुलफाम [illegible]

जय जय जय जय-निश दिन नाम जपो भगवत का—
वना के गुणमाला ॥ जय० ॥ टेक ॥

१ शुभ दिन यह आज है—श्रीपाल राज है।
सर जिसके ताज है—आनन्द समाज है ॥जय०॥
२ सत जग सार है—महिमा अपार है।
वह जग में ख्वार है—जो मायाचार है ॥जय०॥
३ जिसने धर्म तजा—आखिर को दुख सहा।
जय धरम की सदा—सबने यही कहा ॥जय०॥
४ न्यामत धरम करो—सब पर दया करो।
हिंसा को परहरो—विषय भोग को तजो ॥जय०॥

(ड्रोप सीन)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक का
छठा ऐक्ट समाप्तम् शुभम्।

श्रीपाल का राज करना

४३८

नोट—

[१] जब श्री वीरदमन ने जिन दिक्षा लेली तो महाराज श्रीपाल न्यायपूर्वक भूमंडल का राज करने लगे और राणियों सहित इन्द्र के समान काल व्यतीत करने लगे परन्तु हर वक्त धर्म में तत्पर रहते थे।

[२] नित्य नियमानुसार षट आवश्यकों (देवपूजा, गुरु सेवा, स्वाध्य, संयम, तप और दान) में यथेष्ट प्रवृत्ति करते थे।

[३] मैनासुन्दरी से श्रीपाल के चार पुत्र (धनपाल, महीपाल देवरथ, महारथ) बड़े बलवान व उत्तम लक्षणों वाले हुवे।

[४] रतनमंजूषा के सात पुत्र और गुणमाला के पांच पुत्र हुए और अन्य राणियों से भी बहुत से पुत्र हुवे सबके सब बड़े महाबली, धीर, वीर और गुणवान थे !

[५] एक दिन महाराजा श्रीपाल दरबार में बैठे थे और सती मैनासुन्दरी भी सिंहासन पर विराजमान थी कि एक वनमाली ने आकर खबर दी कि वन में श्रीमुनि महाराज पधारे हैं जिनके प्रभाव से सब ऋतुओं के फल फूल फले और फूल गये हैं। राजा ने सिंहासन से उतर कर सात पग नमस्कार

किया और अपने परिवार और परजा सहित दर्शन करने को बन में पहुँचे ।

(६) श्रीपाल ने प्रार्थना की कि महाराज संसार से पार उतारने वाला धर्म का उपदेश दीजिए ॥ श्रीमुनि महाराज ने धर्म का उपदेश दिया और राजा श्रीमुनि महाराज को स्तुति करके वापिस घर चले गए ॥

(७) एक दिन श्रीपाल ने उल्कापात (बिजली की चमक) देखा तो आपको बिजलीकी चमकवत संसार असार मालूम होने लगा और वैराग पैदा होगया अपने बड़े बेटे धनपाल को बुला कर कहा कि बेटा अब तुम राज करो और हम जिन दिचा लेंगे, चुनाचे पुत्र को राज देकर आपने जिन दिचा ले ली ॥

(८) सात सौ वीरों ने भी दिचा ले ली और कुन्दप्रभा व मैनासुन्दरी, रैनमंजूषा, गुणमाला व चित्ररेखा आदि बहुत सी राणियां अर्जिकां हो गई ।

(९) महाराज श्रीपाल ने कुछ काल तप किया और केवल ज्ञान हासिल करके दुनिया को धर्म उपदेश देकर मोच को प्राप्त हुए ॥

(१०) महासती मैनासुन्दरी तप करके सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ और वहां से चलकर मोच होएगी ॥ कुन्दप्रभा ने भी सोहलवें स्वर्ग में देव पर्याय पाई तथा अन्य राणियां भी अपने २ तप के अनुसार गति को प्राप्त हुई ॥

श्रीपाल का भावान्तर कथन ॥

४३६

श्रीपाल ने श्रीमुनि महाराज से अपने पिछले भव पूछे और श्रीमुनि महाराज ने अवधि ज्ञान से इस तरह वर्णन किया:—

(१) आर्य्यखंड में रतनसंचयपुर एक नगर था जहां श्रीकंठ विद्याधर राज करता था और श्रीमति पटराणी थी।

(२) एकदिन राजा राणी सहित श्री मंदिर में गए और श्रीमुनि महाराज जी से धर्म उपदेश सुनकर श्रावक के व्रत लिए, कुछ दिन बाद राजा ने व्रत छोड़ दिए और मिथ्याती बनकर जैन धर्म की निन्दा करने लगा।

(३) एकदिन राजा सात सौ वीरों को लेकर वन में गए वहां एक मुनि महाराज को देखकर उनको कोढ़ी कोढ़ी कह कर पुकारा और समुद्र में गिरवा दिया। बाद में राजा को कुछ दया आई और मुनिमहाराज को समुद्र से निकलवा दिया।

(४) राजा एकदिन फिर वन में क्रीड़ा को गए और मुनि महाराज को नगन देखकर उनकी निन्दा करी और उन को मारने के लिए तलवार निकाली और मारने का हुक्म दिया, पश्चात् कुछ दया करके छोड़ दिया और अपने महल को चले गए।

(५) एक दिन किसी ने यह समाचार रानी श्रीमति से कह दिए, रानी को बड़ा दुख हुआ और सोचने लगी कि हे प्रभु मुझे ऐसा पापी भरतार क्यों मिला॥

[६] इस तरह राणी अपनी और कर्मों की निन्दा करती हुई उदास होकर पलंग पर गिर पड़ी, इतने में राजा आगया राजाने राणीसे हाल पूछा मगर राणी न बोली, तब एक बांदीने राणीके उदास होनेका कारण राजाको बताया राजा यह सुनकर लज्जितहुआऔर अपनी भूलपर विचारकरनेलगा और रानी को समझाने लगा कि हे प्रिये मुझसे बड़ा भूल हुई, मैं बड़ा पापीहूं, अब मुझे नरकमें गिरनेसे बचाओ।

(७) तब रानी ने कहाकि हे महाराज आपने बहुत बुरा किया जो जैन धर्म को छोड़ दिया, अब आप श्रीमुनि महाराज के पास जाकर प्रायश्चित लें और दोबारा जैनव्रत अंगीकार करें और अपने किए पर पश्चाताप करें।

(८) चुनाँचे राजा श्री मन्दिर जी में गया और श्री मुनि महाराज जी से जैनव्रत देने की प्रार्थना करी।

(९) श्रीमुनि महाराज ने राजा को सिद्धचक्र का व्रत दिया और पांच अणुव्रत दिए राजा मिथ्यात को छोड़कर और सिद्धचक्र का व्रत और पांच अणुव्रत लेकर अपने घर आया और विधिपूर्वक व्रत पालन करने लगा।

(१०) जब ८ वर्ष पूरे हुए तब भाव सहित उद्यापन किया और अन्त समय समाधि मरण करके सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ।

(११) रानी श्रीमति भी समाधि मरण करके स्वर्ग में देवी हुई और भी अपने २ कर्मानुसार गति को प्राप्त हुवे।

(१२) वह राजा श्रीकंठ का जीव स्वर्ग मे चलकर श्रीपाल हुआ रानी श्रीमती का जीव मैना सुन्दरी हुई।

(१३) निम्नलिखित फल हुआ:—

१—मुनि को कोढ़ी कहने से श्रीपाल और सात सौ वीरों को कष्ट हुआ।

२—मुनि को समुद्र में डालने से श्रीपाल समुद्र में गिरा।

३—मुनि को समुद्र से निकालने से श्रीपाल समुद्र से निकला।

४—मुनि की निन्दा करनेसे श्रीपाल की भांडो ने निन्दा करी

५—मुनि को मारने का हुक्म देने से श्रीपाल को शूली का हुक्म हुआ॥

६—सिद्धचक्र की पूजा के प्रभाव से कुष्ट अच्छा हुआ और राज सम्पदा पाई॥

७—पूर्व संयोग से मैनासुन्दरी मिली॥

४९०

दोहा—आदि अन्त जिन धर्म से, सुखी होन है जीव।
यातै तन मन वचन से, सेवो धर्म सदीव॥ १॥
न्यामत एक जिनधर्म से, मिले स्वर्ग निर्वाण।
यातै धर्म न छोड़िये, जब लग घट में प्राण॥ २॥

इति मैनासुन्दरी नाटक समाप्तम्

[मिती मंगसिर सुदी दशमी सम्वत् [illegible]]

॥ शुभम् ॥